बुनियादी शिक्षा

गांधीजी



नवजीवन प्रकाशन मंदिर
अहमदाबाद

बुनियादी शिक्षा

गांधीजी

"मैंने यह सुझानेका साहस किया है कि शिक्षाको हमें स्वावलंबी बना देना चाहिये, फिर भले ही लोग मुझे यह कहें कि मेरे अन्दर किसी रचनात्मक कार्यकी योग्यता नहीं है। . . . असके स्वावलंबी होनेको ही मैं असकी सफलताकी कसौटी मानूँगा।"



नवजीवन प्रकाशन मंदिर
अहमदाबाद

मुद्रक अौर प्रकाशक
जीवणजी डाह्याभाअी देसाअी
नवजीवन मुद्रणालय, अहमदाबाद-९

पहली आवृत्ति ३,००० — १९५०

दूसरी आवृत्ति ३,०००

डेढ़ रुपया

दिसम्बर, १९५३

प्रकाशकका निवेदन

'बुनियादी शिक्षा'की यह दूसरी आवृत्ति पाठकोंके सामने रखते हुअे हमें बड़ी खुशी होती है। अिसमें पृष्ठ १०४ पर प्रकरण २१ का चौथा खंड, पृष्ठ १०५ पर 'अेक मंत्रीका स्वप्न' नामक लेख और पृष्ठ १४५ पर पाँचवें भागके शुरूमें 'म्युनिसिपैलिटियाँ और प्राथमिक शिक्षा' नामक लेख नया जोड़ा गया है। बाकी सब पहली आवृत्ति जैसा ही है।

अिस बीच देशके विभिन्न हिस्सोंमें बुनियादी शिक्षाका काम काफी आगे बढ़ा है। अिसमें कोअी शक नहीं कि भारतकी आजकी परिस्थितियोंमें हमें अगर शिक्षाको देशव्यापी बनाना है, तो अुसका अेकमात्र अुपाय गांधीजी द्वारा प्रतिपादित बुनियादी शिक्षा या नअी तालीमके सिद्धान्तोंके आधार पर दी जानेवाली स्वावलम्बी शिक्षा ही हो सकती है। आशा है अिस दिशामें यह पुस्तक सबका सही मार्गदर्शन करेगी।

१५-१२-'५३

निवेदन

जिसके पास जीवनके विषयमे आदिसे अन्त तकके पूर्ण विचार हो, जिज्ञासा हो और असकी साधनाके लिअे सतत पुरुषार्थ हो, असके पास शिक्षाके बारेमें अपना अेक खास तत्त्वज्ञान — दर्शन — जरूर है, अैसा कहना गलत नही होगा। भले वह व्यक्ति शिक्षाशास्त्र या मानस-शास्त्रकी कोअी परिभाषा कदाचित् काममे न लेता हो — न भी ले सकता हो, लेकिन परिभाषा दर्शन नही है। सभव है परिभाषा होने पर भी दर्शन न हो और दर्शन हो तो परिभाषाकी जरूरत सीमित हो जाती है। दर्शन स्वय अपनी भाषाकी रचना कर लेता है। गाधीजी अिसी प्रकारके शिक्षाशास्त्री थे। अैसे लोगोके मनमें जीवनकी सच्ची शिक्षा और जीवनकी सफलताके लिअे सच्ची साधनामें कोअी फर्क नही होता। केवल अुस साधनाको पाठशालाओमें दाखिल करना होता है। गाधीजीने वैसा करनेका प्रयत्न लगभग जीवनभर किया। अैसा कहा जा सकता है कि वे जबसे सयाने और जिम्मेदार बने, तबसे अपने व्यक्तिगत विकासके लिअे और बालकोकी जिम्मेदारी आअी तबसे अुनकी शिक्षाकी दृष्टिसे, अुन्होने सारी जिन्दगी शिक्षाका काम किया। अिस दृष्टिसे अुनके 'सत्यके प्रयोग' (आत्म-कथा) अुनके 'शिक्षाके प्रयोग' ही है।

अिसके अलावा, जिसे साधारण तौर पर शिक्षा कहा जाता है, अुसके बारेमें भी अुन्होने काफी लिखा है। अिन सब लेखोसे, अुनके साररूप अब तक दो ग्रन्थ प्रकाशित हो चुके है, जिनमे गाधीजीके शिक्षा-सबधी विचार लगभग समग्र रूपमे मिल जाते है

१ सच्ची शिक्षा

२ शिक्षाकी समस्या

अिनमे मनुष्यके सर्वांगीण विकासकी दृष्टिसे शिक्षाके सिद्धान्तका और अुसके विविध अंगोका निरूपण किया गया है। सन् १९२० में गांधीजीने राष्ट्रीय शिक्षाका जो महान् प्रयोग शुरू किया, अुसका भी सांगोपांग वर्णन अिनमें आ जाता है।

सन् १९३७ के बाद शिक्षामें दो मुख्य बातोंकी तरफ गांधीजीको खास ध्यान देना पडा (१) राष्ट्रभाषाका प्रचार, (२) राष्ट्रकी सार्वत्रिक शिक्षा। अतः अुन्होंने १९३७ से १९४७ तकके दस वर्षोंमें अिन दो-बातोंकी विशेष चर्चा की और देशमें जबरदस्त आन्दोलन चलाया। अुनमें से पहली बातका निरूपण करनेवाले लेखोंका संग्रह — 'राष्ट्रभाषा हिन्दुस्तानी' — पहले प्रकाशित हो चुका है। दूसरीसे संबंधित लेखोंका यह संग्रह अब प्रकाशित हो रहा है।

अेक तरहसे देखा जाय तो अिस दूसरे संग्रहकी अिस समय बहुत जरूरत है। सन् १९३७ में वर्धा-शिक्षा-योजना या बुनियादी शिक्षाका जन्म हुआ। दो तीन वर्ष तक अुसका काम अुमंग और श्रद्धासे चला। फिर राजनैतिक अुलट-फेरके कारण यह काम लगभग १९४६-४७ तक गड़बडीमें पड गया। अुसके तरह-तरहके नये अर्थ किये गये और नअी शाखा-अुपशाखायें निकलीं। १९४७ से सरकारोंने फिरसे अिस कामको सँभालना शुरू किया है। अिसलिये दरअसल यह कहा जा सकता है कि १९३७ से १९४७ तकके दस वर्षोंके अरसेमें वर्धा-शिक्षा-योजनाका प्रयोग व्यवस्थित रूपमें नहीं चला। और यदि हम यह कहें कि व्यवस्थित प्रयोग तो १९४७ में आजादी प्राप्त होनेके बाद ही शुरू हुआ, तो गलत न होगा। अैसे समय गांधीजीके विचार वास्तवमें क्या थे, अिसका मनन करना चाहिये, जिससे अिसकी नीतिके बारेमें बीचके समयमें जो अुचित-अनुचित या अुल्टा-सीधा हुआ हो, अुसके विषयमें प्रजा और सरकारको साफ-साफ मालूम हो जाय।

वर्धा-योजनाके रूपमें गांधीजीने जो विचार पेश किये, वे अुनके पूर्व विचारोंसे या शिक्षाके प्रयोगोंसे बिलकुल अलग और नये ही थे,

अैसा नही है। अुनमें यदि कोअी फर्क हो, तो वह अुनकी पृष्ठभूमिके कारण ही। १९२० से गाधीजीने जो प्रयोग शुरू किये, वे देशमें स्वराज्य लानेवाली शिक्षाके प्रयोग थे। १९३७ के बाद अिन प्रयोगोकी भूमिकामें अपने आप परिवर्तन हो गया और ये प्रयोग जो प्रान्तीय स्वराज्य आया, अुसकी शिक्षाके थे। अर्थात्, पहले जो मर्यादा थी वह मिट गअी और अुसकी जगह देशव्यापी विचार और पुनर्गठनकी भूमिका अपनाना जरूरी हो गया। गाधीजीने ही कहा है

"मेरा पेश किया हुआ शिक्षाक्रम भी रचनात्मक कार्यका ही अेक बडा अग है। जो रूप अुसे मै आज दे रहा हूँ, अुसे काग्रेसने अपना लिया है, यह कहनेका मेरा आशय नही है। पर मै जो लिख रहा हूँ, वह १९२० से राष्ट्रीय शालाओंके लिअे जो कुछ मैने कहा है या लिखा है, अुसकी जडमें छिपा हुआ ही था। वह समय आने पर मेरे सामने अेकाअेक प्रकट हुआ है, अैसा मेरा दृढ विश्वास है।" (देखिये पृ० ४३)

अिसलिअे वर्धा-योजनाके सागोपाग अध्ययनकी अिच्छा रखनेवाले व्यक्तिको गाधीजीकी शुरूमें बताअी हुअी शिक्षा-सबधी दोनो पुस्तके भी पढनी चाहिये। अुनमें अुसे वर्धा-योजनाकी पूरी भूमिका मिल जायगी। पर आज सबके लिअे विशेष जरूरी यह है कि गाधीजीने जो चीज आजकी आवश्यकताको देखकर पेश की है, अुसे अुसके मूल रूपमे समझ लिया जाय। अुसमे परिवर्तन करनेकी मनाही नही हो सकती, परतु जिस परिवर्तनका विचार किया जाय, वह अुसमें सुधार करनेवाला होना चाहिये, योजनाके मूल अुद्देश्यको बिगाडनेवाला नही। वर्धा-शिक्षा-योजनाकी दिशामें अैसा शुद्ध प्रयाण करना हो, तो अुसके बारेमें गाधीजीने जो कुछ लिखा है अुसका पुस्तकरूपमे सग्रह अभ्यासियो, शिक्षाशास्त्रियो, शिक्षको और अध्यापन-मदिरो सबके लिअे अुपयोगी हो सकता है।

वर्धा-योजनाको अमलमें लानेमें आज जो बडी कठिनाओी है, अुसके बारेमें गांधीजीने स्वयं भी स्पष्ट कहा है। वह कठिनाओी अुसी प्रकारकी है, जैसी हरअेक क्रांतिकारी कदम अुठानेमें आती है। प्रत्येक पुनर्गठनके भाग्यके साथ वह जुडी ही होती है। वह है पुराना परम्परागत शिक्षा-तंत्र, अुससे अुत्पन्न हुअे मूल्य तथा अुनके साथ गुंथे हुअे स्थापित स्वार्थ। गांधीजीने अिस संबंधमें कहा था :

> "मैं आपकी मुश्किलोंको खूब समझता हूं। जो लोग (शिक्षाकी) पुरानी परम्परामें पले हैं, अुनके लिअे अुसे अेकबारगी ठुकरा देना आसान काम नहीं है।" (पृ० १४९)

अिसीलिअे, अुदाहरणार्थ, गांधीजीके ठेठ १९३८ में यह बात स्पष्ट कह देने पर भी कि अंग्रेजीको पहले सात वर्षोंकी पढाओीमें हटाना बिलकुल जरूरी है, यह कदम दस बरस बाद १९४७ में अुठाया गया और अुठाते ही अुसे अधूरा भी बना दिया गया। श्रद्धा और निष्ठा-जन्य स्थिरताके बिना यह अडचन दूर नहीं हो सकती। अिसीलिअे अुन्होंने मंत्रियों और शिक्षा-विभागको सलाह दी थी

> "अगर मैं मंत्री होता, तो मैं अिस तरहकी खास हिदायतें जारी करता कि आअिन्दासे शिक्षासे सम्बन्ध रखनेवाला सरकारका सभूचा काम नओी तालीमकी लाअिन पर चलेगा।
> . अिन्स्पेक्टरों और शिक्षा-विभागके दूसरे अफसरोंको अगर अिस नीतिमें श्रद्धा नहीं है, या वे अीमानदारीसे अिस पर अमल करना नहीं चाहते, तो मैं अुन्हें अिस्तीफा देकर चले जानेकी छूट दूंगा। लेकिन अगर मंत्री अपना फर्ज समझ लें और अिस नीतिको असली शकल देनेकी कोशिश करें, तो यह नौबत ही न आये। सिर्फ हुक्म निकाल देनेसे काम नहीं चलेगा।" (पृ० १४९)

अिससे भी बडी कठिनाओी तो अुद्योगकी शिक्षा और अुद्योग द्वारा शिक्षा किस तरह दी जाय, अिस मूल विचारके अमलके बारेमें

पैदा हुअी है। अुद्योग अेक साधन है, साथ ही साथ वह साध्य भी है। दूसरे विषयोका अैसा नही है। अत अुद्योगको अेक साध्यके रूपमे ठीकसे सिखाना चाहिये। अुसका काम व्यवस्थित होना चाहिये। तभी शिक्षाके अेक साधनके तौर पर वह अपनी शक्ति दिखा सकता है। पुरानी शिक्षा-पद्धतिको शरीरश्रमसे घृणा है, अुसमे अूंच-नीचका भाव भी घुस गया है। अिसलिअे स्कूलोमे अूपर बताअी हुअी दृष्टिसे अुद्योग नही चला। और दूसरी तरफ अुसे साधनके तौर पर काममे लेनेके लिअे शिक्षा-शास्त्रियोने अनुबधके नामसे अेक विचित्र ही पहलूका निर्माण किया। अुसे 'अेक्टिविटी' और 'प्रोजेक्ट' पद्धतिके साथ जोडा गया। अैसा करनेसे भी शिक्षा अच्छी तरह नही सुधर सकी। और अुद्योगको, केवल प्रयोगशालाके अेक प्रयोगके रूपमें ही अपनानेके बाद अुसके विषयमे तरह-तरहकी जानकारीकी बातो और पुस्तको पर ही शिक्षा-पद्धति लौट गअी। और नियत अभ्यासक्रम तो पूरा करना ही चाहिये, अत अुद्योगकी शिक्षा क्रमश कम होती गअी। पाठक देखेंगे कि गाधीजीके लेखोमे 'अनुबन्ध' शब्दका प्रयोग नही हुआ है। वे तो 'अुद्योग द्वारा शिक्षा' कहते है, और यदि समझदारीसे अुद्योग किया जाय, तो अुसमे से अभ्यासक्रम जैसी जो वस्तु निकलेगी, वही सच्चा स्वाभाविक अभ्यास है, अैसा अुन्होने कहा है। वर्तमान शिक्षा-पद्धतिमे अभ्यासक्रमका यह स्थान नही है। अमुक निश्चित अभ्यास-क्रम वर्षभरमे पूरा हो, अैसा पहलेसे ही अुसके सचालक तय कर लेते है। वे वर्धा-पद्धतिका यह अर्थ करते है कि अुस अभ्यासक्रमको अनुबधसे चलाया जाय। साथ ही, पढाअीकी पुरानी कल्पना भी नही मिटी है। अिस बारेमें गाधीजीके लेखोका यह संग्रह अत्यन्त विचार-प्रेरक सिद्ध होगा, अिसमे कोअी शका नही।

अिस सग्रहसे अेक दूसरी वस्तु भी स्पष्ट होगी। वर्धा-योजना केवल शिक्षा-'पद्धति' ही नही है। वह अुससे कुछ ज्यादा है। वह तो शिक्षा द्वारा भारतके पूरे राष्ट्रीय प्रश्नको हल करनेका अेक रास्ता

है। अिसीसे गांधीजीने अुसे भारतके लिअे अपनी सबसे बडी भेंट कहा था। अिसका रहस्य अुनके लेखोंका यह संग्रह बतायेगा।

किसी देशकी राष्ट्रीय शिक्षा-पद्धतिकी जडमें देखें, तो पता चलेगा कि अुसके भीतर अेक खास श्रद्धा, खास दृष्टि और अुसके अनुरूप प्रयोजन और अुद्देश्य छिपे हुअे रहते हैं। शिक्षा-पद्धति अुस परसे विकसित होती है और अपना स्वरूप ग्रहण करती है। जैसी श्रद्धा, जैसी दृष्टि होगी, वैसा ही कालांतरमें अुसका रूप हो जायेगा। आजकल हमारे यहां जो शिक्षा-पद्धति प्रचलित है, अुसकी श्रद्धा व दृष्टि मेकॉलेकी दी हुअी है। अुसका प्रयोजन और अुद्देश्य है अंग्रेज शासकों द्वारा की हुअी रचनाकी आवश्यकताओंकी पूर्ति। पर वे आवश्यकतायें राष्ट्रहितकी नहीं थी। अुनका प्रयोजन यह नहीं था कि सारे देशके लोग स्वतंत्र, समझदार और अुद्यमी बनकर सच्चे लोकतंत्रको जन्म दें। वह जमाना अब बीत गया और स्वराज्य व लोकतंत्र आया है। अतः स्पष्ट है कि अूपरकी सभी बातोंमें परिवर्तन होना ही चाहिये। अर्थात् देशकी शिक्षा-पद्धतिकी आत्मा ही बदल जानी चाहिये। लेकिन वह बदली नहीं है, बदल भी नहीं सकती, क्योंकि श्रद्धाकी कमी है। मेकॉलेकी दी हुअी आत्मा कालग्रस्त हो गअी है, तब भी अुसका हाडपिंजर खींचा जा रहा है और अुसीमें कुछ स्थापित स्वार्थ सुखका अनुभव करते हैं। अतः मीराबाअीके भजनकी अुस कडीकी तरह हमारे शिक्षा-तंत्रकी हालत हो गअी है, जिसमें कहा है —

'अूडी गयो हंस, पींजर पडी तो रह्यु'*

शिक्षाके अिस निष्प्राण ढांचेको बुनियादी तालीम प्राणवान बनानेवाली है। यह काम गांधीजी जैसे ही कर सकते हैं। अिसीलिअे जब १९३७ में अुनका समय नजदीक आता लगा, तो सहज ही अुनकी प्रतिभासे

* 'हंस (जीवात्मा) अुड़ गया, पिंजरा (शव) पडा रह गया।'

अिस योजनाका मंत्र प्रकट हुआ। अुसका सच्चा अर्थ समझनेमें यह संग्रह सहायक होगा।

अिस संग्रहके लेखोंको पांच भागोंमें बांटा गया है। सब लेखोंको अेक साथ पढ़नेसे अुनका अेक दूसरेके साथ जो पूर्वापर संबंध मालूम हुआ, अुसके आधार पर ये विभाग किये गये हैं। अुनमें कोअी पहलेसे की गअी कल्पना या व्यवस्था नहीं है। सन् १९३७ में जब यह योजना शुरू हुअी, तबसे लेकर १९४७ तककी गांधीजी द्वारा अिस विषयमें की हुअी चर्चा अिसमें आ जाती है। १९४७ से यह काम आगे कैसे किया जाय, अिसका भी अुन्होंने विचार किया है। वह भाग अंतमें आता है। वह आज भी हमारा पूरी तरह मार्गदर्शन करता है। अिस तरह यह पुस्तक वर्धा-योजनाके बारेमें संक्षिप्त किन्तु सब तरहसे पूरा चित्र प्रस्तुत करनेवाली है।

अेक बात और। कुछ लोगोंका अैसा खयाल मालूम होता है कि वर्धा-शिक्षा-योजना अर्थात् केवल प्राथमिक शिक्षाका अेक नया नमूना। पुस्तक पढ़कर पाठक देखेंगे कि यह खयाल गलत है। अुसमें संपूर्ण शिक्षाके पुनर्गठनका राष्ट्रीय सिद्धांत पेश किया गया है। अुसका अमल शुरुआतसे करने लगें, तो आगे अपने आप जरूरी वातावरण तैयार होगा और रास्ता मिलेगा। अिसीलिअे प्राथमिक या बुनियादी शिक्षाका विचार पहले और विस्तारसे किया गया है। वैसे यदि पाठक देखेंगे तो साफ मालूम होगा कि सन् १९३७-३८ में जब गांधीजीने वर्धा-परिषद्में पेश करनेके लिअे शिक्षामें क्रांतिकी अपनी सूचना की, तब अुन्होंने संपूर्ण शिक्षाको दृष्टिमें रखकर ही आलोचना की थी। (देखिये पृ० ४९ से ५२) अुसमें अुन्होंने शिक्षाक्रमके दो बड़े-बड़े भागोंकी कल्पना की थी

१ सार्वत्रिक शिक्षा, जो सब नागरिकोंको मिले और जिसे 'बुनियादी शिक्षा' कहा गया।

२ अुसके आगेकी विशेष शिक्षा, जिसे हम 'अुच्च' कहा करते हैं। अुसमें "कअी प्रकारके अुद्योग और अुनसे संबंध रखनेवाली कलाअें, साहित्य, संगीत, चित्रकला, शास्त्रादि शामिल समझे जायें।" (पृ० ५२)

सार्वत्रिक शिक्षा भारतके प्रत्येक बालकको मिले और अुसकी मात्रा लगभग 'अंग्रेजी छोडकर मेट्रिक' के बराबर या (अुद्योग पद्धतिसे कार्य हो तो) स्वभावतः अुससे अधिक होनी चाहिये — अैसा सोचा गया है। अिस भागका काम सरकार सँभाले और अुसकी पद्धतिकी योजना अिस प्रकार बनावे कि जिससे विद्यार्थी अपने चरित्र और शिक्षाके संगठनके साथ-साथ अुसे स्वावलंबी भी बना सकें।

दूसरा विशेष शिक्षाका भाग गांधीजी खानगी प्रयत्नों पर छोड देते हैं। अिस सूचनासे युनिवर्सिटीवाले लोग खूब घबराये थे। परंतु यह वस्तु तो गांधीजीकी कल्पनामें बुनियादी विभागके साथ ही जुडी हुअी थी। यदि वस्तुस्थिति देखी जाय तो भारतमें तथाकथित अुच्च शिक्षाने आधुनिक शिक्षा-तंत्रमें अितना प्रमुख स्थान ले लिया है कि अुसके बारेमें जडमूलसे ही नये विचार किये बिना काम नहीं चलेगा। गांधीजीकी योजनामें अंग्रेजीके स्थान और नये विश्वविद्यालय खोलनेके बारेमें अुनके विचार, स्वभाषाके माध्यमका स्वाभाविक सिद्धांत, स्वावलम्बन और शरीरश्रमका तत्त्व, राष्ट्रभाषा — यह सब शिक्षाके अिस अुच्च माने जानेवाले भागको स्पर्श करता है और वह अिसका अनिवार्य अंग है।

१९३७ में अुन्होंने यह संपूर्ण चित्र संक्षेपमें पेश तो किया था, परंतु अुस वक्त अुसकी मर्यादा बाँधकर कामको आगे बढाया था

"मैंने जो प्रस्ताव विचारार्थ रखे हैं, अुनमें प्राथमिक शिक्षा और कॉलेजकी शिक्षा दोनोंका ही निर्देश है। पर आप लोग तो अधिकतर प्राथमिक शिक्षाके बारेमें ही अपने विचार

जाहिर करे। माध्यमिक शिक्षाको मैंने प्राथमिक शिक्षामें शामिल कर लिया है, क्योंकि प्राथमिक कही जानेवाली शिक्षा हमारे गाँवोंके बहुत ही थोड़े लोगोंको मयस्सर होती है। मुख्य प्रश्नके हल होते ही कॉलेजकी शिक्षाका गौण प्रश्न भी हल हो जायगा।" (पृ० ७९)

१९३७ में अिस तरह मर्यादित किये हुअे कामका जब १९४७ मे फिरसे हिसाब लगाया गया, तब अुन्होंने मनुष्यकी आजीवन शिक्षाका पूरा नकशा बनाया और यह बताया कि अुसमें बुनियादी शिक्षा किस तरह केन्द्रीय सूर्यके समान है। अुन्होंने यह भी स्पष्ट कहा है कि यदि सचमुच अिसे अैसा स्थान दिया जा सके, तो अिसमें आगेके कामकी समस्याका हल भी छिपा हुआ है। और वे यह बताकर चले गये कि अब यह काम देशको करना है।

यह पुस्तक अिस लम्बी कथाको सुन्दर ढंगसे पेश करती है। यों तो अुसके प्रकरण, जब वे लिखे जा रहे थे तब, 'हरिजन' मे पढ़े थे। परन्तु अुनको पुस्तकके रूपमें अेक साथ देखनेसे जो चित्र खड़ा हुआ, वह तब दृष्टिगोचर नहीं हुआ था। यह भी मालूम हुआ कि गांधीजीको अिस विषयमें जो कुछ कहना था, वह सब अिसमें स्पष्ट रूपसे आ गया है। अतः संपादन करते समय जो चित्र मेरे सामने खड़ा हुआ, अुसे विस्तारसे मैंने यहाँ दे दिया है। मैं मानता हूँ कि अिससे पाठकको बुनियादी शिक्षाके प्रयोगकी दस वर्षकी विचार-यात्राका कुछ नकशा भी मिल जायगा।

७–८–'५० मगनभाअी देसाअी

अनुक्रमणिका

तीसरा भाग : वर्धा-शिक्षा-योजना

चौथा भाग : कुछ महत्त्वके प्रयोग

पाँचवाँ भाग : आगेका काम

बुनियादी शिक्षा

शिक्षाके पुनर्गठनकी आवश्यकता

['बुद्धि-विकास बनाम बुद्धि-विलास' नामक लेख]

त्रावणकोर और मद्रासके भ्रमणमें, विद्यार्थियो तथा विद्वानोके सहवासमें मुझे अैसा लगा कि मैं जो नमूने अुनमे देख रहा था, वे बुद्धि-विकासके नही, किन्तु बुद्धि-विलासके थे। आधुनिक शिक्षा भी हमें बुद्धि-विलास सिखाती है और बुद्धिको अुलटे रास्ते ले जाकर अुसके विकासको रोकती है। सेगांवमें पडा-पडा मैं जो अनुभव ले रहा हूँ, वह मेरी अिस बातकी पूर्ति करता दिखाअी देता है। मेरा अवलोकन तो वहाँ अभी चल ही रहा है। अिसलिअे अिस लेखमें आये हुअे विचार अुन अनुभवोके अूपर आधार नही रखते। मेरे ये विचार तो जब मैंने फिनिक्स सस्थाकी स्थापना की तभीसे है, यानी सन् १९०४ से।

बुद्धिका सच्चा विकास हाथ, पैर, कान आदि अवयवोके सदुपयोगसे ही हो सकता है, अर्थात् शरीरका ज्ञानपूर्वक अुपयोग करते हुअे बुद्धिका विकास सबसे अच्छा और जल्दीसे जल्दी होता है। अिसमे भी यदि पारमार्थिक वृत्तिका मेल न हो, तो बुद्धिका विकास अेकतरफा होता है। पारमार्थिक वृत्ति हृदय यानी आत्माका क्षेत्र है। अत यह कहा जा सकता है कि बुद्धिके शुद्ध विकासके लिअे आत्मा और शरीरका विकास साथ-साथ तथा अेकसी गतिमे होना चाहिये। अिससे कोअी अगर यह कहे कि ये विकास अेकके

वाद अेक हो सकते हैं, तो यह अूपरकी विचार-श्रेणीके अनुसार ठीक नहीं होगा।

हृदय, बुद्धि और शरीरके बीच मेल न होनेसे जो दुःसह परिणाम आया है वह प्रकट है, तो भी गलत आदतके कारण हम अुसे देख नहीं सकते। गाँवोंके लोगोंका पालन-पोषण पशुओंमें होनेके कारण, वे मात्र शरीरका अुपयोग यंत्रकी भाँति किया करते हैं, बुद्धिका अुपयोग वे करते ही नहीं और अुन्हें करना भी नहीं पड़ता। हृदयकी शिक्षा अुनमें नहींके बराबर है, अिसलिअे अुनका जीवन यों ही गुजर रहा है, जो न अिस कामका रहा है, न अुस कामका। और दूसरी ओर आधुनिक कॉलेजों तककी शिक्षा पर जब नजर डालते हैं, तो वहाँ बुद्धिके विकासके नाम पर बुद्धिके विलासकी तालीम दी जाती है। लोग अैसा समझते हैं कि बुद्धिके विकासके साथ शरीरका कोअी मेल नहीं। पर शरीरको कसरत तो चाहिये ही, अिसलिअे अुपयोग रहित कसरतोंसे अुसे निभानेका मिथ्या प्रयोग होता है। पर चारों ओरसे मुझे अिस तरहके प्रमाण मिलते ही रहते हैं कि स्कूल-कॉलेजोंसे पास होकर जो विद्यार्थी निकलते हैं, वे मेहनत-मशक्कतके काममें मजदूरोंकी बराबरी नहीं कर सकते। जरासी मेहनत की कि अुनका माथा दुखने लगता है और धूपमें घूमना पड़े तो चक्कर आने लगते हैं! यह स्थिति स्वाभाविक मानी जाती है। बिना जुते खेतमें जैसे घास अुग आती है, अुसी तरह हृदयकी वृत्तियाँ आप ही अुगती और कुम्हलाती रहती हैं; और यह स्थिति दयनीय मानी जानेके बदले प्रशंसनीय मानी जाती है।

अिसके विपरीत यदि बचपनमें बालकोंके हृदयकी वृत्तियोंको ठीक तरहसे मोड़ा जाय, अुन्हें खेती, चरखा आदि अुपयोगी कामोंमें लगाया जाय और जिस अुद्योग द्वारा अुनका शरीर खूब कसा जा सके, अुस अुद्योगकी अुपयोगिता और अुसमें काम आनेवाले औजारों

वगैराकी बनावट आदिका ज्ञान अुन्हें दिया जाय, तो अुनकी बुद्धिका विकास सहज ही होता जाय और नित्य अुसकी परीक्षा भी होती जाय। अैसा करते हुअे गणित शास्त्र आदिके जिस ज्ञानकी आवश्यकता हो, वह अुन्हें दिया जाय और विनोदके लिअे साहित्य आदिका ज्ञान भी देते जायें, तो तीनो वस्तुअें समतोल हो जायें और अुनका कोअी अंग अविकसित न रहे। मनुष्य न केवल बुद्धि है, न केवल शरीर, न केवल हृदय या आत्मा। तीनोंके अेक समान विकासमें ही मनुष्यका मनुष्यत्व सिद्ध होगा। अिसमें सच्चा अर्थशास्त्र है। अिसके अनुसार यदि तीनो विकास अेक साथ हो, तो हमारी अुलझी हुअी समस्याअें आसानीसे सुलझ जायें। यह विचार या अिस पर अमल तो देशको स्वतन्त्रता मिलनेके बाद ही होगा, अैसी मान्यता भ्रमपूर्ण हो सकती है। करोडो मनुष्योको अैसे-अैसे कामोमें लगानेसे ही स्वतन्त्रताका दिन हम नजदीक ला सकते हैं।

हरिजनसेवक, १७–४–'३७

२

कुछ प्रश्न

['साप्ताहिक पत्र'मे से]

[तीथलमें २२ मअी, १९३७ को गुजरातके राष्ट्रीय स्कूलो और कॉलिजोके अध्यापकोकी अेक छोटीसी परिषद् हुअी थी। परिषद्के संयोजकने आमंत्रित सज्जनोके पास यह प्रश्नावली पहलेसे भेज दी थी

१ हमारे गाँवोकी आवश्यकताओंके लिअे सबसे अुपयुक्त और लाभदायक शिक्षा कौनसी है? अैसी शिक्षाको हरअेक गाँवमें किस तरह फैलाया जाय?

२ जनताकी निरक्षरता और अुसके अज्ञानको किस तरह दूर किया जाय?

३ क्या पूर्ण बौद्धिक विकासके लिअे साक्षरता अनिवार्य रूपसे जरूरी है? साक्षरता द्वारा शिक्षा शुरू करनेकी पद्धति क्या बौद्धिक विकासको रोकती है?

४. औद्योगिक शिक्षणको समस्त शिक्षाका मध्यबिन्दु बनानेकी आवश्यकता।

५. मौजूदा राष्ट्रीय स्कूलोंका भविष्य।

६ बालकोंको अुनकी मातृभाषा द्वारा समस्त शिक्षा देनेकी शक्यता और साधनोंका विचार।

७ मौजूदा स्कूलोंमें राष्ट्रीय शिक्षाके किन मूल तत्त्वोंकी कमी है?

८ प्राथमिक और माध्यमिक शिक्षाके प्रारम्भिक वर्षोंमें हिन्दी-हिन्दुस्तानीको लाजिमी बनानेकी आवश्यकता।

अिन प्रश्नों पर अपने विचार जाहिर करनेके लिअे गांधीजीको भी कहा गया था। अुन्होंने कुछ व्यक्तिगत अुदाहरण देकर अपने विचार प्रगट किये। नीचे मैं अुन विचारोंको संक्षिप्त करके देता हूँ। अुदाहरणोंको छोड़ दूंगा, क्योंकि वे साधारण पाठकोंके मतलबके नहीं है। —महादेव देसाअी]

अगर हम अैसी शिक्षा देना चाहते हैं, जो गाँवोंकी आवश्यकताओंके लिअे सबसे अधिक अुपयुक्त हो, तो विद्यापीठको हमें गाँवोंमें ले जाना चाहिये। विद्यापीठको हमें अेक शिक्षणशालामें परिणत कर देना चाहिये, जिससे कि हम ग्रामवासियोंकी आवश्यकताओंके अनुसार अध्यापकोंको शिक्षा दे सकें। शहरमें शिक्षणशाला रखकर अुनके द्वारा ग्रामवासियोंकी आवश्यकताओंके अनुसार आप अध्यापकोंको तालीम नहीं दे सकते, न आप अुन्हें गाँवकी हालतमें दिलचस्पी लेनेवाले बना

सकते है। शहरके लोगोको गाँवके प्रश्नोमे दिलचस्पी लेने और वहाँ रहनेके लिअे तैयार करना कोअी आसान काम नही। सेगाँवमें रोज ही मेरा यह मत दृढ होता जाता है। मै आपको यह यकीन नही दिला सकता कि हम सेगाँवमे अेक वर्ष रहकर ग्रामवासी बन गये है, या किसी सार्वजनिक हितमें हमने अुनके साथ अैक्य स्थापित कर लिया है।

प्राथमिक शिक्षाके बारेमें मेरा पक्का मत यह है कि वर्णमालासे तथा वाचन और लेखनसे शिक्षाका आरम्भ करनेसे बालकोकी बुद्धिका विकास कुठित-सा हो जाता है। जब तक अुन्हे अितिहास, भूगोल, जबानी गणित और कताअीकी कलाका प्रारम्भिक ज्ञान न हो जाय, तब तक मै अुन्हे वर्णमाला नही सिखाअूँगा। अिन तीनो चीजोंके द्वारा मै अुनकी बुद्धिको विकसित करूँगा। यह प्रश्न पूछा जा सकता है कि तकली या चरखेके द्वारा किस तरह बुद्धि विकसित की जा सकती है। अगर यह कला महज यत्रकी तरह न सिखाअी जाय, तो वह आश्चर्यजनक रीतिसे बुद्धिका विकास कर सकती है। जब आप बालकको हरअेक क्रियाका ठीक-ठीक कारण समझायेंगे, जब आप अुसे तकली या चरखेके हरअेक कल-पुरजेके बारेमें बतायेंगे, जब अुमे कपासके और स्वय सभ्यताके साथ अुसके सम्बन्धके अितिहासका ज्ञान देंगे और अुसे आप अपने साथ गाँवके कपासके खेतमे ले जायेंगे, और जब अुसे आप अुसके काते हुअे सूतके अेकसापन और मजबूतीको मालूम करनेका तरीका या तार गिनना सिखायेंगे, तब आप अुसका दिल तो कताअीकी कलाकी तरफ आकर्षित करेगे ही, साथ ही अुसके हाथो, अुसकी आँखो और अुसकी बुद्धिको भी आप नाचते जायेंगे। अिस प्रारम्भिक शिक्षाको मै ६ महीने दूँगा। अितने समयमें बालक शायद यह सीखनेके लिअे तैयार हो जायगा कि वर्णमाला किस तरह पढी जाती है, और जब वह वर्णमाला जल्दी-जल्दी पढनेके योग्य हो जायगा, तो सादा ड्राअिंग सीखनेके लिअे तैयार हो जायगा। और जब

रेखागणितकी शकले तथा चिडियो वगैराके चित्र खीचने लगेगा, तो वह अक्षरोको बिगाडकर नही लिखेगा। मुझे अपने बचपनके दिन याद है, जब मुझे वर्णमाला सिखाओी जाती थी। मै जानता हूँ कि मुझे कितनी कठिनाओी पडती थी। किसीको यह परवाह नही थी कि मेरी बुद्धि पर क्यो जग लगाया जा रहा है। लेखन-कलाको मै अेक ललित कला मानता हूँ। छोटे-छोटे बच्चोकी बुद्धि पर वर्णमालाको लादकर और अुसे शिक्षाका श्रीगणेश मानकर हम अिस कलाका गला घोट देते है। अिस तरह हम लेखन-कलाके साथ हिंसा करते है और अुसके योग्य समयके पहले ही वर्णमाला सिखानेका प्रयत्न करके हम बालककी बाढको मार देते है।

असलमें मेरी रायमें हमारे अफसोस करने और लज्जित होनेंका कारण निरक्षरता अितना नही है, जितना कि अज्ञान है। अिसलिअे प्रौढ-शिक्षाके लिअे भी मुझे अुनका अज्ञानाधकार दूर करनेका अेक जबरदस्त कार्यक्रम बनाना चाहिये। और अिसके लिअे अैसे शिक्षकोको ध्यान देकर चुनना चाहिये, जो ध्यानपूर्वक बनाये हुअे पाठ्यक्रमके अनुसार गाँवोके बालिग लोगोको तालीम दे सके। मेरे कहनेका मतलब यह नही है कि मै अुन्हे वर्णमालाका ज्ञान नही कराअूँगा। नही, अिसकी तो मै अितनी अधिक कीमत आँकता हूँ कि शिक्षाके अेक साधनके रूपमें मै अुसे हलकी नजरसे नही देखता, अुसके गुणोकी कमकद्री भी नही करता। वर्णमालाको सरल बनानेमें प्रो० लॉबेकने जो भारी परिश्रम किया है, अुसकी मै कद्र करता हूँ और प्रो० भागवतके भी अिसी दिशामें किये हुअे महान और व्याव-हारिक प्रयत्नका मै कायल हूँ। मैने तो प्रो० भागवतको जब वे पसन्द करे तब सेगाँव आने और वहाँके पुरुषो, स्त्रियो और बच्चो पर भी अपनी लिपि-कलाको आजमानेके लिअे निमत्रण दे रखा है।

गाँवकी दस्तकारियोकी तालीमको शिक्षाका मध्यबिन्दु समझनेकी आवश्यकता और महत्त्वके विषयमें मुझे जरा भी शका नहीं है।

हिन्दुस्तानकी शिक्षा-संस्थाओंमें जो प्रणाली अख्तियार की गओी है, अुसे मैं शिक्षा नहीं कहता, वह मनुष्यकी बुद्धिके सर्वोत्तम अंगको विकसित करनेवाली शिक्षा नहीं है, वल्कि बुद्धिका विलास है। बुद्धिको वह किसी तरह सूचनाओंसे अवगत करा लेती है। बुद्धिका सच्चा व्यवस्थित विकास तो शुरूसे ही गाँवकी दस्तकारियों द्वारा बुद्धिको शिक्षा देनेकी प्रणालीसे होगा, और फलत. बौद्धिक शक्ति और अप्रत्यक्ष रीतिसे आध्यात्मिक शक्तिकी भी अुससे रक्षा होगी। यहाँ भी अिससे यह न समझ लिया जाय कि मैं ललित कलाओंकी बेकद्री करता हूँ। पर मैं अुन्हें गलत जगह पर नहीं रखूँगा। बेठौर रखे हुअे कंचनको जो कचरा कहा है, सो ठीक ही है। मैं जो कह रहा हूँ, अुसके प्रमाणमें ढेरके ढेर निकम्मे और अश्लील साहित्यको पेश कर सकता हूँ, जिसकी हमारे अूपर बाढ-सी आ रही है, और अुनका परिणाम तो अेक राह चलता आदमी भी देख सकता है।

हरिजनसेवक, ५–६–'३७

३

तब क्या करेंगे?

१

['आलोचनाओंका जवाब' नामक लेखमें से]

शिक्षाका सवाल दुर्भाग्यवश शराबके साथ जोड़ दिया गया है। शराबकी आय बन्द हो जाय, तो शिक्षाका क्या होगा? निस्सन्देह नये कर लगानेके और भी तरीके हो सकते हैं। अध्यापक शाह और खंभाताने यह दिखाया भी है कि अिस गरीब देशमें भी कुछ नये-नये कर लगानेकी गुंजाअिश है। संपत्ति पर अभी काफी कर नहीं लगा है। संसारके अन्य देशोंमें जो कुछ भी हो, यहाँ तो व्यक्तियोंके पास अत्यधिक सम्पत्तिका होना भारतकी मानवताके प्रति अेक अपराध

ही समझा जाना चाहिये। अिसलिये सम्पत्तिकी अेक निश्चित मर्यादाके बाद जितना भी कर अुस पर लगाया जाय, थोड़ा ही होगा। जहाँ तक मुझे पता है, अिंग्लैंडमें आदमीकी आय अेक निश्चित संख्या तक पहुँच जानेके बाद अुनसे आयका ७०% तक कर लिया जाता है। कोअी वजह नहीं कि हिन्दुस्तानमें हम अिससे भी काफी अधिक कर क्यों न लगावें? किसी मनुष्यके मरनेके बाद दूसरेको जो विरासत मिले, अुन पर कर क्यों न लगाया जाय? करोड़पतियोंके लड़कोंको बालिग होने पर भी जब विरासतमें पैतृक सम्पत्ति मिलती है, तो अिस विरासतके कारण अुन्हें नुकसान अुठाना पड़ता है। अिस तरह राष्ट्रकी तो दूनी हानि होती है। जो विरासत असलमें राष्ट्रको होनी चाहिये, वह अुसे नहीं मिलती, और दूसरे, राष्ट्रका अिस तरह भी नुकसान होता है कि सम्पत्तिके बोझके कारण अिन वारिसोंके सम्पूर्ण गुणोंका विकास भी नहीं हो पाता। अैसा अुत्तराधिकार-कर डालनेकी प्रान्तीय सरकारोंको सत्ता नहीं है, अिससे मेरी दलीलमें कोअी बाधा नहीं पहुँचती।

परन्तु समस्त राष्ट्रकी दृष्टिसे हम शिक्षामें जितने पिछड़े हुअे हैं कि अगर शिक्षा-प्रचारके लिअे हम केवल धन पर ही निर्भर रहेंगे, तो अेक निश्चित समयके अन्दर राष्ट्रके प्रति अपने फ़र्ज़को अदा करनेकी आशा हम कभी कर ही नहीं सकते। अिसलिअे मैंने यह सुझानेका साहस किया है कि शिक्षाको हमें स्वावलम्बी बना देना चाहिये, फिर चाहे लोग भले ही मुझे यह कहें कि मेरे अन्दर किसी रचनात्मक कार्यकी योग्यता नहीं है। शिक्षासे मेरा मतलब है बच्चे या मनुष्यकी तमाम शारीरिक, मानसिक और आत्मिक शक्तियोंका सर्वतोमुखी विकास। अक्षर-ज्ञान न तो शिक्षाका आरम्भ है और न अन्तिम लक्ष्य। वह तो अुन अनेक अुपायोंमें से अेक है, जिनके द्वारा स्त्री-पुरुषोंको शिक्षित किया जा सकता है। फिर सिर्फ अक्षर-ज्ञानको शिक्षा कहना गलत है। अिसलिअे बच्चेकी शिक्षाका आरम्भ मैं

किसी दस्तकारीकी तालीमसे ही करूँगा और अुसी क्षणसे अुसे कुछ निर्माण करना सिखा दूंगा। अिस प्रकार हरअेक पाठशाला स्वावलम्बी हो सकती है। शर्त सिर्फ यह हो कि अिन पाठशालाओंकी बनी चीजें राज्य खरीद लिया करे।

मेरा मत है कि अिस तरहकी शिक्षा-प्रणाली द्वारा अूँचीसे अूँची मानसिक और आध्यात्मिक अुन्नति प्राप्त की जा सकती है। सिर्फ अेक बातकी जरूरत है। वह यह कि आजकी तरह प्रत्येक दस्तकारीकी केवल यांत्रिक क्रियायें सिखा कर ही हम न रह जायें, बल्कि बच्चेको प्रत्येक क्रियाका कारण और पूर्ण विधि भी सिखा दिया करे। यह मैं आत्म-विश्वासके साथ कह रहा हूँ, क्योंकि अुसके मूलमें मेरा अपना अनुभव है। जहाँ-जहाँ भी कार्यकर्ताओंको कताअी सिखाअी जाती है, न्यूनाधिक पूर्णताके साथ अिसी पद्धतिका अवलम्बन किया जाता है। मैंने खुद अिसी पद्धतिसे चप्पल बनानेकी तथा कताअीकी शिक्षा दी है और अुसके परिणाम अच्छे आये हैं। अिस पद्धतिमें अितिहास और भूगोलका बहिष्कार भी नहीं है। मैंने तो देखा है कि अिस तरहकी साधारण और व्यावहारिक जानकारीकी बातें जबानी कहनेसे ही अधिक लाभ होता है। लिखने और पढ़नेसे बच्चा जितना नहीं सीखता, अुससे दस गुनी अधिक जानकारी अुसे अिस पद्धति द्वारा दी जा सकती है। वर्णमाला (के चिन्हों) का ज्ञान बच्चेको बादमें भी दिया जा सकता है, जब बच्चा गेहूँ और चोकरको पहचानने लग जाय और जब अुसकी बुद्धि और रुचि कुछ विकसित हो जाय। यह प्रस्ताव क्रान्तिकारी जरूर है, पर अिसमें परिश्रमकी खूब बचत होती है और विद्यार्थी अेक सालमें जितना सीख जाता है कि जिसके लिअे साधारणतया अुसे बहुत अधिक समय लग सकता है। फिर अिस पद्धतिमें सब तरहसे किफायत ही किफायत है। हाँ, विद्यार्थीको गणितका ज्ञान तो दस्तकारी सीखते हुअे अपने आप ही होता रहता है।

प्राथमिक शिक्षा मेरी नजरमें सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण चीज है। अुसकी मर्यादा मैंने यही कायम की है कि जितनी पढाअी मैट्रिक तक —अंग्रेजीको छोड़कर— होती है, अुतनी ही अिसमें हो जानी चाहिये। फर्ज कीजिये कि कॉलेजोंके पढे हुअे और पढनेवाले सब लोग यकायक अपनी सारी पढाअी भूल जायें, तो अिन कुछ लाख लोगोंके स्मृति-नाशसे जितनी हानि देशको हो सकती है, वह अुस हानिके मुकाबलेमें कुछ भी नहीं है, जो अुन तीस-पैंतीस करोड़ लोगोंको अज्ञानके सागर जैसे महा अन्धकारके कारण अब तक हुअी है और हो रही है। करोड़ों ग्रामवासियोंके अज्ञानकी थाह हम केवल निरक्षरतासे होनेवाली हानिसे कभी नहीं पा सकते।

कॉलेजकी शिक्षामें भी मैं जबरदस्त क्रान्ति कर देना चाहूँगा। अुसे मैं राष्ट्रीय जरूरतोंसे जोड़ दूँगा। यन्त्रों तथा अैसी ही अन्य कला-कौशल सम्बन्धी निपुणताकी कुछ अुपाधियाँ होंगी। वे भिन्न-भिन्न अुद्योगोंसे संबंध रखेंगी और यही अुद्योग अपने लिअे आवश्यक विशारदोंको तैयार करनेका खर्च बरदाश्त करेंगे। मसलन, टाटा कंपनीसे यह अपेक्षा की जायगी कि वह यन्त्रकला-विशारदोंके लिअे अेक महा-विद्यालय राज्यकी देख-भालमें चलावे। अिसी प्रकार मिलोंके लिअे आवश्यक विशारद पैदा करनेके लिअे अेक कॉलेज मिल-मालिकोंका संघ चलावे। यही अन्य अुद्योग भी करें। व्यापारियोंका भी अपना कॉलेज रहे। अब रह जाते हैं साधारण ज्ञान (आर्ट्स), आयुर्वेद और खेती। साधारण ज्ञानके कितने ही खानगी कॉलेज आज भी स्वाश्रयी हैं ही। अिसलिअे राज्यको अपना कोअी स्वतंत्र कॉलेज खोलनेकी जरूरत नहीं रहेगी। आयुर्वेद-सम्बन्धी महाविद्यालय प्रमाणित औषधा-लयोंके साथ जोड़ दिये जायेंगे, और चूंकि धनिक लोगोंको ये प्रिय होते ही हैं, अिसलिअे अुनसे यह जरूर अपेक्षा की जा सकती है कि वे चन्दा करके अिन विद्यालयोंको चलावें। रहे खेतीके विद्यालय। सो अगर अब अिन्हें अपने नामकी लाज रखनी हो, तो अिन्हें भी स्वावलम्बी

बनना ही पडेगा। मुझे अिन विद्यालयोमे शिक्षा-प्राप्त कुछ अुपाधि-धारियोका दुखद अनुभव हुआ है। अुनका ज्ञान छिछला होता है। अुन्हें व्यवहारका भी अनुभव नही है। अगर अुन्हे राष्ट्रकी जरूरतोकी पूर्ति करनेवाली स्वावलबी खेतियो पर काम सीखनेका मौका मिला होता, तो अुन्हें अुपाधि प्राप्त करनेके बाद और अपने मालिकोके धन पर अनुभव प्राप्त करनेकी जरूरत हरगिज नही रहती।

यह कोअी निरा कल्पना-विलास नही है। सिर्फ अपनी मानसिक जडताको दूर करने भरकी देरी है कि हम देखेंगे कि काग्रेसके मन्त्रि-मडलके अर्थात् काग्रेसके सामने खडे हुअे शिक्षाके सवालका यह हल अत्यत युक्तिसगत और व्यावहारिक भी है। यदि वे घोषणाअें सत्य हो, जो कि हाल ही में ब्रिटिश सरकारकी ओरसे की गअी है, तो मन्त्रि-मडलोके पक्षमें तो अुनकी योजनाओको सफल बनानेके लिअे सिविल सर्विसकी सुसगठित बुद्धि-चातुरी और सगठन-शक्ति भी है। सिविल सर्विसके अधिकारियोको तो वह कला याद है, जिसकी सहायतासे अैसी-अैसी शासन-नीतिको भी वे अमलमें ले आते है, जो अुनके लिअे झक्की गवर्नर या वाअिसरॉय बनाकर दे देते है। अिसी तरह मत्री भी अेक निश्चित और विचारपूर्ण नीति कायम कर दें। अुस पर अमल करना सिविल सर्विसका काम रहेगा। अुनकी ओरसे जो वचन दिये गये है, अुनका पालन करके सिविल सर्विसके अधिकारी अुन लोगोके प्रति अुऋण हो, जिनका कि नमक वे खा रहे है।

अब शिक्षकोका सवाल रह जाता है। प्रो॰ शाहने अभी अपने अेक लेखमें जो विचार प्रगट किये है, मैं अुन्हे पसन्द करता हूँ। यही कि विद्वान स्त्री-पुरुषोके लिअे यह लाजिमी करार दे दिया जाय कि वे अपने जीवनके कुछ — मसलन पाँच — वर्ष अैसा विषय पढानेके लिअे देशको अर्पण कर दे, जिसकी अुन्हे अच्छी रुचि और अध्ययन भी हो। अिसके लिअे अुन्हे कुछ खर्च भी दिया जा सकता है, जो देशकी आर्थिक स्थितिको ध्यानमें रखते हुअे हो। आज अुच्च शिक्षणकी

संस्थाओंमें शिक्षकों और अध्यापकोंको जो अूँची-अूँची तनख़ाहें दी जा रही हैं, वे बन्द कर दी जायँ। साथ ही, आजकल गाँवोंमें काम करनेवाले मौजूदा शिक्षकोंको हटाकर अुनके स्थान पर अधिक योग्य शिक्षक हमें वहाँ भेजने चाहियें।

हरिजनसेवक, ३१-७-'३७

२

['शिक्षाकी समस्या' नामक टिप्पणीमें से]

"अिन सुधारोंके अन्दर सबसे निष्करुण बात तो यह है कि अपने बच्चोंको शिक्षा देनेके लिअे हमारे पास शराबकी आयके अतिरिक्त और कुछ है ही नहीं।" कांग्रेस-मन्त्रियोंने जबसे पद ग्रहण किया, तबसे अिस विषय पर अनेक लोगोंने गांधीजीसे जो बातचीत की, अुनमें से अेकमें अुन्होंने कहा: "यही तो शिक्षामें हमारे सामने सबसे बड़ी समस्या है। पर अिससे हमें घबराना नहीं चाहिये। हमें अिसका हल ढूंढना ही होगा। पर अिसका हल ढूंढते हुअे हमें शराबकी पूर्ण बन्दीके अपने आदर्शमें जरा भी ढील नहीं करनी चाहिये। फिर अिसकी चाहे जो कीमत हमें देनी पड़े। हमारे लिअे तो यह खयाल भी शर्मनाक और अपमानजनक मालूम होना चाहिये कि अगर हमें शराबकी आय न मिले, तो अपने बच्चोंको हम शिक्षा ही न दे सकेंगे। पर अगर यह भी नौबत आ पहुँचे, तो 'अर्धं त्यजति पंडित:' अिस न्यायसे हमें अुसे कबूल कर लेना चाहिये। अेक तो हम संख्याके भूतसे न घबरायें; और दूसरे, बच्चोंको आज जिस किस्मकी शिक्षा दी जा रही है अुसके मोहको छोड़ दें, तो यह समस्या भी न्यारी नहीं है।"

अिससे पाठकोंको पता चल जायगा कि क्यों गांधीजी अिस बात पर अितना जोर दे रहे हैं कि देशके शिक्षा-शास्त्रियोंको अेकत्र होकर अेक अैसी शिक्षा-प्रणाली ढूंढनी चाहिये, जो हमारी अत्यन्त

ग्रामीण जनताकी जरूरतोंको पूरा भी कर दे और साथ ही कम खर्चीली भी हो।

अुपर्युक्त बात सुनकर अेक प्रश्नकर्ताने बड़े आश्चर्यके साथ पूछा. "तब तो आप सचमुच ही माध्यमिक शिक्षाको बिलकुल अुड़ा देना चाहते हैं और मैट्रिक तककी सारी शिक्षा ग्रामीण पाठशालाओंमें ही पूरी कर देना चाहते हैं?"

गांधीजीने कहा. "बिलकुल ठीक। आखिर आपकी अिस माध्यमिक शिक्षामें सिवा अिसके है ही क्या कि विद्यार्थी जो बात अपनी मातृभाषामें दो सालके अन्दर सीख सकता है, अुसीको विदेशी भाषामें पढ़ावें और अिसमें सात वर्ष बरबाद कर दें? आज हमारे बच्चोंको अपने सारे विषय विदेशी भाषाके माध्यमसे पढ़ने पड़ते हैं। हमें अेक तो यह भार बच्चों परसे अुठा लेना है और दूसरे, अुन्हें अपने हाथ-पैरोंसे अिस तरह काम लेना सिखा देना है, जिससे कुछ लाभ हो सके। अितना किया कि हमारी शिक्षा-समस्या भी हल हुअी। अगर शराबकी सारीकी सारी आय हम छोड़ दें, तो भी हमें भीतरसे अैसी कोअी हिचकिचाहट नहीं होनी चाहिये कि हमने कोअी बुरा काम कर डाला। सबसे पहले अिसे छोड़नेका हम निश्चय कर लें, और तब यह सोचें कि बच्चोंकी शिक्षाका प्रबंध क्या और कैसे करें। सबसे पहले यह बड़ी बात करें।"

हरिजनसेवक, २१-८-'३७

४

अनावश्यक भय

१

तीन सालमे शराबबन्दी करनेके काग्रेसी कार्यक्रमकी खूब सराहना करते हुये अेक लिबरल मित्रने शिक्षाके बारेमें अपना भय अिस प्रकार प्रकट किया है

"काग्रेसका शिक्षा-संबधी कार्यक्रम कुछ परेशान करनेवाला मालूम पडता है। अिस बातका बडा डर है कि अिसके कारण कही अुच्च शिक्षाकी प्रगति न रुक जाय। अत मुझे आशा है कि अिसके लिअे अच्छी तरह सोच-विचार करके ही कोअी योजना बनाअी जायगी और जो कुछ परिवर्तन करना हो, अुसकी काफी पहले सूचना दी जायगी। जनताको काग्रेसी योजना पर पूरी तरह विचार करनेका मौका दिये बगैर अिस सबधमें कोअी जल्दबाजी तो हरगिज नही करनी चाहिये।"

यह भय बिलकुल अनावश्यक है। काग्रेस कार्य-समितिने अिस बारेमें अपनी कोअी आम नीति निर्धारित नही की है। काग्रेस काशी विद्यापीठ, जामिया मिलिया, तिलक विद्यापीठ, बिहार विद्यापीठ, गूजरात विद्यापीठ जैसी अनेक शिक्षा-सस्थाओंके लिअे जिम्मेदार जरूर है, लेकिन अिस बारेमें अुसने कोअी आम घोषणा नही की है। मैंने अिस बारेमें जो कुछ लिखा है, वे सब मेरे अपने विचार हैं। अिसमें कोअी शक नही कि मौजूदा शिक्षा-प्रणालीने हमारे देशके नौजवानोको और भारतकी भाषाओं तथा सामान्य सस्कृतिको जो भारी नुकसान पहुँचाया है, अुसको मैं बहुत तीव्रतासे महसूस करता हूँ। अिस सबधमें मेरे विचार बडे तीव्र हैं, लेकिन मैं यह दावा

नही करता कि काग्रेसियोको भी आम तौर पर मैंने अपने विचारोके अनुकूल बना लिया है, तब भला अुन शिक्षा-शास्त्रियोके बारेमे मैं क्या कह सकता हूँ, जो काग्रेसी वातावरणसे भी बाहर हैं और भारतीय विश्वविद्यालयो पर कब्जा किये हुअे हैं? अुनके विचारोंको बदलना कोअी आसान काम नही हैं। मेरे मित्र और अुनका-सा भय रखनेवाले दूसरे लोगोको अिस बातका विश्वास रखना चाहिये कि जो लोग शिक्षामे हेर-फेर करनेका प्रयत्न कर रहे है, वे श्री शास्त्री द्वारा दी गयी सलाह पर पूरा ध्यान रखेंगे और शिक्षा-सबधी मामलोमे जिन लोगोकी सलाहका महत्त्व हैं, अुनसे काफी सलाह और विचार किये बगैर अिस दिशामे कोअी बडा कदम नही अुठायेंगे। यहाँ मैं यह भी बता दूँ तो अप्रासंगिक न होगा कि बहुतसे शिक्षा-शास्त्रियोके साथ अभी भी मेरा पत्र-व्यवहार चल रहा है और अुनकी बेशकीमती रायें मुझे मिल रही हैं, और मुझे यह कहते हुअे खुशी होती है कि वे आम तौर पर मेरी योजनाके अनुकूल ही है।

हरिजनसेवक, २८-८-'३७

२

['साक्षरताके बारेमे' नामक लेख]

अिस पत्रके जरिये शिक्षाके बारेमे मैं जो विचार प्रतिपादित कर रहा हूँ, अुन पर मुझे बहुत-सी रायें मिली है। अुनमें से कुछको मैं अिस पत्रमें अपने खयालके मुताबिक दे भी सकूँगा। लेकिन अभी तो मैं अेक विद्वान मित्रने मुझ पर साक्षरताकी अुपेक्षाका जो अपराध लगाया है, अुसीका जवाब देना चाहता हूँ। मैंने जो कुछ भी लिखा है, अुसमे अैसा खयाल बना लेनेका कोअी भी कारण नही हैं। क्योकि क्या मैंने यह नही कहा हैं कि मेरे मनमे जिस तरहके स्कूलकी कल्पना है, अुसके विद्यार्थियोको अुन्हें सिखाअी

जानेवाली दस्तकारीके जरिये हर तरहकी तालीम दी जायगी? अिसमें साक्षरता भी शामिल है। जुदा-जुदा विषयो पर मेरी जो तजवीजें है, अुनमें हाथ अक्षर बनाने या लिखनेकी कोशिश करनेके पहले औजार चलानेका काम करेंगे, आंखें जैसे जिन्दगीकी दूसरी चीजें देखती हैं, अुसी तरह अक्षरो और शब्दोंके चित्र देखेंगी, कान चीजो और वाक्योंके नाम और अर्थको समझेंगे। सारी शिक्षा कुदरती और रस पैदा करनेवाली होगी और अिसीलिअे देशकी सब शिक्षाओसे तेज रफ्तारवाली और सस्ती रहेगी। अिसलिअे मेरे स्कूलके लडके जितनी तेज रफ्तारसे लिखेंगे, अुससे भी बहुत तेज रफ्तारसे वे पढने लगेंगे। और जब वे लिखना शुरू करेंगे, तो भद्दी लकीरें नही खीचेंगे, जैसे कि मैं अब तक (शिक्षकोंकी कृपासे) खीचता रहता हूँ, बल्कि जिस तरह वे अपनेको दिखायी देनेवाली दूसरी चीजोंकी ठीक शकलें खीच सकेंगे, अुसी तरह अक्षरोकी भी ठीक शकलें बना सकेंगे। अगर मेरे कयासके स्कूल कभी कायम हो, तो मैं यह कहनेका साहस करता हूँ कि वाचनके मामलेमें वे सबसे आगे बढे हुअे स्कूलोंके साथ होड कर सकेंगे, और अगर यह आम खयाल हो कि लिखावट, जैसी कि आजकल ज्यादातर मामलोंमें होती है वैसी गलत नही, बल्कि सही तरीकेकी हो, तो लिखाओमें भी मेरे ये स्कूल आजके अुन्नतसे अुन्नत स्कूलकी बराबरी कर सकेंगे। सेगांव स्कूलके विद्यार्थियोका लिखना मौजूदा ढगके अनुकूल भले ही हो, लेकिन मेरे खयालसे तो वे स्लेट और कागज खराब ही करते हैं।

हरिजनसेवक, ४–९–'३७

५

स्वावलम्बी शिक्षा

डॉ० जे० लक्ष्मीपतिने मद्राससे लिखा है

"मैंने मिशनरियों द्वारा सचालित कुछ सस्थाये देखी हैं। वहां मदरसे सुबह लगते हैं और शामको विद्यार्थियोंसे या तो खेतीका या किसी गृह-अुद्योगका काम लिया जाता है। और जैसा तथा जितना जिसका काम होता है, अुसके अनुसार अुसे मजदूरी भी दी जाती है। अिस तरह सस्था न्यूनाधिक परिमाणमें स्वावलबी बन जाती है, और चूंकि विद्यार्थी भी कमसे कम अपनी आजीविका प्राप्त करने लायक कुछ न कुछ काम सीख लेते हैं, पढाअी छूटने पर वे अपने आपको असहाय महसूस नही करते। मैंने यह भी देखा कि अिन पाठशालाओंका वायुमडल सरकारी शिक्षा-विभागों द्वारा सचालित टकसाली पाठशालाओंके आकर्षणहीन कार्यक्रमसे कही भिन्न था। लडके अधिक स्वस्थ और प्रसन्न दिखायी दिये — अिस कल्पनासे कि वे कुछ अुपयोगी काम कर सके हैं। अुनके शरीरकी गठन भी मजबूत है। ये पाठशालायें कुछ दिन बिलकुल बन्द भी रहती हैं, क्योंकि अुन दिनों लडकोंको सारे दिन खेतों पर काम करना पडता है।

"शहरोंमें भी अैसे लडकोंको तरह-तरहके व्यापार या धधेमें लगा सकते हैं, जिनमें अपने आपको अुसके लायक बना देनेकी शक्ति हो। यह परिवर्तन मनोरजनका काम भी देता है। सुबहके वर्गोंमें जो आध घटेकी छुट्टी होती है, अुस वक्त जिन्हें जरूरत हो अथवा जो चाहें, अुन सबके लिअे अेक बारके भोजनका प्रबंध भी किया जा सकता है। अिस तरह गरीब

लड़के तो खुद-ब-खुद खुशीसे दौड़ते हुअे पाठशालाओंमें आने लग जायेंगे और माता-पिताको भी अपने बच्चोंको नियमित रूपसे पढ़नेके लिये भेजते हुअे अुत्साह होगा।

"अगर यह आधे दिनकी पाठशालाओंकी योजना जारी की जा सके, तो कुछ अध्यापकोंका अुपयोग गांवोंमें प्रौढ़ोंकी शिक्षाके काममें किया जा सकता है। और जिनके लिअे अुन्हें अलग मेहनताना देनेकी भी जरूरत नहीं रहेगी। अिस तरह अिमारत व पढ़नेकी अन्य सामग्रीका भी अुपयोग हो सकता है।

"मद्रासके शिक्षा-मन्त्रीसे मैंने भेंट की है और अुन्हें पत्र भी लिखा है, जिसमें मैंने बताया है कि वर्तमान पीढ़ीकी शारीरिक दुर्बलताका अेक खास कारण पाठशालाओंका यह असुविधाजनक समय ही है। मेरा तो यह खयाल है कि तमाम पाठशालायें और कॉलिज केवल सवेरे ही यानी ६ बजेसे ११ बजे तक लगा करें। ४ घंटेका अध्यापनक्रम काफी होना चाहिये। दोपहरको लड़के घर पर रहें और शामको खेलें-कूदें तथा अपने शरीरके विकासकी ओर भी ध्यान दें। कुछ लड़के दोपहरमें अपनी आजीविका कमानेमें लग सकते हैं और कुछ अपने माता-पिताके काम-काज या व्यापार-व्यवसायमें मदद कर सकते हैं। अिस तरह विद्यार्थी अपने माता-पिताके सम्पर्कमें अधिक रह सकेंगे, जो कि किसी भी पेशे या परम्परागत व्यवसायके लायक अुन्हें बनानेके लिअे जरूरी है।

"अगर हम यह अनुभव करें कि शारीरिक विकास अेक प्रकारका राष्ट्र-निर्माण है, तो पाठशालाके समयमें यह प्रस्तावित परिवर्तन अूपरसे देखनेमें क्रान्तिकारी होते हुअे भी हिन्दुस्तानकी आबोहवा और पुराने रिवाजके अनुकूल ही मालूम होगा और अभिभावक लोग अिसका स्वागत भी करेंगे।"

विद्यालयोंका समय केवल सुबहका ही रखनेके सबंधमें डॉ० अे० न्दमींगतिका यह जो सुझाव है, अिसके सबंधमें मुझे विशेष कहनेकी अिच्छा नहीं है, सिवा अिसके कि शिक्षा-विभागके अधिकारियोंसे मैं अिनकी सिफारिश कर दूं। और न्यूनाधिक परिमाणमें स्वाश्रयी बननेवाली अिन संस्थाओंके बारेमें तो यही कहना होगा कि अगर अुन्हें अपना सारा या कुछ खर्च निकालना है और विद्यार्थियोंको भी किसी लायक बनाना है, तो वे सिवा अिसके कुछ कर ही नहीं सकती। फिर भी मेरी सूचनाओंने कभी शिक्षा-शास्त्रियोंको जबरदस्त आघात पहुँचाया है — महज अिसीलिअे कि वे शिक्षा देनेका आजसे दूसरा तरीका जानते ही नहीं। शिक्षाको स्वावलंबी बनानेकी बात सुनकर ही अुन्हें अैसा मालूम होने लगता है, मानो अुसका सारा महत्त्व चला गया। सीधे बच्चोंसे ही अिस तरह अुनकी शिक्षाका मुआवजा लेना अुन्हें बडा खटकता है। पर शिक्षाके सबंधमें यहूदियोंके अेक प्रयत्न पर लिखी गअी किताब मैं आजकल पढ रहा हूँ। यहूदी पाठशालाओंमें जो धंधेका शिक्षण जारी किया गया है, अुसके सबंधमें लेखकने लिखा है

> "अिस तरह लडके अपने हाथसे जो काम करते हैं, वह खुद भी बडा कीमती होता है। चूँकि कामके साथ-साथ बच्चोंको सोचना भी पडता है, अिसलिअे कामसे अुन्हें थकावट नहीं आती और अुसके मूलमें देशहितकी भावना होनेके कारण अिस शरीर-श्रमको अेक प्रकारका गौरव आप्त हो जाता है।"

अगर हमें जैसे चाहिये वैसे शिक्षक मिल जायँ, तो हमारे बच्चे श्रमधर्मके गौरवको समझने लगेंगे और अुसे वे अपने बौद्धिक विकासका साधन और महत्त्वपूर्ण अंग भी मानने लगेंगे। साथ ही, वे यह भी अनुभव करने लगेंगे कि वे जो शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं, अुसका मूल्य श्रमके रूपमें चुकाना भी अेक प्रकारकी देश-सेवा ही है। मेरे सुझावका आशय तो यह है कि हम बच्चोंको दस्तकारियोंकी शिक्षा

महज अिसलिअे न दे कि वे कुछ अुत्पादक काम करना सीखें, बल्कि अिसलिअे दे कि अुसके द्वारा अुनकी बुद्धिका विकास हो। सचमुच अगर राज्य ७ से १४ वर्षकी अुम्रके अन्दरके बच्चोंको अपने हाथमें ले ले, अुत्पादक श्रम द्वारा अुनके मन और शरीरको विकसित करनेकी कोशिश करे और फिर भी यह शिक्षा स्वावलंबी न हो सके, तो कहना होगा कि निश्चय ही वे पाठशालाअें ठगोंके स्थान हैं, और अुनमें काम करनेवाले शिक्षक निरे बेवकूफ हैं।

मान लीजिये कि अेक लडका या लडकी यंत्रकी तरह नहीं, बल्कि अकलमन्दीके साथ काम करने लग जाय और अेक विशेषज्ञके मार्गदर्शनमें होनेवाले सामूहिक कार्यमें दिलचस्पी भी लेने लगे, तो अेक वर्षकी शिक्षाके बाद हरअेक औसत दर्जेके विद्यार्थीको फी घंटा अेक आना कमाने योग्य हो जाना चाहिये। अिस तरह अगर महीनेमें २६ दिन मदरसा लगे और रोज बच्चा ४ घंटे काम करे, तो हरअेक विद्यार्थी रु० ६-८-० महीना कमा लेगा। अब सवाल सिर्फ यही है कि क्या हम अिस तरह करोडों बच्चोंके श्रमका लाभदायक अुपयोग कर सकेंगे? अेक बरसकी तालीमके बाद भी अगर हम बच्चोंकी शक्ति और बुद्धिको अिस लायक न बना सकें कि अुनकी बनाअी चीजें बाजारमें भेजने पर अुनसे अितनी कीमत आ सके, जिससे लडकोंको फी घंटा अेक आनेके हिसाबसे मजदूरी पड जाय, तो समझना चाहिये कि हमारी बुद्धिका दिवाला ही निकल गया है। मैं जानता हूं कि हिन्दुस्तानमें आज कहीं भी गांवोंके लोग अितना नहीं कमा सकते, जिससे कि फी घंटा अेक आनेकी मजदूरी पड जाय। पर अिसका कारण तो यह है कि हमने अपनेको आज गरीबों और अमीरोंके बीचकी गहरी विषमताका आदी बना लिया है, और दूसरे यह भी कि शहरके निवासी गांवोंको लूटनेमें शायद अनजानमें अंग्रेजोंके साथी बने हुअे हैं।

हरिजनसेवक, ११–९–'३७

६

स्वावलम्बी शिक्षा पर कुछ और चर्चा

[श्री महादेव देसाअीके 'स्वावलम्बी शिक्षा पर कुछ और चर्चा' नामक लेखमें से । —सं०]

गाधीजीने अिस विचारके खिलाफ चेतावनी दी कि स्वावलम्बी शिक्षाका विचार शराबबन्दीको जल्दीसे जल्दी अमलमे लानेकी आवश्यकताके कारण पैदा हुआ है। अुन्होने आगे कहा

"दोनो अेक-दूसरीसे स्वतत्र आवश्यकताअे है। आपको अिस श्रद्धाको लेकर चलना होगा कि सरकारी आय हो या न हो, शिक्षा दी जा सके या न दी जा सके, पूर्ण शराबबन्दी करनी ही होगी। अिसी तरह आपको अिस श्रद्धाके साथ चलना होगा कि हिन्दुस्तानके गाँवोकी आवश्यकताओको देखते हुअे, अगर हमे शिक्षाको अनिवार्य बनाना है, तो हमे अपनी ग्राम-शिक्षाको जरूर स्वावलबी बनाना चाहिये।"

अेक शिक्षा-शास्त्रीने, जो अुनके साथ चर्चा कर रहे थे, कहा "पहली श्रद्धा मुझमें गहराअीमे बैठी हुअी है। मेरे लिअे शराबबन्दी स्वय अेक लक्ष्य है और मै स्वय अिसको अेक बडी भारी शिक्षा मानता हूँ। अिसलिअे शराबबन्दीको सफल बनानेके लिअे मै शिक्षाका सर्वथा बलिदान करना हो, तो करनेके लिअे तैयार रहूँगा। लेकिन दूसरी श्रद्धाका मुझमें अभाव है। मै अब भी विश्वास नही कर सका हूँ कि शिक्षा स्वावलबी बनायी जा सकती है।"

गाधीजीने कहा "अुसमें भी मै चाहता हूँ कि आप अुसी श्रद्धाको साथ लेकर चले। ज्यो ही आप अुस पर अमल करना शुरू करेंगे कि अुपाय और साधन आप ही पैदा हो जायँगे। मुझे खेद है कि अिस

आवश्यकताका खयाल मुझे जितनी बड़ी हुअी अुम्रमें हुआ, नहीं तो मैं खुद ही यह परीक्षण करता। अब भी यदि अीश्वरकी कृपा हुअी तो यह दिखानेके लिअे कि शिक्षा स्वावलंबी हो सकती है, मुझसे जो कुछ हो सकेगा मैं करूँगा। लेकिन अिन सब वर्षोंमें मेरा समय दूसरी बातोंने, जो शायद अितनी ही जरूरी थीं, ले लिया। और यह तो मेरा सेगांवका निवास ही था, जिसने मुझमें यह विश्वास पैदा किया। अभी तक हमने अपने बच्चोंको कभी शक्तिसंपन्न और अुन्नत बनानेका खयाल किये बिना अुनके दिमागोंमें किताबी बातें ठूँसनेमें ही अपनी सारी ताकत लगायी है। हमें अब अिसे रोक देना चाहिये। और अूपरी कार्यकी तरह नहीं, बल्कि बौद्धिक शिक्षाके प्रधान साधनकी तरह हाथ-पैरके कामके जरिये बच्चोंको अुचित रूपमें शिक्षा देनेमें अपनी शक्ति केन्द्रित करनी चाहिये।"

अुन सज्जनने कहा "यह भी मैं समझ सकता हूँ, लेकिन अुसमें से स्कूलका पूरा खर्च निकलना ही चाहिये, अैसी शर्त क्यों?"

गांधीजीने जवाब दिया "यह अुसकी अुपयोगिताकी कसौटी होगी। चौदह वर्षकी अुम्र होने अर्थात् सात वर्षका शिक्षाक्रम समाप्त करनेके बाद बच्चेको अेक कमाअू अिकाअीकी तरह स्कूलसे छुट्टी दे देनी चाहिये। अब भी गरीब आदमियोंके बच्चे अपने माता-पिताको अपने आप सहारा देते हैं। अिसमें अुनके मनमें यही भाव होता है कि अगर वे अुनके साथ काम न करेंगे, तो अुनके माता-पिता क्या तो खुद खायेंगे और क्या अुन्हें खानेको देंगे। यह स्वयं ही अेक शिक्षा है। अिसी तरह राज्य भी सात वर्षकी अुम्रमें बच्चेको अपनी देख-रेखमें ले लेता है और फिर अुसके कुटुम्बको अेक कमाअू अिकाअीके रूपमें सौंप देता है। आप शिक्षा भी देते हैं और अुसके साथ ही साथ बेकारीकी जड़ भी काटते जाते हैं। आप बच्चोंको अेक या किसी दूसरे धंधेके लिअे तैयार करते हैं। आप अिस खास धंधेके साथ ही अुसके दिमागको साधते हैं, शरीरको सुगठित करते हैं, हाथकी लिखावटको

सुधारते हैं, अुसकी कलाकी भावनाको अुन्नत करते हैं। अिस तरह अुसे सिखायी जानेवाली दस्तकारीका वह अुस्ताद हो जाता है।"

अुन सज्जनने पूछा "मान लीजिये कि लड़का खादी बनानेकी कला और विज्ञानको लेता है, तो क्या आप समझते हैं कि जिस हुनरको वह सीखता है, अुसका अुस्ताद बननेमें अुसे सात बरस लगने ही चाहिये?"

गांधीजीने जवाब देते हुअे कहा "हां, अगर वह यांत्रिक ढंगसे न सीखेगा तो अैसा होगा ही। अितिहास अथवा भाषाके अध्ययनमें हम वर्षों लगाते हैं? क्या अिन विषयोंसे, जिन्हें अभी तक अितना बनावटी महत्त्व दे रखा था, हुनर या दस्तकारी कुछ कम महत्त्वकी चीज है?"

"लेकिन क्योंकि आप खासकर कताअी और बुनाअीके बारेमें सोचते रहते हैं, अिसलिअे यह साफ ही है कि आप अितने बुनाअीके स्कूल जारी करनेकी बात सोच रहे हैं। हो सकता है कि बालककी रुचि बुनाअीके काममें न होकर किसी दूसरे काममें हो।"

"बिल्कुल ठीक। तब हम अुसे कोअी दूसरा हुनर सिखायेंगे। [illegible] धारणा यह है कि २५ लड़कोंके लिअे हम अेक शिक्षक रखें, [illegible] जितने शिक्षक आपको मिल सकें अुनकी मददसे आप हर [illegible] लड़कोंके लिअे अेक वर्ग या स्कूल खोल सकते हैं, और अिनमें [illegible] हरअेक स्कूलके लिअे अलग-अलग [illegible] और [illegible] या जूता [illegible] [illegible] है। [illegible] आपको ध्यानमें रखनी होगी कि [illegible] लिये आप लड़कोंको सिखाना [illegible] पर मैं और जोर दूंगा। [illegible]

कल्पना ही नहीं कर सकते। अगर वे सिविल और मेकेनिकल अिंजीनियर ही होना चाहेंगे, तो वे सात वर्षकी शिक्षा खतम करनेके बाद अिन अुच्च और खास विषयोंके लिअे बने हुअे खास कॉलेजोंमें चले जायेंगे।

"साथ ही, मैं अेक बात पर और जोर दूंगा। दस्तकारीकी तालीमसे लिखाअी-पढ़ाअीकी शिक्षाको दूर करनेके कारण हम ग्रामीण हुनरोंको नीची निगाहसे देखनेके आदी हो गये हैं। दस्ती हुनर कुछ नीचे दर्जेका काम समझा जाने लगा, और वर्णाश्रमकी भीषण विकृतिके कारण हम लोग धुनिये, जुलाहे, खाती और मोचियोंको नीची जातिके समझने लगे। हुनरको बौद्धिक शिक्षासे बहिष्कृत नीचे दर्जेकी कोअी चीज समझनेके दूषित रिवाजके कारण हमारे यहाँ क्रॉम्पटन और हारग्रीव जैसे आविष्कारक पैदा न हो सके।' विद्या या अिल्मको जैसा दर्जा मिला हुआ है, अगर पेशे या हुनरको भी स्वतंत्र रूपसे वैसा ही दर्जा मिला होता, तो अपने ही कारीगरोंमें से हमें बहुतसे आविष्कारक मिल जाते। अवश्य ही नवाविष्कृत यंत्रोंने आगे बढ़कर जल-शक्ति और दूसरी चीजोंको खोज निकाला, जिससे मिलोंने हजारों मजदूरोंका स्थान ले लिया। मेरे खयालमें यह पैशाचिकता थी। हम गांवों पर अपनी शक्ति लगाते समय अिस बातका खयाल रखेंगे कि हुनरकी प्रचुर शिक्षाके कारण जो आविष्कारका माद्दा पैदा होगा, वह सामूहिक रूपमें ग्रामीणोंके लिअे सहायक होगा।"

हरिजनसेवक, १८–९–'३७

७

'अेक अध्यापक' की गलतफहमी

['स्वावलंबी स्कूल' नामक लेख]

"हमारी आजकी आर्थिक स्थितिका मुख्य अंग यह है कि हमारे देशकी साधन-सामग्री पर आधार रखनेवाले मनुष्योंकी संख्याका बोझा बढ़ता जा रहा है। अुदाहरणार्थ, हिन्दुस्तानमें पड़ती जमीनें विशाल मात्रामें नहीं हैं, न हमारे पास अुपनिवेशों और पूंजीकी ही बहुलता है। अतः हमारी साधन-सामग्रीमें से माल पैदा करनेका काम सीखे हुअे लोगोंको ही सौंपा जाना चाहिये। सौ व्यक्ति जमीनके सौ अलग-अलग टुकड़े जोतें, तो ५० व्यक्तियोंके लिअे पूरी हो सके, अुतनी खुराक ही पैदा होगी। पर यदि ये सब टुकड़े अिकट्ठे किये जायें और २० चतुर (निष्णात) व्यक्ति अुस पर खेती करें, तो यही जमीन सौ व्यक्तियोंको निभा सकती है। आजकल अैसी खोजें हुअी हैं, जिनकी बदौलत मजदूरका गृहजीवन अव्यवस्थित नहीं होगा और न अुसकी स्वतंत्रताका ही हरण होगा, और फिर भी अुसकी अुत्पादन शक्ति बढ़ जायगी। अतः अब अधिक व्यक्तियोंको काम करनेसे रोकनेकी जरूरत निश्चित रूपसे अुत्पन्न हो गअी है। मनुष्योंको ५० वर्षकी अुम्रमें पेन्शन देनेके नियमसे बहुत खराबी पैदा होती है, क्योंकि सामान्य व्यक्तिकी मानसिक और शारीरिक शक्ति अिस अुम्रके बाद ही अधिकसे अधिक खिलती है। योग्य मार्ग तो यह है कि मनुष्य पूरी शिक्षा पाकर तैयार न हो, तब तक अुनको जीवनमें प्रवेश न करने दिया जाय।

"हिन्दुस्तानकी अवनतिका मुख्य कारण यही है कि अुसके मजदूर अपने जीवनकी शुरुआत बहुत जल्दी करते हैं। बढअी अपने लडकेको जीवनमें अितना जल्दी प्रवेश कराता है कि वह १२ वर्षकी अुम्रमे अपनी कमानेकी चरम सीमा पर पहुँच जाता है। अुसके बाद वह शादी करता है और थोड़े ही समयमे अपना अलग स्वतंत्र धंधा शुरू करता है। अिसने अुत्पादन और वितरणके नये तरीके अुनके दिमागमें अुतर ही नहीं सकते। अुनकी मजदूरीका आर्थिक दृष्टिसे क्या महत्त्व है, अिसकी अुसे कुछ समझ नहीं होती। अैसे कारीगरको कोअी भी व्यक्ति धोखा दे सकता है और अुनका शोषण कर सकता है। अुसे अपनी छोटी संकुचित दुनियामें कुअेंके मेंढककी तरह मुश्किलसे रोजी कमाकर जीनेमें और परिवार बढानेमें संतोष रहता है। हिन्दुस्तानमें संकुचितता, संतोषवृत्ति, भाग्यवाद, जातिप्रथा, शराब व अफीमके व्यसन, अिन सबकी जड यही है। मैं लंकाके चायके बगीचोंको देखने गया था। वहाँ मुझे सबसे ज्यादा दुःख बालकोंको मजदूरी करते देखकर हुआ। वहाँ स्कूल तो थे, पर माता-पिताका रुख बच्चोंको मजदूरी पर लगानेका होता है। बडी अुम्रके लोगोंकी पीढी हमेशा नअी पीढीकी तरफसे अपने कर्तव्यको सिर परसे अुतार देनेके लिअे प्रयत्नशील रहती है। राज्यका काम अुन प्रवृत्तियोंको रोकनेका है, जो व्यक्तियोंके लिअे लाभदायक पर समाजके लिअे हानिकारक हों। लंका जैसे देशमें भी, जहाँ प्रकृतिके सामग्री-भंडारको खोजकर अुनका अुपयोग करनेके लिअे आवश्यक आबादी नहीं है, बच्चोंको मजदूरी पर लगानेकी प्रथाका बचाव नहीं हो सकता, तो हिन्दुस्तानमें, जहाँ बच्चोंको काम पर लगानेसे बड़े बेकार बनते हैं, अुसका बचाव हो ही कैसे सकता है?

"माल तैयार करके बाजारमें बेचनेवाले कारखानो जैसे स्वावलम्बी स्कूल शिक्षा देंगे, अैसी भ्राति रखना अुचित नही है। व्यवहारमे तो वह कानूनमे मान्य की हुअी बाल-मजदूरी ही हो जायगी। अुदाहरण स्वरूप, अेक स्कूल कातनेका काम शुरू करेगा, तो चरखा चलाना अेक यान्त्रिक क्रिया बन जायेगी। अेक थानके लिअे कितना सूत चाहिये, यह गिनकर गणित सीखा जा सकता है या रूअीके विकास और सुधारको देखकर विज्ञान और भूगोल सिखाया जा सकता है, यह बात मेरे गले नही अुतरती। ये वस्तुअे मनको अेक-दो बार सतेज बना सकती है, पर वर्षों तक यदि ये चालू रहे, तो मनका विकास होना बद हो जायेगा और वह किसी निश्चित लकीर पर ही काम करने लग जायेगा। आँख, कान और हाथोकी शिक्षा बहुत आवश्यक है और हाथसे की जानेवाली मेहनत सभी स्कूलोमे अनिवार्य कर दी जानी चाहिये। पर हमे यह नही भूलना चाहिये कि जिसे हाथोकी शिक्षा कहते है, वह वस्तुत दिमागकी ही शिक्षा होती है। कोअी भी स्कूल शिक्षा देना चाहता हो, तो अुसे बेचा जा सके अैसा माल बनानेका विचार छोड ही देना चाहिये। अुसे बच्चोको भाँति-भाँतिका कच्चा माल और यत्र देने चाहियें। अुस पर प्रयोग करके बच्चे अुसे भले ही बिगाडे। बिगाड तो होगा ही। श्री नरहरि परीखने साबरमती हरिजन आश्रमकी शालाओकी कताअीके जो आँकडे दिये है, अुनका ध्यानपूर्वक अध्ययन करनेसे प्रकट हो जाता है कि स्कूल अेक ही काम लेकर चलता है, और अुसमें शिक्षा पाये हुअे बडी अुम्रके बालक होते है, तब भी काफी मात्रामें बिगाड होता है। धधेको सिखानेवाला स्कूल विज्ञानके कॉलेजकी तरह प्रयोग करने और साधन-सामग्री बिगाडनेकी जगह है। हिन्दुस्तान जैसे गरीब देशमें तो अैसे स्कूल कमसे कम आवश्यक सख्यामे खोले जाने चाहिये और वे

कुछ खास केन्द्रोंमें होने चाहियें। गोरखपुर या अवधके लड़कोंको चुनकर चमड़ा कमानेका काम सीखनेके लिअे कानपुर भेजा जाय, तो अुससे राष्ट्रको कोअी नुकसान नहीं होगा। पर धंधा सिखानेवाले अगणित स्कूल खोलनेसे तो बिगाड़ होगा ही।

"दूसरा अेक तरहका नुकसान आम तौर पर ध्यानमें नहीं आता। अेक रतल रूअीमें से यदि प्रौढ़ वयका कुशल मजदूर चार मनुष्योंकी जरूरत पूरी हो सके, अितने कपड़े बना सकता है, तो बिना सीखा हुआ मजदूर मुश्किलसे दो मनुष्योंकी जरूरतके कपड़े बना सकेगा। अिसका अर्थ यह है कि हिन्दुस्तानके लिअे वस्त्रोंकी जरूरतको पूरा करनेके लिअे आजके मुकाबले दुगुनी जमीनमें कपास बोनी पड़ेगी। दूसरे शब्दोंमें कहें तो बिना सीखे हुअे मजदूरोंसे काम लिया जाय, तो हिन्दुस्तानकी वस्त्रोंकी जरूरत पूरी करनेके लिअे जरूरी कपास अुगानेके लिअे जितनी जमीन चाहिये, अुतनी जमीनमें यदि कुशल मजदूरोंसे काम लिया जाय, तो हिन्दुस्तानकी अन्न और वस्त्र दोनोंकी आवश्यकता पूरी हो सके, अितना अनाज और कपास पैदा हो सकते हैं।

"अिस नुकसानका अेक तीसरा पहलू भी ध्यान देने लायक है। यह कहा जाता है कि स्कूलके बालक तरह-तरहकी सुंदर चीजें बना सकते हैं। कुछ दिन पहले अेक अुद्योगशालामें पढ़कर आये हुअे लड़केको मैंने 'प्लाअीवुड' से खिलौने बनाते देखा था। वह जो लकड़ी, नमूना और ओजार अिस्तेमाल करता था, वे सब विदेशी थे। अैसे अुद्योग विदेशी मालकी खपतको, यदि वह हमारे यहाँ न हो तो, नये सिरेसे पैदा करते हैं। कोअी यह कहेगा कि हम अपना 'प्लाअीवुड' पैदा कर सकते हैं। पर अमेरिकामें अिस पेड़को अुगानेके लिअे जो फालतू जमीन पड़ी है, वह हिन्दुस्तानमें नहीं है। कच्चे माल और पूंजीका

अुपयोग बेकार चीजें पैदा करनेमें होता हो, तो अुसे रोकना चाहिये, अुसे अुत्तेजन देना योग्य नही।

"स्कूलो या कॉलिजोमें कोमल दिमागवाले विद्यार्थी पैसे और नफे-टोटेकी नही, पर विचारो और आदर्शोंकी सृष्टिमे बसते हैं। अैसी कोमल वयमे यदि अुनके सामने माल पैदा करने, बेचने और अुसके पैसे पैदा करनेका आदर्श रखा जाय तो अुससे बालकोका विकास रुकेगा। और आज जो जगतमे धनकी बहुलताके बीच भी लोगोको दरिद्रतामें रहना पडता है, वह स्थिति बहुत बढ जायेगी। श्री रामकृष्ण अुद्योगकी शिक्षाको कुछ भी महत्त्व नही देते थे, यह भी अेक जानने लायक बात है।

"हम शिक्षाके वेगको बढा सकेंगे और आज लडका जो चीज सात वर्षमें सीखता है, अुसे दो वर्षोमें सिखा देंगे, अैसा मानना भी अेक विचित्र भ्रम है। लडकेका दिमाग कोअी खाली बरतनकी तरह नही है कि अुसमें जो कुछ भरना हो, सो भरा जा सके। बालक जो वस्तु १६ वें वर्षमें सीख सकता है, अुसे वह ८ वें वर्षमे सीखनेका प्रयत्न नही कर सकता, न अुसे करना चाहिये। विदेशी भाषाके कारण देरी लगती है, अैसा नही है, और लोग मानते हैं अुतना समय भी अिस विषयको नही दिया जाता। निबंध-लेखन दिमाग और भावनाका शिक्षण है। अैसी शिक्षा तो धीमी होगी ही। दिमागका विकास करनेके लिअे काममें लिये जानेवाले तरीके शायद अनुत्पादक, नुकसानदेह तथा धीमे लग सकते हैं, पर अितना याद रखना चाहिये कि शिक्षाका अुद्देश्य मनको बलवान बनाना और जीवनमे मनको जरूरी समाधान करना सिखाना है। स्कूल मनुष्य ही नही पर माल भी तैयार करें, यह माँग करना हमारे लिअे अुचित नही है।

"जिस सबका सार यही है कि स्कूल समृद्ध और राष्ट्र दिवालिया बने, अैसी अल्पदृष्टि वाली नीति रखना गलत अर्थशास्त्र है।

'अेक अध्यापक'

यह लेख अेक प्रसिद्ध विश्वविद्यालयके अेक अध्यापकका है। अिसके साथके कागज पर लेखकके हस्ताक्षर हैं, पर यह लेख बिना हस्ताक्षरका है, अिसलिअे मैं लेखकका नाम नहीं देता। पाठकको तो लेखसे मतलब है, लेखकसे नहीं। गहरी जड़ जमाकर बैठी हुआी कल्पनाओंसे मनुष्यकी दृष्टि कैसी संकुचित हो जाती है, अुसका यह अेक जोरदार अुदाहरण है। अिस लेखकने मेरी योजनाको समझनेका कष्ट नहीं अुठाया। मेरी कल्पनाके स्कूलके लड़कोंका वे लकाके अर्ध गुलामी-वाले चायके बगीचोंके लड़कोंके साथ मुकाबला करते हैं, जिसमें वे अपनी ही बुद्धिका प्रदर्शन करते हैं। वे यह भूल जाते हैं कि अुन बगीचोंमें काम करनेवाले लड़कोंको विद्यार्थी नहीं गिना जाता। अुनकी मजदूरी अुनकी शिक्षाका हिस्सा नहीं है। मैं जिस तरहके स्कूलोंकी हिमायत करता हूँ अुनमें तो लड़के हाअीस्कूलोंमें अंग्रेजीको छोड़कर जितना सीखते हैं, वह सब और अुसके अुपरात क्वायद संगीत, आलेखन और वेतन लेकर अुद्योग — जितना सीखेंगे। अिन स्कूलोंको 'कारखाना' कहना अनेक स्पष्ट हकीकतोंको समझनेसे अिनकार करनेके बराबर है। किसी व्यक्तिने बन्दरके सिवाय कोअी प्राणी देखा ही न हो और मनुष्यका वर्णन — कुछ ही संयोगसे — बन्दरके वर्णनसे मिलता हो अिसी कारण वह मनुष्यका वर्णन पढ़नेसे अिनकार कर दे अिस तरहकी यह बात है। मैंने अपने सुझावमें से जितने परिणाम पैदा करनेका दावा किया है वे सब परिणाम आवेंगे ही, अैसी आशा न रखनेकी चेतावनी अिन अध्यापकने लोगोंको दी होती, तो अुनके कहनेमें कुछ तथ्य है, अैसा समझा जाता। पर वह चेतावनी भी अनावश्यक होती, क्योंकि मैंने स्वयं वह चेतावनी दे दी है।

मेरा सुझाव नया है, यह मैं मानता हूँ। पर नवीनता कोअी अपराध नही है। अिसके पीछे काफी अनुभव नही है, यह भी मैं मानता हूँ। पर मेरे साथियोको जो अनुभव मिला है, अुस परसे मुझे यह माननेके लिये प्रोत्साहन मिलता है कि यदि अिस योजनाको पूरी निष्ठासे अमलमे लाया जाय तो वह सफल होगी। यह प्रयोग निष्फल हो, तब भी अिसे आजमा लेनेमें राष्ट्रका कोअी नुकसान नही होगा। और यदि यह प्रयोग कुछ अशोमें ही सफल हो, तो भी अुसे अपार लाभ होगा। दूसरे किसी तरीकेसे प्राथमिक शिक्षा मुफ्त, अनिवार्य और असरकारक नही बनायी जा सकती। आजकलकी प्राथमिक शिक्षा तो अेक जाल और भ्रमरूप है, यह निर्विवाद वस्तु है।

श्री नरहरि परीखके दिये हुअे आँकडे अिस योजनाका जितना समर्थन हो सके, अुतना करनेके लिअे ही लिखे गये है। अिन आँकडो परसे ही आखिरी निर्णय नही किया जा सकता। ये आँकडे प्रोत्साहन अवश्य देते है। अुत्साही व्यक्तिको ये अपने काममें आगे बढनेके लिअे हकीकतोका अच्छा सहारा देते है। सात वर्षका समय मेरी योजनाका अविभाज्य अग नही है। यह भी हो सकता है कि मेरी सोची हुअी बौद्धिक भूमिका पर पहुँचनेमे अधिक वक्त लगे। शिक्षाके समयको बढानेसे राष्ट्रको कोअी नुकसान होनेवाला नही है। मेरी योजनाके आवश्यक अग ये है

१ सब तरहसे देखते हुअे अेक (या अनेक) अुद्योग लडके या लडकीके सर्वांगीण विकासका अच्छेसे अच्छा साधन है और अिसलिअे सारा पाठ्यक्रम अुद्योग-शिक्षाके आसपास गूँथा जाना चाहिये।

२ अिस कल्पनाके अनुसार दी हुअी प्राथमिक शिक्षा कुल मिलाकर स्वावलम्बी अवश्य होगी यद्यपि पहले वर्षके या दूसरे वर्षके पाठ्यक्रममे शायद वह पूर्ण स्वावलम्बी न बने। यहा प्राथमिक शिक्षाका अर्थ अुपरोक्त शिक्षासे है।

गणित और दूसरे विषय अुद्योग द्वारा सिखानेके बारेमें अिन अध्यापकने शका की है। अिसमें वे बिना अनुभवके बोलते हैं। मैं मेरे अनुभवसे कह सकता हूँ। दक्षिण अफ्रीकामें टॉल्स्टॉय फार्म पर जिन लडके-लडकियोंकी शिक्षाके लिअे मैं सीधा जिम्मेदार था, अुनका सर्वांगीण विकास करनेमें मुझे कोअी मुश्किल नहीं हुअी। वहाँ शिक्षाका केन्द्र-बिन्दु करीब आठ घटेका अुद्योग था। अुनको अेक या बहुत हुआ तो दो घटेकी अक्षर-ज्ञानकी शिक्षा मिलती थी। अुद्योगमें खोदना, खाना पकाना, पाखाना साफ करना, झाडू लगाना चप्पल बनाना, सादा बढ़अी-काम और सदेशे लाना ले जाना — ये काम थे। बालकोंकी अुम्र ६ से १६ वर्षकी थी। यह प्रयोग अुनके बाद तो खूब फला-फूला है।

हरिजनबधु, ३-१०-'३७

८

शहरोंके लिअे भी यही

['बम्बअीमें प्राथमिक शिक्षा' नामक लेख]

अब तक मैंने जो चर्चा की है, वह ग्राम-शिक्षाके बारेमें की है, क्योंकि यही सारे हिन्दुस्तानका प्रश्न है। यदि अिसको हम सीधी तरहसे हल कर सकें, तो शहरोंके लिअे कठिनाअी नहीं होगी, यह समझकर मैंने शहरोंके बारेमें कुछ नहीं लिखा। पर बबअीके शिक्षामें दिलचस्पी लेनेवाले अेक नागरिकका नीचेका प्रश्न अुत्तर माँगता है :

"प्राथमिक शिक्षाके भारी खर्चके प्रश्नको हल करनेमें कांग्रेसका मन्त्रि-मडल लगा हुआ दीखता है। शिक्षाका खर्च शिक्षामें से ही निकल सकता है, असा सुझाया गया है। बम्बअी जैसे शहरमें किस तरहसे और कितने अशमें अिस दिशामें बढ

सकते है, जिस प्रश्नकी चर्चा आवश्यक लगती है। कहा जाता है कि शिक्षाके पीछे वम्बअी कॉरपोरेशनके खर्चका अदाज अिस सालके लिअे ३५ से ३६ लाख रुपयेका है, और सारे शहरमे शिक्षा अनिवार्य करनेमे दूसरे कितने ही लाखका खर्च वढ जायेगा। शिक्षकोकी तनख्वाहमे २० लाखसे और किरायेमे ४ लाखसे ज्यादा रकम खर्च होती है। प्रति विद्यार्थी औसत सालाना खर्च ४० से ४२ रुपये होता है। विद्यार्थी पढते-पढते अितनी रकमका काम करे, तभी शिक्षाका खर्च शिक्षामे से निकल सकता है। यह कैसे हो सकता है?"

मेरा तो दृढ विश्वास है ही कि यदि अुद्योगका तत्त्व वम्बअीके स्कूलोमे दाखिल हो, तो अुससे वम्बअीके वालकोको और वम्बअी शहरको लाभ ही होगा। शहरमें वडे हुअे वालक तोतेकी तरह कविताअे रटेगे और सुनायेंगे, नाचेगे, दूसरे हाव-भाव दिखायेंगे, ढोल वजायेंगे, कूच करेंगे, अितिहास-भूगोलके जवाव देंगे, तो कोअी थोडा अंक-गणित जानेंगे, पर अुससे आगे नही वढेंगे। मैं भूल गया। वे थोडी अंग्रेजी जरूर जानते होंगे। पर अेक टूटी हुअी कुर्सी ठीक करनी हो, अथवा फटा हुआ कपडा सीना हो, तो वे नही कर सकेंगे। अैसी वातोमे हमारे शहरोके लडके जितने पगु देखे जाते है, अुतने पगु लडके मैंने दक्षिण अफ्रीका या अिंग्लैण्डके अपने प्रवासमे कही नही देखे।

अिसलिअे मैं तो मानता ही हूँ कि शहरोमे भी यदि अुद्योगों द्वारा ही शिक्षा दी जाय, तो वालकोको वेहद लाभ हो सकता है और पूरे ३५ लाख नही, तो अुसका अेक वहुत वडा हिस्सा तो वच ही सकता है। ४२ के वजाय वार्षिक ४० रु० ही प्रति वालक गिने जायँ, तो म्युनिसिपैलिटी ८७,५०० वालकोको पढाती है, अैसा कहा जा सकता है। दस लाखकी आवादी हो तो वालकोकी सख्या

कमसे कम डेढ़ लाख होनी चाहिये, अर्थात् लगभग ६२ हजार बालक बिना शिक्षाके रहते होंगे। ये सब गरीब नहीं होंगे और प्राअिवेट स्कूलोंमें जाते होंगे, अैसा मानें तब भी ५६,००० बालक बचते हैं। अुनके लिअे अिसी हिसाबसे २२ लाख ४० हजार रुपये और चाहियें। अितने पैसे बम्बअी कब पैदा करे और कब सब बालकोंको पढ़ावे? और क्या पढ़ावे?

मैं मानता हूँ कि शिक्षा अनिवार्य और मुफ्त होनी ही चाहिये। पर बालकोंको अुपयोगी अुद्योग देकर अुसकी मारफत ही अुनके मन और शरीरकी शिक्षा होनी चाहिये। मैं यहाँ भी पैसोंकी गिनती करता हूँ, वह अनुचित नहीं है। अर्थशास्त्र नैतिक और अनैतिक दोनों प्रकारका होता है। नैतिक अर्थशास्त्रमें दोनों बाजू बराबर होंगी। अनैतिकमें तो जिसकी लाठी अुसकी भैंस। लिमका प्रमाण कितना हो, यह अुसकी ताकत पर आधार रखता है। अनैतिक अर्थशास्त्र जैसे घातक है, वैसे ही नैतिक आवश्यक है। अुसके बिना धर्मकी पहचान और अुसका पालन मैं असंभव मानता हूँ।

मेरा नैतिक शास्त्र मुझे यह सुझाता है कि बम्बअीके बालक हर महीने खेलते-कूदते तीन रुपयेका काम कर सकते हैं। वे यदि ४ घंटे काम करें और हर घंटेके दो पैसे गिने जायें, तो महीनेमें २५ दिन खुलनेवाले स्कूलमें वे ५० आने यानी रु० ३–२–० का काम कर सकते हैं।

जब शिक्षाके रूपमें अुद्योग सिखाया जाय, तब यह माननेका कोअी कारण नहीं है कि बालक कामके बोझसे दब जायेंगे। नाममात्रके शिक्षक अितिहास-भूगोल जैसे सरल और रसप्रद विषय सिखाते हुअे भी शिष्योंको बोझरूप लगते हैं। सच्चे अध्यापक हँसते-खेलते अपने शिष्योंको अुद्योग सिखाते हैं, यह मैंने अपनी आँखोंसे देखा है। अैसे शिक्षक कहाँसे ढूँढे जायें, अैसा तो कोअी नहीं कहेगा। कोअी चीज

करने लायक है, अैसा माननेके बाद अुसे करनेवाले तैयार करना तो स्वाभाविक ही अुसे माननेवाले व्यक्ति या सस्थाका धर्म हो जाता है। अैसे शिक्षकोको तैयार करनेमे समय तो लगेगा ही। आजकी अयोग्य शिक्षाकी रचनामे और अुसके लिअे शिक्षक तैयार करनेमें जितना समय गया, अुसका शताश भी अिसमें नही लगेगा। खर्च तो प्रमाणमे कम ही लगेगा। यदि मेरे हाथमे बबअी कॉरपोरेशन हो, तो मैं अपनी कल्पनामे श्रद्धा रखनेवाले शिक्षा-शास्त्रियोकी अेक छोटी समिति नियुक्त करके अुनसे अेक महीनेके भीतर योजनाकी मॉग करूँ और अुसका अमल शुरू कर दूँ। अिसमे यह मान्यता अवश्य आ जाती है कि मुझे अिस कल्पनाकी सभावनाके बारेमे अचल श्रद्धा है। पराअी श्रद्धासे आज तक कोअी अच्छे व महान कार्य नही हुअे।

अेक प्रश्न बाकी रहता है। कौनसे अुद्योग शहरोमे सरलतापूर्वक सिखाये जा सकते है? मेरे पास तो अुत्तर तैयार ही है। मैं जो चाहता हूँ, वह तो गाँवकी ताकत है। आज गाँव शहरोके लिअे जीते है, अुन पर अपना आधार रखते है। यह अनर्थ है। शहर गाँवो पर निर्भर रहें, अपने बलका सिंचन गाँवोसे करें अर्थात् अपने लिअे गाँवोका बलिदान करनेके बजाय खुद गाँवोके लिअे बलिदान व त्याग करें, तो अर्थ सिद्ध होगा और अर्थशास्त्र नैतिक बनेगा। अैसे शुद्ध अर्थकी सिद्धिके लिअे शहरोके बालकोंके अुद्योगका गाँवोके अुद्योगोके साथ सीधा सबध होना चाहिये। अैसा होनेके लिअे मेरे खयालमें अभी तो पीजनसे लेकर कताअी तकके अुद्योग आते है। आज भी कुछ तो अैसा होता ही है। गाँव कपास देते है और मिले अुसमे से कपडा बुनती है। अिसमे शुरूसे आखिर तक अर्थका नाश किया जाता है। कपास जैसे-तैसे बोअी जाती है, जैसे-तैसे चुनी जाती है और जैसे-तैसे साफ की जाती है। अिस कपासको कअी बार नुकसान सहकर भी किसान राक्षसी जिनोमे बेचता है। वहाँ वह बिनौलेसे अलग होकर, दबकर, अधमरी बनकर मिलोमें गाँठोके रूपमें जाती है। वहाँ अुसे पीजा जाता है, काता

जाता है और बुना जाता है। ये सब क्रियाअें अिस तरह होती हैं कि कपासका तत्त्व — सार — तो जल जाता है और अुसे निर्जीव बना दिया जाता है। मेरी भाषासे कोअी द्वेष न करे। कपासमें जीव तो है ही। अिस जीवके प्रति मनुष्य या तो कोमलतासे बरताव करे या राक्षसकी तरह। आजकलके बरतावको मैं राक्षसी व्यवहार मानता हूँ।

कपासकी कुछ क्रियाअें गाँवोंमें और शहरोंमें हो सकती हैं। अैसा होनेसे शहर-गाँवोंका संबंध नैतिक और शुद्ध होगा। दोनोंकी वृद्धि होगी और आजकी अव्यवस्था, भय, शंका, द्वेष सब मिट जायँगे या कम हो जायँगे। गाँवोंका पुनरुद्धार होगा। अिस कल्पनाका अमल करनेमें थोड़ेसे द्रव्यकी ही जरूरत है। वह आसानीसे मिल सकता है। विदेशी बुद्धि या विदेशी यंत्रोंकी जरूरत ही नहीं रहती। देशकी भी अलौकिक बुद्धिकी जरूरत नहीं है। अेक छोर पर भुखमरी और दूसरे छोर पर जो अमीरी चल रही है, वह मिटकर दोनोंका मेल सधेगा, और विग्रह तथा खूनखराबीका जो भय हमको हमेशा डराता रहा है, वह दूर होगा। पर बिल्लीके गलेमें घंटी कौन बाँधे? बम्बअी कॉरपोरेशनका हृदय मेरी कल्पनाकी तरफ किस प्रकारसे मुड़े? अिसका जवाब मैं सेगाँवसे दूँ, अिसके बजाय तो यह पत्र लिखनेवाले बम्बअीके विद्यारसिक नागरिक ही ज्यादा अच्छी तरह दे सकते हैं।

हरिजनबंधु, २६-९-'३७

६

राष्ट्रीय शिक्षकोंसे

१

जो किसी भी प्रकारकी राष्ट्रीय शिक्षण-सस्था चला रहे है, अुन शिक्षकोंको मेरी यह सूचना है कि यदि प्राथमिक शिक्षाके बारेमें आजकल मैं जो कुछ लिख रहा हूँ, वह अुनके गले अुतरा हो, तो वे अुस पर यथाशक्ति अमल करें, अुसका पद्धतिपूर्वक हिसाब रखें और अपने अनुभव मुझे लिख भेजें। जो मेरी सुझाअी हुअी पद्धतिके अनुसार स्कूल चलानेको तैयार हो, जो अभी खाली या बेकार हो और जो दूसरा काम करते हो, पर अुसे छोडकर स्कूल चलानेको तैयार हो, वे मुझे लिखे।

मेरी मान्यता यह है कि प्राथमिक स्कूलको स्वावलम्बी बनानेका तुरत नजरमें आनेवाला अुद्योग कताअी, पिंजाअी वगैरा है। अिसमे कपास चुननेसे लेकर रग-बिरगी तथा बेल-बूटेवाली खादी बनाने तककी सब क्रियाओंका समावेश होता है। अिसमें मजदूरी अेक घटेकी कमसे कम दो पैसे गिननी चाहिये। स्कूल यदि पाँच घटे चले, तो चार घटे तक मजदूरी और अेक घटे तक जो अुद्योग सिखाया जाय अुसका शास्त्र तथा अन्य विषय — जो अुद्योग सिखाते हुअे नही सिखाये जा सकते हो — सिखाये जायें। अुद्योग सिखाते हुअे जो विषय सिखाये जा सकते है, अुनमें कुछ अशोमे या पूर्णत अितिहास, भूगोल और गणितशास्त्र आते है। भाषा-ज्ञान और अुसके साथ ही व्याकरण तथा शुद्ध अुच्चारण तो आ ही जायेगा। क्योंकि शिक्षक अुद्योगको अिस सारे ज्ञानका वाहन या माध्यम समझेगा और अिससे बालकोंकी बोली स्पष्ट करावेगा। अैसा करते हुअे सहज ही व्याकरणका ज्ञान

दे देगा। पहलेसे ही गिननेकी क्रिया तो बालकोको सीखनी ही चाहिये। अत गणितमे ही 'श्री गणेशाय नम' होगा। स्वच्छताका विवेक तो अलग विषय होगा ही नही। बालकोके हरअेक कार्यमें स्वच्छता होनी ही चाहिये। अुनका स्कूलमें प्रवेश ही स्वच्छतासे शुरू होगा। अत अभी तो मेरी कल्पनामें अेक भी विषय अैसा नहीं आता, जो अुद्योग सिखाते-सिखाते बालकोको नहीं सिखाया जा सके।

मेरी कल्पना अैसी है कि जिस तरह मैंने सीखनेके विषयोको अलग-अलग नही गिना, बल्कि यह माना है कि सब अेक दूसरेमें ओत-प्रोत हैं और सब अेकमें से ही अुत्पन्न हुअे है, अुसी तरह शिक्षककी भी अेककी ही कल्पना है। विषयवार अलग-अलग शिक्षक नहीं, पर अेक ही। वर्षोंके अनुसार अलग-अलग हो सकते है। अर्थात् सात कक्षाअें हो तो सात शिक्षक होगें और अेक शिक्षकके पास २५ से अधिक लडके नही होगें। यदि शिक्षा अनिवार्य हो, तो शुरूसे ही बालक व बालिकाओंके लिअे अलग कक्षाअें होनेकी मुझे आवश्यकता लगती है। क्योकि आखिरमे हरअेकको अेक ही धधा नही सिखाया जायगा, जिसलिअे पहलेसे ही अलग वर्ग हो तो अधिक सहूलियत होगी, अैसी मेरी मान्यता है।

जिस पद्धतिमें, घटोमें, शिक्षकोकी सख्यामे या विषयोंके अनु-क्रममें भले ही कुछ फेरफारकी गुजाअिश हो, पर जिस सिद्धातका अवलबन करके हरअेक स्कूलको चलना होगा, अुस सिद्धान्तको अचल समझकर ही मेरी कल्पनाका स्कूल चल सकता है। अभी चाहे जिस सिद्धातका अमल करके किसी प्रकारका परिणाम नही बताया जा सके, पर जो शिक्षक अैसी शिक्षाकी शुरुआत करनेकी जिच्छा रखता हो, अुसे जिस सिद्धातके प्रति श्रद्धा होनी ही चाहिये। और यह श्रद्धा बुद्धि पर आधारित है, जिसलिअे अधी नही, बल्कि ज्ञानमय होनी चाहिये। ये सिद्धात दो है -

(१) शिक्षाका वाहन या माध्यम कोअी भी ग्रामोपयोगी अुद्योग हो,

(२) कुल मिलाकर शिक्षा स्वावलबी होनी चाहिये। अर्थात् पहले अेक-दो वरस भले ही वह स्वावलम्वी न हो, पर सात वर्षका हिसाब निकालने पर जमा व खर्च दोनो वरावर होने चाहिये। मैंने अिस शिक्षाके ७ वर्ष गिने हैं। पर अिसमे कमी-वेशीको स्थान है।

हरिजनबंधु, १९-९-'३७

२

['प्राअिमरी अध्यापकोंके अुम्मीदवारोसे' नामक टिप्पणी]-

मैंने राष्ट्रीय अध्यापकोंको लक्ष्य करके जो लिखा था, अुसके जवाबमें मेरे पास रोज अनेको खत आ रहे हैं। यह सन्तोषकी वात है। अिन पत्रोसे मै देखता हूँ कि अिन्हे लिखनेवालोने मेरी अपीलका ठीक-ठीक अर्थ समझा नही। जिन्हे किसी लाभदायक दस्तकारी द्वारा शिक्षा देनेके विषयमे पूर्ण श्रद्धा न हो और जो अिस कामको केवल प्रेम-भावसे और सिर्फ जीविका लायक पैसा लेकर करनेके लिअे तैयार न हो, अुनकी जरूरत नही है। अुन्हे मेरी यह सलाह है कि वे कातनेकी कलामें और अुसके पहलेकी तमाम क्रियाओमें पूर्ण निष्णात वन जायँ। अिस बीचमे मै अुन सबके नाम नोट करके रख लेता हूँ। मेरी योजनाके अमलमें जो प्रगति होगी, अुसकी अुन पत्रलेखकोको यथासमय खबर दे दी जायगी। सातो प्रान्तीय सरकारे अगर मेरी योजनाको मजूर कर ले और अुसका प्रयोग करनेके लिअे तैयार हो जायँ, तो अुनकी माँग पूरी करनेके लिअे मेरा यह प्रयत्न है।

हरिजनसेवक, १६-१०-'३७

१०

रचनात्मक कार्यकर्ताओंसे

['स्वाश्रयी शिक्षा' नामक लेख]

सरकारीका अर्थ सात प्रांतोंमें कांग्रेस-सरकारी समझना चाहिये। पर कांग्रेस-सरकार बन गयी, अिसलिअे जो मानस कांग्रेसवादी लोगोंका न था, वह यकायक हो जाय, यह माननेका कोअी कारण नहीं है। यद्यपि कांग्रेसका रचनात्मक कार्यक्रम १९२० के महापरिवर्तन कालसे चलता आ रहा है, तो भी अिसके लिअे कांग्रेसवादियोंमें अुचित वातावरण पैदा हो गया है, यह नहीं कहा जा सकता। फिर जो लोग कांग्रेससे बाहर हैं, अुनके बारेमें तो कहना ही क्या? पर यद्यपि ('संहारक' अिस विशेषणका अहिंसक रचनामें अुपयोग करना अयोग्य न हो तो) संहारक या निषेधात्मक कार्यक्रम जितना लोकप्रिय हो गया, अुतना रचनात्मक अथवा अुत्पादक कार्यक्रम नहीं बन सका, तब भी कांग्रेस अुसे १९२० से सहन करती आयी है। कांग्रेसने अुसे कभी रद्द नहीं किया। और कांग्रेसजनोंने अुसे अच्छी संख्यामें अपना लिया है; अिससे अिस क्षेत्रमें जो कुछ हो सका है, वह कांग्रेसवालोंसे ही हो सका है और प्रगति होनेकी आशा भी जहाँ कांग्रेस-सरकार बनी है, वहीं रखी जा सकती है। पर कांग्रेस-सरकार बन गयी अिसलिअे रचनात्मक कार्यमें श्रद्धा रखनेवाले धोखेमें न पड़ें, गफलतमें न रहें। कांग्रेस-सरकार बननेसे अुनका धर्म अधिक जाग्रत, अधिक अुद्यमी और अधिक अभ्यासी होनेका है। और ऐसा होगा तभी कांग्रेस-सरकारके बारेमें जो आशा रखी होगी, वह सफल होगी। कांग्रेस-सरकारका अर्थ है, लोकतंत्रके प्रति जिम्मेदार। अिस सरकारको लोकमत यदि आज हटाना चाहे, तो हटा सकता है। लोकमतकी अिच्छा और

सत्ता पर ही यह सरकार निर्भर है। जिससे कांग्रेसवादी लोग चाहे तो रचनात्मक कार्यक्रमको स्वीकार करा सकते हैं और अुसका अमल भी करा सकते हैं और तभी वह हो सकता है। सरकारके पास स्वतंत्र ताकत यानी तलवारका जोर नहीं है। अुसका कांग्रेसने ही अिच्छापूर्वक त्याग कर दिया है। यह ताकत तो ब्रिटिश सरकारके पास है। जब कांग्रेस-सरकारको ब्रिटिश सत्ताका यानी तलवारकी ताकतका अुपयोग करना पड़े, तब समझना चाहिये कि तिरंगा झंडा नीचे गिर गया। कांग्रेस-सरकार अुस दिनसे खतम हुआी समझना। यदि लोग कांग्रेसकी अर्थात् कांग्रेस-सरकारकी बात नहीं मानेंगे या अुनमें अहिंसाने प्रवेश नहीं किया होगा, तो आज तेजस्वी लगनेवाली सरकार कल निस्तेज हो जायगी।

अतः रचनात्मक कार्यक्रममें श्रद्धा रखनेवाले कांग्रेसवादी सावधान हो जायँ। मेरा पेश किया हुआ शिक्षाक्रम भी रचनात्मक कार्यका ही अेक बड़ा अंग है। जो रूप अुसे मैं आज दे रहा हूँ, अुसे कांग्रेसने अपना लिया है, यह कहनेका मेरा आशय नहीं है। पर मैं जो लिख रहा हूँ, वह १९२० में राष्ट्रीय शालाओंके लिअे जो कुछ मैंने कहा है या लिखा है, अुसकी जड़में छिपा हुआ ही था। वह समय आने पर मेरे सामने यकायक प्रकट हुआ है, अैसा मेरा दृढ़ विश्वास है।

अब यदि प्राथमिक शिक्षा अुद्योग द्वारा ही देनी है, तो यह काम खास कर चरखे और दूसरे ग्रामोद्योगोंके बारेमें विश्वास रखनेवालोंसे ही अभी तो हो सकता है। क्योंकि ग्रामोद्योगोंमें मुख्य वस्तु चरखा है। अुसके अुद्योगमें चरखा-संघने काफी जानकारी प्राप्त कर ली है और दूसरे अुद्योगोंके बारेमें ग्रामोद्योग संघ जानकारी प्राप्त कर रहा है। अतः जो तात्कालिक रचना हो सकती है, वह चरखे आदि ग्रामोद्योगों द्वारा ही हो सकती है, अैसा मुझे लगता है। पर जिनको चरखेमें श्रद्धा है, वे सब शिक्षक नहीं होते। हरअेक बढ़ओी बढ़ओीगिरीका

शास्त्री नही होता। जो अुद्योगका शास्त्र नही जानता, वह अुद्योग द्वारा सामान्य शिक्षा नही दे सकता। अिससे जिनको शिक्षा-शास्त्रमें दिलचस्पी है और चरखे अित्यादिमें दिलचस्पी है, अैसे मनुष्य ही प्राथमिक शिक्षामें मेरा सुझाया हुआ क्रम दाखिल कर सकते हैं। मेरे पास आया हुआ श्री दिलखुश दीवानजीका पत्र अैसे लोगोंको मदद करेगा, यह मानकर अुसे नीचे पेश करता हूँ

"स्वाश्रय और अुद्योग द्वारा शिक्षाके बारेमें आप 'हरिजन' और 'हरिजनबन्धु' में जो सुन्दर विचार और अनुभव लिख रहे हैं, अुनसे मुझे अपने यहाँकि अिस दिशाके कार्यमें अितना अधिक प्रोत्साहन और अुत्तेजन मिलता है कि मैं यह पत्र लिखनेको प्रेरित हुआ हूँ और आपकी सारी योजना कितनी योग्य है, अुसके बारेमें मेरा अुत्साह बतानेके लिअे ललचाया हूँ। दो बरससे मैं यहाँ छोटीसी अुद्योगशाला चला रहा हूँ। अुसके अनुभव आपके विचारोंसे खूब मिलते जा रहे हैं, जिससे मुझे बहुत हर्ष होता है। अिसलिअे आप जो क्रांतिकारी विचार बता रहे हैं, अुनका मैं पूरी तरहसे स्वागत करता हूँ और अुसमें मेरी सौ फी सदी सहमति दे सकता हूँ। यह मेरी अंध-श्रद्धाका परिणाम नही है, बल्कि अनुभवजन्य श्रद्धाका प्रतीक है, अैसा आप समझ सकेंगे। आप सारे देशको अुपयोगी हो, अैसी शास्त्रीय और सम्पूर्ण योजनाका विचार कर रहे हैं। मैं यहाँ जो काम कर रहा हूँ, अुसमें पूर्णता और शास्त्रीयताकी काफी गुंजािअश है और मैं अुस दिशामें प्रयत्न कर रहा हूँ। अिसमें अधिक पूर्ण बननेमें अत्यन्त अुत्साह और आनन्द मिलता है। पर दो वर्षमें मुझे जो कुछ अनुभव हो रहे हैं, अुनके बारेमें अुत्पन्न होनेवाले प्रश्नों पर जो कुछ चिन्तन, विचार वगैरा चल रहे हैं, अुन परसे मुझे आपके स्वाश्रयी और अुद्योगी शिक्षाके विचार बहुत ही योग्य और अनुभवसिद्ध हो सकने जैसे

लगते हैं। मैं आपके विचार और मुद्दे समझ सका हूँ। अिसी तरह मेरा अनुभव भी अैसा होता जा रहा है कि—

"१ अुद्योगको सब प्रकारकी शिक्षाका माध्यम रखनेसे सचमुच ही विद्यार्थीको सर्वोत्तम शिक्षा मिल जाती है और पुरुषार्थ और चरित्रके संस्कार तो अुसमें अैसी अुद्योगमय शिक्षाकी बहुत कीमती बख्शिश ही हो जाते हैं। अतः हिन्दुस्तान जैसे गरीब देशकी शिक्षाको स्वाश्रयी बनानेकी अिसमें जो अपार शक्ति भरी हुअी है, अुसके सिवाय शिक्षाके शुद्ध शास्त्रकी दृष्टिसे भी अुद्योगको शिक्षाका माध्यम बनानेसे विद्यार्थियोंका सर्वांगीण विकास बहुत ही सरल हो जाता है।

"२ अुद्योगको शिक्षाका माध्यम बनानेसे प्राथमिक शिक्षा जरूर आसानीसे स्वाश्रयी बन सकती है। हिन्दुस्तान जैसे गरीब देशकी शिक्षाका प्रश्न शिक्षाको स्वावलम्बी बनानेसे ही हल किया जा सकता है। अिसके अलावा यही पद्धति हमारी आर्य संस्कृतिके अनुरूप हो सकती है। मुझे तो चरखेका अुद्योग ही खूब पसन्द आ गया है। यही सर्व-व्यापक हो सकता है अैसा लगता है। अिसलिअे मेरे दो वर्षके अनुभवमें चरखा अुद्योगकी प्राप्तिके ही आंकड़े मेरे पास पड़े हैं। आपने विचार किया है, अुतना व्यवस्थित रूप मेरे शिक्षा-शास्त्रको अभी नहीं मिला है। अतः अिसमें मिले हुअे अनुभवके निष्कर्षोंके लिअे काफी गुंजाअिश है। ये आंकड़े और अुनके बारेमें की गयी टिप्पणियां आप देखना चाहें तो भेजूंगा।

हम साध सकेंगे। 'पण्डिताओी', 'विद्वत्ता', 'कौशल', आदिके शिक्षाके आजके अत्यन्त भ्रामक विचारोंको छोड देंगे, तभी अुद्योग-शिक्षामें रहे हुअे सर्वगामी विकासकी पहचान हम कर सकेंगे।

"४ स्कूलके कुल समयका पौना भाग अुद्योगके लिअे देनेकी पहली क्रांति करके शिक्षा-पद्धतिमें दूसरी क्रांति यह करनी होगी कि वाचन, लेखन, समयपत्रक, परीक्षा, विषयवार शिक्षा आदि आजके साधन दूर करके अुद्योग-शिक्षाके लिअे नीचेके साधन काममें लिये जायें, जो बहुत ही अुपयोगी और सरल सिद्ध होते जा रहे हैं:

"(अ) श्रुतशिक्षा पुस्तकों पर आधार रखनेके बजाय शिक्षक ही विद्यार्थियोंके आगे जीवित पुस्तक बनकर बैठ जाय, तो घूमते-फिरते बातोंमें और व्यवस्थित रीतिसे विद्यार्थी थोडे समयमें अितना अधिक सीख लेते हैं कि शिक्षकके अुत्साह और विद्यार्थियोंकी जिज्ञासाके परिणामस्वरूप अिस जीवित पुस्तकमें नित्य नये प्रकरण जुडते ही जाते हैं। और अैसी श्रुतशिक्षामें पुस्तकोंका खर्च लगभग मिट ही जाता है।

"(आ) शिक्षकका सहवास अुद्योग-शिक्षाका यह बिलकुल अनिवार्य साधन है। शिक्षकके हृदयमें विद्यार्थियोंके लिअे प्रेम और अुत्साह भरा हुआ होगा, तो यह सहवास बहुत ही सरल, रसिक और परस्पर विकाससाधक हो जायगा। जैसा शिक्षक शिक्षाके साथ-साथ निरन्तर विद्यार्थी भी बना रहता है।

"(अि) राष्ट्रीय और सार्वजनिक प्रवृत्तियोंमें सतत सहयोग देनेका क्रम अुद्योगों द्वारा तो विद्यार्थीवर्ग बचपनसे ही प्रजा, समाज या सरकारको मदद करने लग ही जाता है। पर जैसा कि आप लिखते हैं, शराबबन्दी, हरिजन-सेवा और

ग्राम-सफाअी जैसी प्रवृत्तियोंमे सतत सहयोग देनेका क्रम अपने स्कूलमें दाखिल करके कुशल और अुत्साही शिक्षक जीवनकी शुरुआतमे ही विद्यार्थियोको सेवा और समाज-परिचयकी अुत्तम प्रकारकी व्यावहारिक और जीवित शिक्षा दे देता है। 'हमारी अुद्योग-शिक्षाका यह नया साधन सारी शिक्षाको अत्यन्त व्यावहारिक, जीवित और फलप्रद बना देता है। जैसे-जैसे अिस बारेमे मैं ज्यादा-ज्यादा विचार करता हूँ, वैसे-वैसे मुझे अधिकाधिक स्पष्ट होता जा रहा है कि स्वराज-साधना और स्वराज-सचालनकी खादी, ग्रामोद्योग, मद्यनिषेध, हरिजन-सेवा और ग्राम-सफाअी जैसी हमारी प्राणदायक प्रवृत्तियोंके लिअे अुद्योग-प्रधान प्राथमिक स्कूल खूब ही मददगार होनेवाले है। 'विद्यार्थी ही प्रजाका सच्चा निर्माण कर सकते है,' अिस सूत्रका अिसमे कितना सुन्दर प्रयोग होनेवाला है!

"(अी) माता-पिता — बडोंके साथ अधिक निकट, अधिक जीवित सम्बन्ध हमारी नअी प्राथमिक शिक्षाका यह साधन बहुत शक्तिशाली होनेवाला है। आजकी शिक्षा तो विद्यार्थियो और अुनके माता-पिताके बीचका अन्तर बढाती रहती है। रजिस्टर पर दस्तखत करने और फीस देनेके सिवाय माता-पिताओंको बच्चोकी स्कूली शिक्षामे कोअी दिलचस्पी नहीं होती। स्कूलमे मिलनेवाली शिक्षा पुस्तकीय होनेसे गृहतत्रके व्यवहारसे दूर ही भागती है — कौटुम्बिक प्रेम टूटता जाता है। वर्ण-व्यवस्थामे रही हुअी परपरागत खेती व अुद्योगकी शृखलाकी कडियाँ पुस्तकीय शिक्षामें खोने और मुलझ जानेसे शुद्ध वर्ण-व्यवस्थाका लोप हो रहा है। परिणामस्वरूप देशकी खेती और ग्रामोद्योग सूखते जा रहे हैं। हमारी शिक्षा अुद्योगमय होगी, अत गाँवोंके अुद्योगोंके साथ अर्थात् माता-पिताके धन्धेके साथ अुसका सीधा सम्बन्ध होगा। अत माता-पिताको अुसमे खूब दिलचस्पी होगी।

अुनको विश्वास हो जायगा कि लडके-लडकी पढ़कर अुद्योग-विहीन नहीं होंगे, बल्कि गृह-कार्यमें, घरके धन्धोंमें मदद करेंगे। अिस तरह प्राथमिक शिक्षाको अनिवार्य बनानेका प्रश्न अधिक सरल बनेगा। अनिवार्य शिक्षाके पीछेकी ताकत सजा नहीं होगी, माता-पिताका अुत्साहयुक्त सहयोग ही अुसकी सच्ची शक्ति होगी।

"(अु) प्राथमिक शिक्षाके खयालको आप व्यापक बनाना चाहते हैं, यह बहुत योग्य है। गुजरातीकी चार कक्षा तक पढे हुअे विद्यार्थी मेरे पास आये हैं। अुनके अनुभव मैंने प्राप्त हो रहे हैं कि चार कक्षाओं तक पढ लेनेवाले गांवोंके विद्यार्थियोंके पूरे प्रश्न पर नये और क्रांतिकारी तरीकेसे विचार किया जाना चाहिये। अनुभव तो यह होता है कि चार कक्षाओंके बाद अंग्रेजीके मोहसे गांवोंके विद्यार्थी शहरी स्कूलोंकी तरफ आकर्षित होते हैं। वह शिक्षा खर्चीली होनेसे बहुतोंके लिअे अुसके दरवाजे बन्द रहते हैं। अुनकी शिक्षा बीचमें ही बन्द हो जाती है। जो बड़ी मुश्किलसे जाते हैं, वे विलासी, परोपजीवी शिक्षा लेकर अपनेको, माता-पिताको और गांवके हितोंको धोखा देते हैं। अिस वर्गको यदि गांवमें अुद्योगशाला रखकर पढायें, तो अिसमें माता-पिताका, विद्यार्थीका और गांवका अपार हित होता है। विद्यार्थियोंको विनीत (मैट्रिक) तकका ज्ञान बहुत थोडे समयमें चार घण्टे अुद्योग और दो घण्टे अध्ययनवाले स्कूलमें बहुत आसानीसे दिया जा सकता है, अैसा मेरा अनुभव दृढ होता ही जा रहा है।"

हरिजनबन्धु, १७–१०–'३७

दूसरा भाग : वर्धा-शिक्षा-परिषद्

११

राष्ट्रीय शिक्षाशास्त्रियोंसे

['राष्ट्रीय शिक्षा-परिषद्' नामक लेख]

वर्धाका 'मारवाडी विद्यालय', जिसका नाम हाल ही में बदल कर 'नवभारत विद्यालय' कर दिया गया है, अपनी रजत-जयती मनाने जा रहा है। जयतीके साथ-साथ 'हरिजन' में जिस प्रकारकी शिक्षा-योजनाके प्रतिपादनका मै यत्न कर रहा हूँ, अुस पर चर्चा करनेके लिअे देशके राष्ट्रीय मनोवृत्तिवाले शिक्षाशास्त्रियोकी अेक परिषद् बुलानेका विचार भी अिस अुत्सवके आयोजकोंको सूझा। परिषद् निमंत्रित करना ठीक होगा या नही; अिस सम्बन्धमें विद्यालयके मत्री श्री श्रीमन्नारायण अग्रवालने मेरी सलाह मॉगी, और यदि मुझे यह विचार पसन्द हो तो अुसका अध्यक्ष-पद ग्रहण करनेके लिअे भी प्रार्थना की। मुझे दोनो ही चीजे अच्छी लगी। जिसलिअे यह परिषद् वर्धामे आगामी २२ और २३ अक्तूबरको हो रही है। अिसमे केवल वही लोग होगे, जिन्हे अिसके लिअे निमत्रित किया जायेगा। अगर कोअी अैसे शिक्षाशास्त्री हो, जो अिस परिषद्में आना चाहते है, किन्तु जिन्हें निमत्रण नही मिला है, तो वे मत्रीको पत्र लिखें और अुसमे अपना नाम तथा पता लिखनेके साथ-साथ अैसी विशेष जानकारी भी लिखे, जिससे मत्रीको यह निर्णय करनेमे सुविधा हो कि अुन्हे निमत्रण भेजा जा सकता है या नही। यहाँ प्रबन्ध तो केवल अुन थोडेसे लोगोके लिअे किया गया है, जो अिन विषयमे गहरी दिलचस्पी रखते है और मन्त्रणामें प्रत्यक्ष भाग ले सकते है।

देखने-दिखानेकी दृष्टिसे तो जिस परिषद्‌में कुछ भी नहीं होगा प्रेक्षकोंके लिअे कोओ स्थान नहीं होगा। यह तो केवल अेक काम काजी बैठक होगी। अखबारवालोंके लिअे कुछ थोड़ेसे टिकट जारी किये जायेंगे। अखबारवालोंको मेरी सलाह है कि अिनकी कार्यवाहीके समाचार भेजनेमें सहयोग देनेके खयालसे वे अपने अेक-दो प्रतिनिधि चुन लें।

अिस कार्यको मैं अत्यन्त नम्रता और सम्पूर्ण श्रद्धाकी भावनासे करना चाहता हूँ। दिलको खुला रखकर कुछ सीखनेके लिअे, जहाँ-जहाँ जरूरत होगी, अपने विचारोंमें संशोधन और सुधार करनेके लिअे भी मैं तैयार रहूँगा।

परिषद्‌में जो प्रस्ताव मैं विचारार्थ रखना चाहता हूँ, वे फिलहाल मुझे अिस प्रकार दिखाओ देते हैं:

१. शिक्षाकी वर्तमान पद्धति किसी भी तरह देशकी आवश्यकताओंकी पूर्ति नहीं कर सकती। अुच्च शिक्षाकी तमाम शाखाओंमें अंग्रेजी भाषाको माध्यम बना देनेके कारण अुसने अुच्च शिक्षा पाये हुअे मुट्ठीभर लोगों तथा अपढ़ जनसमुदायके बीच अेक स्थायी दीवार-सी खड़ी कर दी है। अिसकी वजहसे जन-साधारण तक छन-छन कर ज्ञानके जानेमें बड़ी रुकावट पड़ गओ है। अंग्रेजीको अिस तरह अत्यधिक महत्त्व देनेके कारण शिक्षित लोगों पर अितना अधिक भार पड़ गया है कि प्रत्यक्ष जीवनके लिअे अुनकी मानसिक शक्तियाँ पंगु हो गओ हैं और वे अपने ही देशमें विदेशियोंकी भाँति बेगाने बन गये हैं। अुद्योगके शिक्षणके अभावने शिक्षितोंको अुत्पादक कामके सर्वथा अयोग्य बना दिया है और शारीरिक दृष्टिसे भी अुनका बड़ा नुकसान किया है। प्राथमिक शिक्षा पर आज जो खर्च हो रहा है, वह बिलकुल निरर्थक है। क्योंकि जो कुछ भी सिखाया जाता है, अुसे पढ़नेवाले बहुत जल्दी भूल जाते हैं और शहरों तथा गाँवोंकी दृष्टिसे अुसका दो कौड़ीका भी मूल्य नहीं है। वर्तमान शिक्षा-पद्धतिसे जो कुछ भी

लाभ होता है, अुससे देशका प्रधान करदाता वर्ग तो वंचित ही रहता है। अुसके बच्चोंके पल्ले तकरीबन कुछ नही आता।

२ प्राथमिक शिक्षाका पाठ्यक्रम कम-से-कम सात सालका हो। अिसमे बच्चोको अितना सामान्य ज्ञान मिल जाना चाहिये, जो अुन्हे साधारणतया मैट्रिक तककी शिक्षामे मिल जाता है। अिसमें अंग्रेजी नही रहेगी। अुसकी जगह कोअी अेक अच्छा-सा अुद्योग सिखाया जायगा।

३. अिसलिअे कि लडकों और लडकियोंका सर्वतोमुखी विकास हो, सारी शिक्षा जहां तक हो सके अेक अैसे अुद्योग द्वारा दी जानी चाहिये, जिसमें कुछ अुपार्जन भी हो सके। अिसे यो भी कह सकते हैं कि अिस अुद्योग द्वारा दो हेतु सिद्ध होने चाहिये — अेक तो विद्यार्थी अुस अुद्योगकी अुपज और अपने परिश्रमसे अपनी पढाअीका खर्च अदा कर सके, और साथ ही स्कूलमें सीखे हुअे अिस अुद्योग द्वारा अुस लडके या लडकीमें अुन सभी गुणो और शक्तियोका पूर्ण विकास हो जाय, जो अेक पुरुष या स्त्रीके लिअे आवश्यक है।

पाठशालाकी जमीन, अिमारतें और दूसरे जरूरी सामानका खर्च विद्यार्थीके परिश्रमसे निकालनेकी कल्पना नही की गअी है।

कपास, रेशम और अूनकी विनाअीसे लेकर सफाअी, (कपासकी) लुढाअी, पिंजाअी, कताअी, रंगाअी, माँड लगाना, ताना लगाना, दोसूती (दुबटा) करना, डिजाअिन (नमूने) बनाना तथा बुनाअी आदि तमाम क्रियाये और कसीदा काढना, सिलाअी, कागज बनाना, कागज काटना, जिल्दसाजी, अलमारी, फरनीचर वगैरा तैयार करना, खिलौने बनाना, गुड बनाना, अित्यादि अैसे निश्चित अुद्योग है, जिन्हे आसानीसे सीखा जा सकता है और जिनके चलानेके लिअे बहुत-बडी पूंजीकी भी जरूरत नही होती।

अिस प्रकारकी प्राथमिक शिक्षासे लडके और लडकियाँ अिस लायक हो जायें कि वे अपनी रोजी कमा सकें। अिसके लिअे यह जरूरी है कि जिन बच्चोंकी शिक्षा अुन्हें दी गअी हो, अुनने राज्य

अुन्हें काम दे। अथवा राज्य द्वारा मुकर्रर की गअी कीमतों पर सरकार अुनकी बनाअी हुअी चीजोंको खरीद लिया करे।

४ अुच्च शिक्षाको खानगी प्रयत्नों तथा राष्ट्रकी आवश्यकता पर छोड़ दिया जाय। अिसमें कअी प्रकारके अुद्योग और अुनसे सम्बन्ध रखनेवाली कलाअें, साहित्य, संगीत, चित्रकला, शास्त्रादि शामिल समझे जायँ।

सरकारी विश्वविद्यालय केवल परीक्षा लेनेवाली संस्थाअें रहें और वे अपना खर्च परीक्षा-शुल्कसे ही निकाल लिया करें।

विश्वविद्यालय शिक्षाके समस्त क्षेत्रका ध्यान रखें और अुसके विविध विभागोंके लिअे पाठ्यक्रम तैयार करें और अुसे स्वीकृति दें। किसी भी विषयकी शिक्षा देनेवाला अेक भी स्कूल तब तक नहीं खुलेगा, जब तक कि वह अिसके लिअे अपने क्षेत्रसे सम्बन्ध रखनेवाले विश्वविद्यालयसे मंजूरी हासिल नहीं कर लेगा। विश्वविद्यालय खोलनेकी अिजाजत (चार्टर) सुयोग्य और प्रामाणिक किसी भी अैसी संस्थाको अुदारतापूर्वक दी जा सकती है, जिसके सदस्योंकी योग्यता और प्रामाणिकताके विषयमें कोअी सन्देह न हो। हाँ, यह सबको बता दिया जाय कि राज्य पर अुसका जरा भी खर्च नहीं पड़ना चाहिये, सिवा अिसके कि वह केवल अेक केन्द्रीय शिक्षा-विभागका खर्च अुठायेगा। राज्यकी विशेष आवश्यकताओंकी पूर्तिके लिअे किसी खास प्रकारकी शिक्षा-संस्था या विद्यालय खोलनेकी जरूरत अुसे पड़ जाय, तो यह योजना राज्यको अिस जिम्मेदारीसे मुक्त नहीं कर रही है।

अगर यह सारी योजना स्वीकृत हो जाय, तो मेरा यह दावा है कि हमारी अेक सबसे बड़ी समस्या — राज्यके युवकोंको, अपने भावी निर्माताओंको तैयार करनेकी — हल हो जायगी।

हरिजनसेवक, २-१०-'३७

१२

वर्तमान शिक्षा-पद्धतिवालोंसे

['विचार नहीं, प्रत्यक्ष कार्य' नामक लेख]

डॉ० जी० अेस० अरडेलने मुझे पहलेसे अपने अेक लेखकी अप्रकाशित प्रति भेज दी है, जो अुन्होंने 'ओरियट' नामक सचित्र साप्ताहिकमे छपनेके लिअे भेजा है। और साथमें लिखा है

> "आपने यह अिच्छा जाहिर की है कि अिस देशमे शिक्षा, जो आज तक कृत्रिम रही है, अब वास्तविक हो जाय। अेक अैसे आदमीकी हैसियतसे कि जिसने तीससे भी अधिक साल तक शिक्षाके क्षेत्रमें प्रत्यक्ष कार्य किया है, मै आपको अपना लेख भेजता हूँ, जो 'ओरियट' नामक सचित्र साप्ताहिकमे छपने जा रहा है। सभव है अिसमे — कुछ अशोमे — आपके ही विचारोका समर्थन हो। मै भी जरूर यह अनुभव करता हूँ कि हमें शिक्षाकी अेक राष्ट्रीय योजना बनानी चाहिये, जिसे प्रत्येक मत्री अपने प्रातमे सफल करनेका अपनी शक्ति भर प्रयत्न करे। अिस दिशामे स्वतत्र रूपसे काफी प्रयत्न किये गये है। पर मुझे अैसा लगता है कि अब तो शिक्षाके अुन महान सिद्धान्तो पर जल्दीसे जल्दी अमल शुरू हो जाना चाहिये, जिससे सरकार और जनता दोनो मिलकर समान दिलचस्पीके साथ अिस यत्नमें जुट पडे।"

अिस लेखसे मै सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण और कामके अवतरण नीचे दे रहा हूँ। अिस यत्नको हम किस प्रकार शुरू करे, यह बताकर डॉ० अरडेल लिखते है

"राष्ट्रीय शिक्षाके मूलभूत सिद्धान्त क्या है, यह प्रतिपादन करनेके लिअे यहाँ मेरे पास स्थान नही है। पर हाँ, अितना तो कह देना आवश्यक है कि जहाँ तक लडके और लडकियोकी स्कूली शिक्षासे सम्बन्ध है, मै आशा करता हूँ कि हम 'स्कूल' और 'कॉलेज' की शिक्षाका बेवकूफीभरा भेद मिटा देंगे। शुरूसे आखिर तक अेक ही अुद्देश्य रहेगा — प्रत्यक्ष कार्य, क्योंकि विचारोको चाहे कितनी ही अुत्तेजना दीजिये, जब तक हम कार्य-प्रवृत्त नही होते, वे निरर्थक ही है। यही बात हृदयके धर्मोके विषयमे भी कही जा सकती है। पर अधिकाश आधुनिक शिक्षा-प्रणालियोमे अिनकी बडी अुपेक्षा की जा रही है, जो अेक भयकर बात है। आज हिन्दुस्तानके युवकोको कार्यकर्ता बननेकी जरूरत है — अैसे कार्यकर्ता, जिनके चरित्रका शिक्षा द्वारा अिस प्रकार निर्माण हुआ हो कि वह स्वभावत. कार्यमें, वास्तविक योग्यतामें, सेवामें परिणत हो जाय। हिन्दुस्तानको अैसे जवान नागरिकोकी जरूरत है, जो परिस्थिति और परम्परानुसार जिस किसी क्षेत्रमे जायें वहाँ कुछ अच्छा करके दिखा सके। पाठ्यक्रमके प्रत्येक विषयका अुद्देश्य यही है कि बच्चोका जीवन ठीक वैसा ही हो, जैसा कि अुसे होना चाहिये। प्रत्येक विषय जीवनके धर्मको, विधि और अुद्देश्यको खोलकर रख दे। कठोर वास्तविकताओका मुकाबला करते समय शिक्षक अिन बातोको कभी न भूले। वे यह स्मरण रखे कि हमारा, बुद्धिक्षेत्र वास्तविकताओसे नही, रूढिगत विश्वासोसे भरा हुआ है। सर आर्थर अेडिंगटनने बिल्कुल ठीक कहा था कि विज्ञानने यह अेक जबरदस्त सेवा की है कि अुसने हमें सन्देहमे सत्यताकी ओर प्रयत्न करना सिखाया है। अिसलिअे बच्चोको पढाया भी अिस तरह जाय कि वे सच-सच बातें अच्छी तरह जान ले और दूसरी तमाम बातोंके अलावा वे अुनके चरित्र-निर्माणमें

सहायक हो, क्योंकि राष्ट्र और व्यक्ति दोनोके लिअे यही तो सबसे अधिक सुरक्षित आधारभूत वस्तु है।

"जब अेक बार चरित्र निर्माण हुआ कि कुछ करनेकी अिच्छा प्रबल होगी ही, दोनो ही क्षेत्रोमे — स्वावलम्बनमें और स्वार्थ-त्यागमे। जमीन अर्थात् भूमाताकी ओर हमारी अधिकसे अधिक बढनेकी अिच्छा होगी। खेती द्वारा हम अुसकी पूजा करना चाहेगे। हमारी जरूरते कम होगी और अिच्छाये धर्मानुकूल। मै तो मानता हूँ कि भूमाताका कोअी भी बालक अैसा न हो, जो किसी न किसी रूपमे अपनी आजीविका खुद अुसीसे प्राप्त न कर सकता हो। और हर प्रकारकी शिक्षामे, शहरकी शिक्षा-सस्थाओमे भी, मै चाहूँगा कि किसी न किसी अशमे अुससे हमारा सम्पर्क बना रहे।

"आज अुन सब रूढियोसे हमे अेकबारगी अपना नाता तोड देना चाहिये, जिन्होने शिक्षाको अितना अधिक निरर्थक बना दिया है। राष्ट्रीय मत्रि-मडलोकी सरक्षकतामे हमें सच्ची शिक्षाकी पद्धति शुरू कर देनी चाहिये। सच्ची शिक्षाके मानी यह नही है कि हम बच्चोके दिमागमें कोरी जानकारी ठूँस दे। हम तो शिक्षा-सम्बन्धी अुन रूढियो और ढकोसलोके अन्दर बुरी तरह कैद कर दिये गये है, जो अब पुराने और बेकार साबित हो चुके है। अिसलिअे मै गाधीजी द्वारा प्रतिपादित स्वावलम्बी शिक्षा-पद्धतिका हृदयसे स्वागत करता हूँ। हाँ, अभी मुझे अिसका पूरा निश्चय तो नही हुआ है कि वे कितनी दूर तक हमे ले जाना चाहते है और हम दरअसल जा सकेगे या नही। पर मै अुनकी अिस तजवीजसे पूरी तरह सहमत हूँ कि सात वर्षकी पढाअीके बाद हर विद्यार्थीको अेक स्वाश्रयी नागरिक बनकर ससारमे प्रवेश करना चाहिये। मुझे खुद यही लगता है कि प्रत्येक मनुष्यको कुछ हद तक शिक्षा द्वारा अपनी

सृजन-शक्तिका भान हो जाना चाहिये। क्योंकि वह भी तो अुस परमात्माकी अेक विकासोन्मुख कला है, और अिसलिअे अुसमें परम अीश्वरीय गुणका, सृजन-शक्तिका होना जरूरी है। मनुष्यके अिस श्रेष्ठ धर्मको यदि शिक्षा जाग्रत नहीं कर सकती तो वह आखिर है किस मरजकी? तब तो वह शिक्षा नहीं, किसी न किसी प्रकारसे मस्तिष्कमें जानकारी ठूँस देना है।

'मस्तिष्ककी भाँति हमारे हाथोंमें भी तो बल कौशलका निवास है। सब्र करनेसे निष्क्रिय बुद्धिको श्रेष्ठ समझकर हम अुसकी पूजा करते आये हैं। अुसने हम पर बड़ा जुल्म किया है। वह हमारी शासिका और स्वामिनी रही है हमारी नवीन समाज-रचनामें बुद्धि हमारे अनेक सेवकोंमें से अेक होगी। और जो जो बातें हमारे जीवनको सरल और सादा बनानेवाली हों, प्राकृतिक सुन्दरताओंकी ओर हमें खींचकर ले जायें, अपने हाथसे काम करके अुनके सहारे अपनी आजीविका कमानेमें सहायक हों अैसे हर तरहके कामको — चाहे वह कलाकारका हो, शिल्पकारका हो या किसानका हो — हमें गौरवान्वित करना सीखना चाहिये।

मैं जानता हूँ कि अगर मुझे अिस तरहकी शिक्षा मिली होती, तो मेरा जीवन अधिक सुखी और सम्पन्न होता।"

अब तक मैं जो बात साधारण आदमीकी हैसियतसे साधारण पाठकोंके लिअे कहता आया हूँ, वही बात डॉ॰ अरुंडेल अेक शिक्षा-शास्त्रीकी हैसियतसे शिक्षा-शास्त्रियोंके लिअे तथा अुन लोगोंके लिअे कहते हैं कि जिनके सुपुर्द देशके बच्चोंके निर्माणका काम है। स्वावलम्बी शिक्षाकी कल्पनासे अुत्पन्न जिन भावनाओंसे वे डर रहे हैं, अुससे मुझे आश्चर्य नहीं हुआ। पर मेरे लिअे तो यही सबसे महत्त्वपूर्ण समस्या है। मुझे अफसोस तो अिस बातका हो रहा है कि परिस्थितिवश वह चीज मुझे आज अितनी देरीसे आस-पास नजर

आअी है, जिसे कि मैं गत चालीस वर्षसे कांचके बीचसे अस्पष्ट-सा देख रहा था।

सन् १९२० मे मैंने वर्तमान शिक्षा-पद्धतिकी काफी कडे शब्दोमें निन्दा की थी। और आज चाहे कितनी ही थोडे अंशोमे क्यो न हो, देशके सात प्रातोंने अुन मन्त्रियो द्वारा अुस पर असर डालनेका मुझे मौका मिला है, जिन्होंने मेरे साथ सार्वजनिक कार्य किया है और देशकी स्वाधीनताके अुस महान युद्धमे मेरे साथ तरह-तरहकी मुसीबतें अुठाअी है। आज मुझे भीतरसे अेक अैसी दुर्दमनीय प्रेरणा हो रही है कि मैं अपने अिस आरोपको सिद्ध करके दिखा दूं कि वर्तमान शिक्षा-पद्धति नीचेसे लेकर अूपर तक मूलत बिलकुल गलत है। और 'हरिजन' मे जिस बातको प्रगट करनेका अब तक प्रयास करता रहा हूँ और फिर भी ठीक-ठीक प्रगट नही कर सका, वही अब मेरे सामने सूर्यवत् स्पष्ट हो गअी है और प्रतिदिन अुसकी सचाअी मुझ पर अधिकाधिक स्पष्ट होती जा रही है। अिसलिअे मैं देशके शिक्षाशास्त्रियोसे यह कहनेका साहस कर रहा हूँ कि जिनका अिसमे किसी प्रकारका स्वार्थ नही है और जिन्होंने अपने हृदयको नये विचारोको पानेके लिअे बिलकुल खुला रखा है, वे मेरे बताये जिन दो प्रश्नोका अध्ययन करे और अिसमें वर्तमान शिक्षाके कारण मजबूत बनी हुअी कल्पनाको अपनी विचारशक्तिका बाधक न होने दें। मै जो कुछ लिख रहा हूँ और कह रहा हूँ, अुस पर विचार करते समय वे यह न सोचे कि मैं शास्त्रीय और कट्टर दृष्टिसे शिक्षाके विषयमें बिलकुल अनभिज्ञ हूँ। कहा जाता है कि ज्ञान अकसर बच्चोके मुंहसे प्रकट होता है। 'बालादपि सुभाषितम् ग्राह्यम्' अिसमे कविकी अत्युक्ति हो सकती है, पर अिसमें कोअी शक नही कि वह कभी-कभी दरअसल बच्चोके मुंहसे प्रगट होता है। विशेषज्ञ अुसे सुधारकर बादमें वैज्ञानिक रूप दे देते है। अिसलिअे मैं चाहता हूँ कि मेरे प्रश्नो पर निरपेक्ष और केवल सारासारकी दृष्टिसे विचार

हो। यों तो पहले भी मैं अिन सवालोंको पेश कर चुका हूँ, पर यह लेख लिखते समय अिन शब्दोंमें वे मुझे सूझ रहे हैं, मैं फिर अुन्हें पाठकोंके सामने पेश कर देता हूँ

(१) सात सालमें प्राथमिक शिक्षाके अुन सब विषयोंकी पढ़ाअी हो, जो आज मैट्रिक तक होती है। पर अुनमें से अंग्रेजीको हटाकर अुसके स्थान पर किसी अुद्योगकी शिक्षा बच्चोंको अिस तरह दी जाय कि जिससे ज्ञानकी तमाम शाखाओंमें अुनका आवश्यक मानसिक विकास हो जाय। आज प्राथमिक, माध्यमिक और हाअीस्कूलकी शिक्षाके नाम पर जो पढ़ाअी होती है, अुसकी जगह पर अिस पढ़ाअीको ले ले।

(२) यह पढ़ाअी स्वावलम्बी हो सकती है और यह अैसी होनी ही चाहिये। वास्तवमें, स्वावलम्बन ही अुसकी सचाअीकी सच्ची कसौटी है।

हरिजनसेवक, २-१०-'३७

१३

अुद्योग द्वारा शिक्षा

[अिधर कअी बातचीतोंके सिलसिलेमें गांधीजीने विस्तारपूर्वक समझाया कि शिक्षाकी यह नअी योजना अुनके दिमागमें किस तरह आयी और अुद्योग तथा शिक्षाका मेल, जो कि अुनकी दृष्टिमें है, किस प्रकार हो सकता है। वह अुनके ही शब्दोंमें यहाँ देता हूँ। —महादेव देसाअी]

अेक नअी पद्धतिकी आवश्यकता मैं बहुत दिनोंसे महसूस कर रहा था, क्योंकि मैं जानता था कि आधुनिक शिक्षा-पद्धति निष्फल साबित हुअी है; और यह पता मुझे जब मैं दक्षिण अफ्रीकासे लौटा, तब जो बहुतसे विद्यार्थी मुझसे मिलने आते थे, अुनके द्वारा लगा।

अिसलिअे मैंने आश्रममें दस्तकारियोंकी शिक्षा दाखिल करके अिसका आरंभ किया। निस्सन्देह, दस्तकारियोंके शिक्षण पर बहुत ज्यादा जोर दिया गया। नतीजा यह हुआ कि औद्योगिक शिक्षासे बच्चे जल्दी ही दिक आ गये और अुन्होंने यह खयाल किया कि हम साहित्यिक शिक्षासे वंचित किये जा रहे हैं। अुनकी यह गलती थी, क्योंकि वहा अुन्होंने थोडासा भी जो ज्ञान प्राप्त किया था, वह अुससे तो कही ज्यादा था, जो कि साधारणतया बच्चे पुराने ढर्रे पर चलनेवाले स्कूलोंमें प्राप्त करते है। पर अिस चीजने मुझे विचारमें डाल दिया और मैं अिस नतीजे पर पहुँचा कि औद्योगिक शिक्षाके साथ साहित्यिक शिक्षा नही, बल्कि औद्योगिक शिक्षाके द्वारा साहित्यिक शिक्षा देनी चाहिये। अैसा करने पर वे औद्योगिक तालीमको अेक जलील मशक्कत नही समझेंगे और साहित्यिक शिक्षामें अेक नया सन्तोष और नअी अुपयोगिता आ जायगी। कांग्रेसने जब पद ग्रहण किया, तब मुझे लगा कि अपने विचारको राष्ट्रके सामने रखना चाहिये और मुझे खुशी है कि कअी जगह अिनका स्वागत हुआ है।

हमने यह निश्चय किया कि अंग्रेजीको कोर्ससे निकाल देना चाहिये, क्योंकि हम जानते थे कि बच्चोंका अधिकांश समय अंग्रेजीके शब्दों और वाक्योंके रटनेमें चला जाता है और फिर भी वे जो सीखते हैं, अुसे अपनी भाषामें जाहिर नही कर सकते, और अध्यापक अुन्हें जो सिखाता है, अुसे ठीक-ठीक समझ नही सकते। अुलटे, अपनी मातृ-भाषाको महज अुपेक्षाके कारण भूल जाते हैं। मुझे अैसा प्रतीत हुआ कि औद्योगिक तालीमके द्वारा शिक्षा दी जाय, तभी अिन दोनों बुराअियोंसे बच सकते हैं।

मुझे शिक्षण देनेका आरंभ करना हो, तो मैं अिस तरह करूँगा: जिस दिन बच्चे मेरे पास आयेंगे, सबसे पहले मैं यह देखूँगा कि अुनका दिमाग कहाँ तक विकसित हुआ है। वे पढ़ना-लिखना और

थोडा बहुत भूगोल जानते हैं या नहीं। और तब मैं तकली दाखिल करके अुनकी जानकारीको बढानेकी कोशिश करूँगा।

आप शायद मुझसे पूछेंगे कि अितनी तमाम दस्तकारियोंमें से मैंने तकलीको ही क्यों चुना? क्योंकि सर्व प्रथम हमने जिन दस्तकारियोंकी शोध की थी, अुनमें अेक तकलीकी भी दस्तकारी है, और वह युगोंसे चली आ रही है। प्राचीन कालमें हमारा तमाम कपडा तकलीके सूतका ही बनता था। चरखा तो पीछे आया। फिर बढियासे बढिया अकका सूत चरखे पर कत भी नहीं सकता, अिसलिअे हमें पुन तकलीकी ही शरण लेनी पडी। तकलीने मनुष्यकी अन्वेषणात्मक बुद्धिको अुस अूँचाअी तक पहुँचा दिया, जिस अूँचाअी तक वह पहले कभी नहीं पहुँची थी। अिसमें अँगुलियोंकी कार्य-कुशलताका सर्वश्रेष्ठ अुपयोग हुआ। पर चूँकि तकली अैसे कारीगरों तक ही सीमित रही, जिन्होंने कभी शिक्षा पाअी ही नहीं, अिसलिअे अुसका अुपयोग लुप्त-सा हो गया। अगर हम तकलीका अुद्धार करके अुसे आज फिर अुसी गौरवपूर्ण पद पर प्रतिष्ठित देखना चाहते हैं, अगर हमें अपने ग्राम-जीवनका पुनरुद्धार और पुनर्निर्माण करना है, तो हमें बच्चोंकी शिक्षाका श्रीगणेश तकलीसे ही करना चाहिये।

अिसलिअे दूसरा पाठ यह चलेगा लडकोंको मैं अब यह सिखाअूँगा कि हमारे प्रतिदिनके जीवनमें तकलीको क्या स्थान प्राप्त था। अिसके बाद मैं अुन्हें अुसका थोडासा अितिहास बताअूँगा और यह भी बताअूँगा कि अुसका पतन कैसे हुआ। फिर भारतवर्षके अितिहासके सक्षिप्त क्रम पर आअूँगा — आरभ अीस्ट अिडिया कम्पनीसे या अुससे भी पहले मुसलमान-कालसे करूँगा, अुन्हें तफसीलवार यह बताअूँगा कि अीस्ट अिडिया कम्पनीकी तिजारतने किस तरह हमारे देशका शोषण किया और हमारी अिस मुख्य दस्तकारीका दम किस तरह अिरादतन घोटा गया और अन्तमें अिसका बिलकुल खातमा

कर डाला गया। अिसके बाद तकलीके यंत्रशास्त्रका, अुसकी बनावटका संक्षिप्त कोर्स चलेगा। शुरू-शुरूमें मिट्टीकी या आटेकी छोटी-सी गोली सुखाकर और अुसके ठीक मध्यमें बांसकी सींक डालकर तकली बनाअी गअी होगी। बिहार और बंगालके कुछ भागोंमें अब भी अिस किस्मकी तकली देखनेमें आती है। अिसके बाद मिट्टीकी गोलीकी जगह अींटकी चकतीने ले ली। और अब आज अींटकी चकतीकी जगह लोहे या फौलाद और पीतलकी चकतीने और बांसकी सींककी जगह फौलादके तारने ले ली है। यहां भी हम नामके काफी प्रश्न सोच सकते हैं — जैसे, चकती और तारका नाप अितना ही क्यों रखा गया है? अिससे ज्यादा या कम क्यों नहीं? अिसके बाद कपास पर थोड़ेसे व्याख्यान दिये जायेंगे — जैसे कपास खासकर किस तरहकी जमीनमें पैदा होती है, अुसकी कितनी किस्में हैं, किन देशों और हिन्दुस्तानके किन प्रांतोंमें वह अुगाअी जाती है, वगैरा वगैरा। कपासकी खेतीके बारेमें और अुसके लिअे कौनसी जमीन सबसे अुपयुक्त हो सकती है, अिस विषयमें भी कुछ ज्ञान दिया जा सकता है। अिससे हम थोड़ा खेती-बाड़ीके बारेमें भी जान लेंगे।

आप देखेंगे कि अपने विद्यार्थियोंको अिस प्रकारका शिक्षण देनेके पहले शिक्षकको खुद काफी परिपक्व ज्ञान प्राप्त करना होगा। कताअीके तारोंकी गिनती गजोंमें निकालना, सूतका नंबर मालूम करना, लच्छियां बनाना, बुनकरके लिअे अुसे तैयार करना, कपड़ेकी अमुक बनावटमें कितने गज सूत लगेगा, आदि बातों द्वारा पूरा प्रारंभिक गणित सिखाया जा सकता है। कपास अुगानेसे लेकर बुनाअी — कपास चुनना, ओटना, धुनना, कातना, मांडी लगाना, बुनना — तककी तमाम क्रियाओंका अपना-अपना सम्बन्धित यंत्रशास्त्र, अितिहास और गणित है।

अिसमें मुख्य कल्पना यह है कि बच्चोंको जो भी दस्तकारी सिखाअी जाय, अुसके द्वारा अुन्हें पूरी तरहसे शारीरिक, बौद्धिक और आत्मिक शिक्षा दी जाय। अुद्योगकी तमाम क्रियाओंके द्वारा आपको बच्चोंके अन्दर जो भी अच्छी चीज है, अुस सबको विकसित करना है। और आप अितिहास, भूगोल और गणितके जो पाठ सिखायेंगे, वे सब अुस अुद्योगसे सम्बन्धित होंगे।

अगर अिस प्रकारकी शिक्षा बच्चोंको दी जाय तो परिणाम यह होगा कि वह शिक्षा स्वावलम्बी हो जायगी। लेकिन सफलताकी कसौटी अुसका स्वाश्रयी रूप नहीं है, बल्कि यह देखकर सफलताका अन्दाज लगाना होगा कि वैज्ञानिक रीतिसे अुद्योगकी शिक्षाके द्वारा मनुष्यत्वका पूर्ण विकास हुआ है या नहीं। सचमुच मैं अैसे अध्यापककी कमी नहीं रखूंगा, जो चाहे जिन परिस्थितियोंमें शिक्षाको स्वाश्रयी बना देनेका वचन देगा। शिक्षाका स्वावलम्बी बनना अिस बातका न्यायसिद्ध परिणाम होगा कि विद्यार्थीने अपनी प्रत्येक कार्यशक्तिका ठीक-ठीक अुपयोग करना सीख लिया है। अगर अेक लड़का रोज तीन घंटे काम करके किसी दस्तकारीसे निश्चयपूर्वक अपनी जीविकाके लायक पैसा कमा लेता है, तो जो अपनी विकसित बुद्धि और आत्मा लगाकर अुस कामको करेगा, वह कितना अधिक कमा लेगा?

हरिजनसेवक, ११-६-'३८

१४

कुछ कीमती मत

['अुद्योग द्वारा शिक्षणको दो आधार' नामक लेख]

१

यद्यपि विनोवा और मैं सिर्फ पाँच मीलके ही फासले पर रहते है, फिर भी काममें सलग्न रहनेसे और दोनोंकी तबीयत कुछ शिथिल होनेके कारण हम अेक-दूसरेसे शायद ही मिलते है। अिसलिअे कुछेक कामोंको हम चिट्ठी-पत्री द्वारा निपटा लेते है।

"आपके शिक्षा विषयक ताजे विचार मुझे बहुत पसन्द आये है। मेरे विचार भी अिसी दिशाकी ओर जाते है। 'अुद्योग + शिक्षण' यह द्वैती भाषा मुझे पसन्द आती ही नही। मैं तो 'अुद्योग = शिक्षण' अैसा अद्वैती समीकरण मानता हूँ। शिक्षणके स्वावलम्बी हो सकनेमें मुझे तनिक भी शका नही। मुझे अैसा लगता है कि जिस शिक्षणमें स्वावलम्बन नही, अुसे गाँवोकी दृष्टिसे 'शिक्षण' की सज्ञा ही नही दी जा सकती। आपके विचारोंके साथ मैं अिस विषयमें पूर्णतया सहमत हूँ, अत अिस सबधमें कुछ खास लिखनेकी अिच्छा नही हुअी। हाँ, अुस पर प्रयोग करनेकी अिच्छा होती है। थोडा किया भी है, और अीश्वरकी मरजी होगी तो अिस विषयका निर्णय लानेकी भी आशा रखता हूँ।"

अुक्त विचार मैंने अुनके अेक अैसे ही पत्रसे अुद्धृत किया है। अिस विचारको मैं बहुत महत्त्व देता हूँ, क्योंकि अिस विषयमें जितने प्रयोग विनोवाने किये है, अुतने मैंने या मेरे अन्य साथियोंमें से किसी औरने मेरी समझमें नही किये। तकलीकी गतिमें जो क्रान्तिकारी वृद्धि

हुआी है, अुसके मूलमें विनोबाकी प्रेरणा और अुनका अपार श्रम है। अेक बड़ी सस्थाका संचालन करते हुअे भी अुन्होंने आठ-आठ, दस-दस घण्टे चरखा और तकली चलाअी है। और शिक्षणमें अिस अुद्योगको अुन्होंने पहलेसे ही महत्त्वका स्थान दे रखा है। अिसलिअे जिसे मैं अपनी मौलिक शोध मान रहा हूं, अर्थात् अुद्योग द्वारा स्वावलम्बी शिक्षण, अुसके साथ विनोबा स्वभावतः पूर्णतया सहमत हैं, यह मेरे लिअे तो निश्चय ही बहुत अुत्साहजनक बात है। और जो विनोबाको जानते हैं, वे भी अिससे अपनी श्रद्धाको दृढ़ करेंगे या अुनमें श्रद्धाका अभाव हो तो अुसे अपने हृदयमें लायेंगे, अिस आशासे अुनके मतको मैंने यहां अुद्धृत किया है।

२

श्री विनोबाका समर्थन मेरे लिअे कोअी आश्चर्यकी बात नहीं है। और 'हरिजनसेवक' के पाठकोंके लिअे भी यह कोअी नयी-सी बात मालूम नहीं पड़ेगी। पर यदि अुनका समर्थन न मिले तो मुझे पछतावा होना चाहिये। अपने पुरानेसे पुराने साथियोंको जो बात मैं नहीं समझा सकता, अुसे जनताको समझानेकी हिम्मत बांधूं, यह मेरी मूर्खता ही समझी जायगी; या धृष्टतामें तो मेरे अुस प्रयासकी गिनती होगी ही। मगर श्री नन्नु सुबेदारका निम्न लिखित पत्र जब मिला, तो अुससे मुझे अवश्य आनन्द और आश्चर्य हुआ। शिक्षा, मद्यनिषेध आदिके सम्बन्धमें मेरे जो विचार हैं, अुनके विषयमें मेरा अिनके साथ पत्र-व्यवहार चल रहा है, जिसके परिणाम-स्वरूप निम्न लिखित पत्र आया है। अिसे देखकर पाठकोंको प्रसन्नता होगी। अुन्होंने अिस पत्रके साथ अंग्रेजीमें कुछ सूचनाअें भी भेजी थीं, जिन्हें मैं 'हरिजन' में प्रकाशित कर चुका हूं।

"शिक्षाका भार विद्यार्थी कितने अंशों तक अुठावें और अुनके भविष्यमें सुधार होकर शरीरको किस प्रकार फौरन

व्यायाम मिले, तथा अुद्योगके कार्यमें मिलनेवाले अनुशासन वगैरासे अुनका मानसिक विकास किस तरह हो, यह विचार में कर ही रहा था कि खबर मिली कि आपने शिक्षा-परिषद्की अध्यक्षता स्वीकार कर ली है। अिसलिअे यह लगा कि अिस विषय पर तैयार किये हुअे अपने नोट आपके पास तुरन्त भेज दूं।

"गृह-अुद्योगकी योजनाओं और शाला-अुद्योगकी योजनाओंमें यों तो कुछ भी फर्क नहीं। सिवा अिसके कि शाला-अुद्योगको कच्चा माल मिलना ही चाहिये, और गृह-अुद्योगके लिअे भी अैसा हो तो अच्छा, पर हमेशा यह हो नहीं सकता।

"सब किस्मके सांचे ('मोल्ड') और हाथके यंत्र बनानेवाली संस्था शायद ही सरकार खडी कर सके, क्योंकि हाथ सिकोडकर पैसा खर्च करनेकी नीति अभी कओी साल तक चलेगी। शायद जेलोंका अुपयोग अिसमें हो जाय।

"सामान्य योजना बनाकर हरअेक शहर और जिलेमें भेजनी चाहिये, और यह सब ब्योरा प्राप्त करना चाहिये कि वहां क्या-क्या सुविधाअें हैं और कौन-कौनसा कच्चा माल आसानीसे बिलकुल मामूली कीमतमें मिलता है। शहरोंमें तो बहुत सुविधा मिलेगी। पर गांवोंमें क्या हो सकता है, अिस पर मेरी अपेक्षा अधिक जानकारी रखनेवाले व्यक्ति विचार कर सकेंगे।

"जिस गांवमें कोओी पाठशाला वगैरा नहीं है, वहां तो यह बडी आसान बात है कि पहलेसे ही किसी अैसे व्यक्तिको वहां नियुक्त कर दिया जाय, जो खुद भी काम करे और दूसरोंसे भी करा सके। बालकोंको पढावे और साथ ही अुनसे काम भी करावे। दोनों चीजें साथ-साथ चल सकें तो बडा ही अच्छा हो।

"आपने जब पहले-पहल कहा, तब यह चीज बहुत मुश्किल मालूम हुअी। अुस पर जब थोडा विचार किया तो

अुद्योग-हुनर, बेकारी और शिक्षा अिन तीन बड़े-बड़े प्रश्नोंका निर्णय संगठित रूपसे किस प्रकार किया जाय यह दिखाई देने लगा। गत १८ वीं तारीखके 'हरिजन' में 'अेक अध्यापक' का लेख पढ़नेके बाद मुझे लगता है कि शिक्षामें भी कुछ 'वेस्टेड अिन्टरेस्ट' (स्थापित स्वार्थ) जैसी बात है, और जैसा कि आप कहते हैं, वे सब पहलेसे बाँध लिये गये गलत विचार हैं। ज्ञानेश्वर महाराज कहते हैं कि तोता छड़ पर बैठ जाता है और खुद अुसे पकड़ लेता है, और फिर कहता है मैं बंधनमें पड़ गया हूँ।

"गरीब देशमें शिक्षा और अुद्योगको अलग-अलग रखना पुसा ही नहीं सकता। थोड़े कपड़ेमें शरीर ढँकना रहा, अिसलिअे जरा अधिक कष्टका मार्ग अपनाना चाहिये। विदेशी राज्यने यह कष्ट किया नहीं। 'पैसा कम है तो शिक्षा थोड़ी दो', अैसा विदेशी ही कह सकते हैं। कांग्रेसके राज्यमें जिससे जो बोझा अुठ सके, वह अुसे अुठावे। विद्यार्थी कितना बोझा अुठा सकते हैं, अिसकी अच्छी छान-बीन की जाय तो मालूम होगा कि अगर व्यवस्था ठीक हो, तो शिक्षाके खर्चमें वे बहुत अच्छा हिस्सा दे सकते हैं, बल्कि बड़े होकर रोजीके लायक खुद कोअी अुद्योग भी सीख सकते हैं।"

हरिजनसेवक, १६–१०–'३७

३

['अेक अध्यापक द्वारा समर्थन' नामक लेख]

"बालकको कोअी भी अुपयोगी हस्त-अुद्योग शास्त्रीय और सस्कारी तरीकेसे सिखाना और अुसकी शिक्षाका प्रारंभ हो तभीसे अुसे कुछ चीज पैदा करना सिखाना — आपके अिस सुझावके साथ मैं सहमत हूँ। अितना ही नहीं, पर अिसका

आग्रहपूर्वक समर्थन भी करता हूँ। अिसमे शक नही कि यह अेक क्रातिकारी सुझाव है, पर मैं सौ फीसदी अिससे सहमत हूँ। नीति, सस्कार और आर्थिक लाभकी दृष्टिसे व्यक्तिके लिअे तथा राष्ट्रके लिअे अिसकी अपार कीमत है। अिससे बालकको शरीर-श्रमका गौरव समझमें आयेगा, अितना ही नही, बल्कि अुसमें स्वाश्रयकी भावना पैदा होगी, और जीवनमे सर्जनका योग्य स्थान क्या है, यह अुसे बराबर समझमे आवेगा। बुद्धि, शरीर, नीति और अुद्योग, अिन मामलोमें बालककी आवश्यकताओको पूरा करना और अुसकी शक्तिका विकास करना हमारा ध्येय होना चाहिये। अुद्योगकी शिक्षामे बालकको अुत्पादनकी सब क्रियाओंके सामान्य सिद्धान्त सिखाये जायेंगे और अुसके साथ बालक या जवानको सब अुद्योगोके सादेसे सादे औजार अिस्तेमाल करनेकी व्यावहारिक शिक्षा मिलेगी। हमारा आदर्श यह होना चाहिये कि नअी अुगती हुअी पीढीको पढाअीके साथ-साथ अैसा काम भी सिखाया जाय, जिसमे कुछ सर्जनकी भी जरूरत हो। अिसका अर्थ यह है कि सामान्य शिक्षाके साथ शारीरिक कार्य भी जोड दिया जाय, और अिसका ध्येय यह है कि जिनके साथ शारीरिक कामका मेल साधा जा सके, अैसी अुद्योगकी सब शाखाओका साधारण खयाल बालकको मिले। बौद्धिक और नैतिक प्रयासके साथ जुडे हुअे शारीरिक श्रमको हमारी शिक्षामें प्रधानता मिलनी चाहिये। दिमाग तथा हाथ-पैरके कामोको अलग नही करना चाहिये।

"हमारी प्राथमिक शिक्षा-पद्धतिमे हमें अितनी चीजोका समावेश करना चाहिये :

१ मातृभाषा

२ अकगणित

३ प्राकृतिक विज्ञान
४ समाज-शास्त्र
५ भूगोल और अितिहास
६. श्रम-मेहनत या हुनर-अुद्योगका काम
७ कसरत
८ कला और संगीत
९ हिन्दुस्तानी

"यहां प्रश्न यह खडा होता है कि बालककी शिक्षाकी शुरुआत किस अुम्रमें हो? पाँच या छ: वरसकी अुम्रमें शिक्षा शुरू हो, तो अिस अुम्रमें किसी अुपयोगी हस्त-अुद्योगकी शुरुआत की जा सकती है? वह अुद्योग सिखानेमें जो खर्च होगा अुसका क्या? यह अक्षरज्ञानके प्रचारकी अपेक्षा आसान और कम खर्चीला नहीं होगा। मैं ८ या १० वर्षकी अुम्रसे हस्त-अुद्योगकी शुरुआत करूँगा, क्योंकि औजारोंका अुपयोग करनेमें अुसको हाथकी शक्ति और सन्तुलन चाहिये ही। पर प्राथमिक शिक्षाकी शुरुआत कम-से-कम ५ या ६ वर्षकी अुम्रमें होनी चाहिये। बालकको अिससे अधिक प्रतीक्षा नहीं करायी जा सकती। हम बालकको जिस अुद्योगकी शिक्षा देना चाहते हैं, अुसके अलावा मैट्रिक तकके स्तर पर अुसे ले जानेके लिअे हमारे पास दस वर्षका पाठ्यक्रम होना चाहिये। पर अिन बालकोंकी पैदा की हुअी चीजोंकी — खासकर छोटे बच्चोंकी — आर्थिक कीमतके बारेमें मुझे शक जरूर है। जहाँ व्यापारमें कोअी प्रतिबंध नहीं है, और तरह-तरहकी नित्य नअी फैशनें चलती हैं अैसे देशमें, और फिर जब वे चीजें टिकाअू और सफाअीदार न हों, वे बिक नहीं सकतीं। यदि अुन्हें राज्य खरीद ले, या कुछ सेवा या मदद देकर अुसके बदलेमें अुन्हें ले, तो अुन चीजोंका वह क्या करेगा? राज्य अैसा करे, अिसके बजाय तो शिक्षा

पर सीधे तौरसे पैसे खर्च करे, यह ज्यादा ठीक है। वेशक वडी अुम्रके, अुदाहरणार्थ १२ से १६ वर्षके, लडको द्वारा वनायी हुअी चीजें वाजारमें वेची जा सके, अैसी वनाअी जा सकती है, और अुनसे ठीक-ठीक आमदनी हो सकती है।

"मैं तो अक्षरज्ञानके प्रश्नका विचार भिन्न रीतिसे करता हूँ, और अिसके लिअे कर डालने और खर्च करनेकी जरूरत हो, तो वह खुशीसे करूँगा।

"अुपयोगी हस्त-अुद्योगका विचार प्राथमिक शिक्षाके आगेके (अथवा माध्यमिक) वर्गोमें अच्छी तरह विकसित किया जा सकता है। कम-से-कम कुछ अंशोमें अुसे स्वावलम्वी वनानेका प्रयत्न तो करना ही चाहिये और अनुभव प्राप्त होनेके वाद पैदा की हुअी चीजोकी कीमतके हिसावसे हो सके तो अुसे पूरी-पूरी स्वावलम्वी वनाना चाहिये। केवल अेक जोखिमसे अुसकी रक्षा करनी पडेगी; वह यह है कि शरीर, मन और आत्माके संस्कारोकी शिक्षा आर्थिक हेतु और स्कूलकी आर्थिक व्यवस्थाके आगे अेकदम गौण न वन जाय।

"प्राथमिक शिक्षाको आजकलकी मैट्रिकमें से अंग्रेजीको हटा दें (और मैं कहता हूँ कि हिन्दुस्तानीको जोड दें) अुस हद तक पहुँचानेकी आपकी सूचना भी मुझे कवूल है। अिसका अर्थ यह है कि आप प्राथमिक शिक्षामें माध्यमिक शिक्षाका भी समावेश करते हैं। आपका विचार स्कूलकी शिक्षाको दस वर्षकी अेक सम्पूर्ण अिकाअी वनानेका है। मैं अिसमें अितना जोडना चाहता हूँ कि यह शिक्षा स्वभाषा द्वारा ही दी जानी चाहिये, दूसरी किसी भाषा द्वारा नही। अिससे वालकका मन स्वतंत्र होगा, अुसके मनमें ज्ञान और जीवनके प्रश्नोंके वारेमें गहरा रस पैदा होगा और वालकमें सर्जनकी शक्ति और दृष्टि आवेगी।

"मैं स्वीकार करता हूँ कि मध्ययुगमें शिक्षा ज्यादातर स्वावलम्बी थी, और यदि हमारी सामाजिक, आर्थिक और राजकीय व्यवस्था और दृष्टि मध्ययुगीन रहे, तो शिक्षाको सामान्यत स्वावलम्बी बनाया जा सकता है। मध्ययुगीनका अर्थ वर्ग और वर्णकी अर्थ-व्यवस्था, समाज-व्यवस्था और राज्य-व्यवस्थाके पुराने और सकुचित विचारोंसे चिपटकर रहनेवाली। पर आज जब हममें लोकशासन, राष्ट्रवाद और समाजवादकी कल्पनाअें व्याप्त हो रही है, अैसे समय शिक्षा स्वावलम्बी नहीं बन सकती।' समाजमें अेकमात्र सगठित और शासनबल तथा साधन-सामग्रीसे सम्पन्न शक्ति केवल सरकार ही है। अिसलिअे यह कार्य अुसे अपने सिर पर लेना ही पडेगा। पुराने शक्ति-समूह — जाति, वर्ग, सघ, पाठशाला, धर्मसघ — में शक्ति, शासनबल या साधन-सामग्री नही रही। और पुराने समयमें जिस विशाल अर्थमे अुसका अस्तित्व था, वह अब नही रहा। लोगोंको भी अुस पर श्रद्धा नही रही। सामाजिक शक्ति सब राजकीय समूहके पास चली गअी है। और हिन्दुस्तानमें भी राजकीय शक्ति ही आर्थिक और सामाजिक शक्ति बन गअी है। अर्थात् दो आदर्श — अेक मध्ययुगीन और दूसरा अर्वाचीन — साथ-साथ नही चल सकते। भूतकालमे न सार्वत्रिक शिक्षा थी, न लोकशासनयुक्त अेकतत्री राज्य था और न राष्ट्रीय समानदर्शी दृष्टि ही थी।

"शिक्षामे युवकोकी अनिवार्य सेवा लेनेका विचार नया नही है। पर यह बात करने जैसी है। काग्रेस और अुसके प्रातीय प्रधानमत्री अपने ओहदेके अधिकारसे देशके बुद्धिशाली वर्गको विनती करके देखें, और जिन्हें जन-समूहकी शिक्षाके लिअे लगन और अुत्साह हो अैसे सब लोग प्रजामें अक्षरज्ञान, सस्कार और शिक्षाका प्रचार करनेमें सरकारकी मदद करे, अैसी

अपील अुनसे करे। जिससे जनसमूहके साथ अेक नये प्रकारका सपर्क कायम होगा —— केवल आर्थिक या राजकीय विषयका ही सम्बन्ध नही रहेगा, प्रजाकी सामूहिक शक्ति और बुद्धिको जाग्रत करने, सगठित करने और व्यवस्थित करनेका अुच्चतर हेतु भी अिससे सधेगा।"

मैंने स्वावलम्बी प्राथमिक शिक्षाके लिअे पहली बार लिखा, तब शिक्षाक्षेत्रके साथियोसे अपने-अपने अभिप्राय भेजनेके लिअे विनती की थी। सबसे पहले अभिप्राय भेजनेवालोमें काशी हिन्दू विश्वविद्यालयके अध्यापक पुणताम्बेकर भी थे। अुन्होंने लबा, दलीलोंसे भरा जवाब भेजा था। पर स्थानाभावके कारण में अिससे पहले अुसे अिस पत्रमें नही दे सका। अूपर अुनके अभिप्रायका सबसे ज्यादा प्रस्तुत भाग दिया है। सक्षेपके लिअे अक्षरज्ञान और कॉलेजकी शिक्षा-विषयक भागोको छोड दिया है। क्योकि अिस महीनेकी २२ और २३वी तारीखको होनेवाली परिषद्में चर्चाका मुख्य विषय अुद्योग द्वारा स्वावलम्बी प्राथमिक शिक्षा रहेगा।

हरिजनबधु, २४–१०–'३७

१५

कुछ आलोचनाअें

['कुछ आलोचनाओंका जवाब' नामक लेख]

मेरी प्राथमिक शिक्षाकी योजना पर अेक अुच्च शिक्षाधिकारीने हमारे अेक मित्र द्वारा अपनी विस्तृत और विचारपूर्ण आलोचना भेजी है। वे अपना नाम प्रगट नही करना चाहते। स्थानाभावके कारण मैं अुनकी सारी दलीले तो नही दे सकता, और न अुनमें कोअी अैसी नअी बात ही है। फिर भी और कुछ नही तो लेखकने अिस पत्र पर जो परिश्रम किया है अुसीकी खातिर अुन्हे जवाब तो देना चाहिये।

लेखकने अपने शब्दोंमें मेरी तजवीजोंका मतलब अिस प्रकार दिया है

"(१) प्राथमिक शिक्षाका प्रारम्भ और अन्त दस्तकारियों और अुद्योगोंकी तालीमके साथ हो और सामान्य जानकारीकी दृष्टिसे जो कुछ भी सिखाने पढानेकी जरूरत हो, वह सहायक पढाअीके रूपमें शुरू-शुरूमें बता दिया जाय। और लिखने पढने द्वारा दिया जानेवाला अितिहास, भूगोल और गणितका बाकायदा शिक्षण बिलकुल आखिरमें हो।

"(२) प्राथमिक शिक्षा शुरूसे ही स्वावलम्बी होनी चाहिये और राज्य बच्चोंकी बनायी चीजोंको लेकर अगर जनताको बेच दिया करे, तो प्राथमिक शिक्षा स्वावलम्बी हो सकती है — और अुसे होना चाहिये।

"(३) प्राथमिक शिक्षामें वह सब पढाअी हो जाय, जितनी कि मैट्रिक तक आज होती है — केवल अंग्रेजीको छोडकर।

"(४) प्रो० के० टी० शाहकी अिस योजनाकी अच्छी तरह जांच की जाय, और यदि सम्भव हो तो अुस पर अमल भी किया जाय, कि देशके नवयुवक और युवतियां प्राथमिक शालाओंमें लाजिमी तौर पर आकर पढावें।"

अिसके बाद फौरन ही लेखकने लिखा है

"यदि हम अुपर्युक्त कार्यक्रमका विश्लेषण करें, तो यह दिखाअी देगा कि अिसकी कुछ मूलभूत कल्पनाअें मध्यकालीन हैं; और कहीं-कहीं तो अैसी मान्यताओं पर आधार रखती हैं, जो परीक्षामें ठहर नहीं सकती। शायद नम्बर ३ में लिखी मर्यादा बहुत अूंची मानी जायगी।"

अच्छा होता अगर मेरी सूचनाओंका मतलब अपने शब्दोमे देनेके बजाय लेखक मेरे ही शब्दोको अुद्धृत कर देते। क्योकि नबर १ मे जितने भी वाक्य लिखे गये है, वे मेरे भावोको व्यक्त करनेमे बिलकुल असफल हुअे है। मेरा यह तो हरगिज मतलब नही कि शिक्षण दस्तकारियोसे प्रारम्भ किया जाय और अन्य बाते गौण रूपमे सहायकके बतौर सिखायी जायें। अिसके विपरीत मैंने तो यह कहा है कि प्राय सारी सामान्य पढाअी दस्तकारियोके जरिये और अुनके साथ-साथ ही हो, और ज्यो-ज्यो विद्यार्थी अिनमें आगे बढता जाय, अुसे अन्य बाते भी सिखायी जायें। लेखकके शब्दोसे जो भाव निकलता है, वह और यह बिलकुल जुदा-जुदा चीजे है। मुझे पता नही कि मध्ययुगमे क्या होता था। हाँ, मैं यह जरूर जानता हूँ कि मध्य या किसी भी युगमे यह अुद्देश्य तो कभी नही रहा कि दस्तकारियोकी सहायतासे मनुष्यका पूर्ण विकास साधा जाय। यह कल्पना अेकदम नअी है। अगर यह गलत भी साबित हो, तो भी अुसकी मौलिकता और नवीनतामें कोअी अन्तर नही पडता। और जब तक हम किसी नअी कल्पनाको अच्छी तरह आजमा नही लेते, अुस पर अेकदम सीधा आक्रमण भी नही कर सकते। बगैर सिद्ध किये ही अेकदम यह कह देना कि यह असम्भव है, कोअी दलील नही है।

मैंने यह भी नही कहा है कि विधिवत् पढाअी लेखन और पठनके द्वारा बिलकुल आखिरमे की जाय। अिसके विपरीत, असलमें सच्ची पढाअी तो शुरू-शुरूमें ही आ जाती है। सचमुच वह तो साधारण शिक्षाका अेक महत्त्वपूर्ण अग है। हाँ, मैंने यह जरूर कहा है और फिर कहता हूँ कि वाचन कुछ देरसे सिखाया जाय और लेखन सबके अन्तमें। पर ये सब क्रियाअे अेक वर्षके अन्दर समाप्त कर देनी चाहिये, जिससे मेरी कल्पनाकी पाठशालामें सात सालका अेक लडका या लडकी, वर्तमान प्राथमिक शालाओमें साधारण लडके-लडकियोको अेक सालमें जितना सामान्य ज्ञान होता है, अुससे कही

अधिक प्राप्त कर ले। वह आजकलके बच्चोंकी भाँति अिस तरह नहीं लिखेगा, मानो कागज परसे चींटा गुजर गया हो, बल्कि साफ और मोतीके दाने जैसे सुन्दर अक्षर लिखेगा और अच्छी तरह शुद्ध पढ़ेगा भी। वह मामूली जोड़ तथा पहाड़े भी सीख लेगा। और यह सब वह अेक सालके अन्दर अपनी रुचिकी अेक अुत्पादक दस्तकारी—मसलन् कताओ—के जरिये और अुसके साथ-साथ सीख लेगा।

न० २ भी पहलेकी ही तरह भद्दे ढंगसे लिखा गया है। मैंने दावा तो यह किया है कि दस्तकारियोंकी सहायतासे जब शिक्षा दी जायगी, तो मेरी बतायी कुल अवधि अर्थात् सात वर्षमें अुसे स्वावलम्बी हो जाना चाहिये। मैंने यह साफ कह दिया है कि पहले दो वर्षमें तो अुसमें कुछ अंशोंमें नुकसान भी होगा।

मध्यकाल शायद बुरा रहा हो, पर मैं किसी चीजको महज अिसलिअे निन्दा करनेको तैयार नहीं हूँ कि वह मध्यकालकी है। निस्सन्देह चरखा अेक मध्यकालीन चीज है। पर आज तो वह वर्तमान जीवनमें अपना स्थान पा चुका है, यद्यपि वस्तु तो वही है। पहलें अेक समय, अीस्ट अिंडिया कंपनीके आगमनके बाद, जहाँ वह गुलामीका चिन्ह था, तहाँ आज वह स्वतंत्रता और अेकताका प्रतीक बन गया है। नवीन भारतको आज अुसके अन्दर वे गहन और सच्चे रहस्य नजर आने लग गये हैं, जिनकी कल्पना हमारे बुजुर्गोंको सपनेमें भी नहीं हुअी होगी। अिसी प्रकार ये दस्तकारियाँ भी भले ही किसी समय कारखानोंकी गुलामीका चिन्ह रही हों, लेकिन आज वे संपूर्ण और सच्चेसे सच्चे अर्थमें शिक्षाका प्रतीक और वाहन बन सकती हैं। अगर मंत्रियोंके अन्दर आवश्यक साहस और कल्पना होगी, तो वे जरूर अिस कल्पनाको कार्यमें परिणत करके देखेंगे, भले ही अुच्च शिक्षाधिकारी तथा अन्य लोग काल्पनिक शंकाओंके आधार पर अिनकी टीकायें—भले वे सद्हेतुसे प्रेरित ही हों—करते रहें।

यद्यपि लेखकने प्रो० के० टी० शाह द्वारा सुझाअी हुअी लाजिमी सेवाकी योजनाकी व्यावहारिकताको कुछ अंशमें स्वीकार करनेकी भलमनसाहत बतायी है, तो भी आगे चलकर अुन्हें अिस पर अफसोस होता है और वे कहते हैं

"देशके नवयुवकों और युवतियोंको पाठशालाओंमें आकर पढानेके लिअे मजबूर करनेवाली कल्पना तो अत्याचारपूर्ण मालूम होती है। जहाँ पर छोटे-छोटे बच्चे अेकत्र होते हैं, वहाँ तो हमें अैसे शिक्षकोंको भेजना चाहिये, जिन्होंने स्वेच्छापूर्वक अपनेको अिस कामके लिअे अुस अंश तक अर्पित कर दिया है, जिस अंश तक संसारमें अैसा आत्मोत्सर्ग संभव है। और साथ ही वे लोग अैसे हों, जो बच्चोंको अुत्साहपूर्वक पढा सकें और अुन्हें रोशनी दे सकें। हमने अपने देशके युवकों और युवतियों पर अब तक काफी प्रयोग किये हैं। पर यह तो अेक अैसा प्रयोग है, जिसका अितना बडा अनर्थकारी परिणाम होगा कि अुससे हम आधी शताब्दी तक अपना पिंड नहीं छुडा पायेंगे। जिस सब कल्पनाकी जडमें यह मान लिया गया है कि पढाना अेक अैसी कला है, जिसके लिअे किसी प्रकारकी ट्रेनिंगकी जरूरत नहीं है और यह कि हरअेक आदमी जन्मजात शिक्षक होता है। बडे आश्चर्यकी बात है कि श्री के० टी० शाह जैसे विद्वानके दिमागमें यह बात कैसे बैठ गअी। यह तो अेक निरी सनक है और अिस पर कहीं अमल होने लगा तो भयंकर दुष्परिणाम होंगे। और फिर हर शिक्षक बच्चोंको दस्तकारियोंकी शिक्षा कैसे देगा?" अित्यादि, अित्यादि।

प्रो० शाह अपनी योजनाको प्रतिपादित करनेकी काफी क्षमता रखते हैं। पर मैं लेखकको याद दिला देना चाहता हूँ कि वर्तमान शिक्षक स्वयंसेवक नहीं हैं। वे भी (शुद्ध अर्थमें) किराये पर अर्थात् रोटीके लिअे काम कर रहे हैं।

प्रो० शाहने अपनी योजनामें यह मान लिया है कि जो शिक्षक नियुक्त किये जायेंगे, अुनमें अपने देशके लिअे प्रेम, स्वार्थत्यागकी भावना, कुछ सुसंस्कार और अेकाध दस्तकारीका सक्रिय ज्ञान तो होगा। अुनकी कल्पनामें सार है, वह व्यावहारिक है और सबसे अधिक गौर करनेके काबिल है। अगर हम अिस बातकी राह देखते रहें कि हमें जन्मजात अध्यापक मिलें, तब तो कल्पांत तक ठहरना पड़ेगा। मैं तो कहता हूं कि हमें बहुत बड़े पैमाने पर शिक्षकोंको तैयार करना पड़ेगा और सो भी थोड़ेसे थोड़े समयमें। यह तब तक संभव नहीं, जब तक कि देशके मौजूदा शिक्षित नौजवान और बहनें अपनी सेवायें अिस कामके लिअे न दे दें। पर यह काम स्वेच्छापूर्वक और प्रेमके साथ हो, तभी सफल हो सकता है। सविनय-अवज्ञाके दिनोंमें देशकी पुकार पर, चाहे कितनी ही थोड़ी संख्यामें क्यों न हों, वे दौड़ पड़े थे। अपने गुजरके लिअे थोड़ासा पारिश्रमिक लेकर देशकी रचनात्मक सेवाकी पुकार पर क्या अब वे फिर नहीं दौड़ पड़ेंगे?

अब लेखक पूछते हैं

"(१) जब छोटे-छोटे बच्चे काम करेंगे, तो क्या वस्तुओंका अपव्यय नहीं होगा?

(२) अिन चीजोंकी बिक्री किसी मध्यवर्ती संगठन द्वारा ही होगी न? अुसका खर्च कहांसे आयेगा?

(३) क्या लोगोंको ये चीजें खरीदनेके लिअे मजबूर किया जायगा?

(४) अुन जातियोंकी क्या दशा होगी, जो आजकल ये चीजें बना रही हैं? अुन पर अिस पद्धतिकी क्या प्रतिक्रिया होगी?"

मेरे अुत्तर ये हैं

(१) बेशक, कुछ अपव्यय तो जरूर होगा, पर अेक वर्षके अन्तमें तो प्रत्येक विद्यार्थीको कुछ लाभ भी होगा।

(२) तैयार चीजोंमें से राज्य अपनी जरूरतोंकी पूर्तिके लिअे खुद ही काफी हिस्सा रख लेगा।

(३) देशके बच्चों द्वारा बनायी हुअी चीजें खरीदनेके लिअे किसीको मजबूर नहीं किया जायगा। लेकिन अुससे यह अपेक्षा जरूर रखी जायगी कि वह अभिमानपूर्वक अुन चीजोंको ले। साथ ही, यह भी अपेक्षा की जा सकती है कि बच्चों द्वारा देशकी जरूरतोंकी पूर्तिके लिअे बनायी गअी अिन चीजोंको खरीदनेमें राष्ट्र अेक प्रकारका आनन्द-लाभ भी करेगा।

(४) गाँवोंकी दस्तकारियोंसे बनी चीजोंमें तो मुश्किलसे कोअी होड होगी। फिर अिस बातका भी खास तौर पर ध्यान रखा जायगा कि गाँवोंकी बनी किन्हीं भी चीजोंसे अनुचित होड न हो, अैसी ही चीजें स्कूलोंमें बनें। मसलन् खादी, गाँवका बना कागज, खजूरका गुड आदि चीजोंमें किसी प्रकारकी प्रतिस्पर्धा नहीं चलेगी।

हरिजनसेवक, १६-१०-'३७

१६

वर्धा-शिक्षा-परिषद्

[प्रकरण ११ में जिस परिषद्का जिक्र है, वह ता० २२, २३ अक्तूबर, १९३७ को वर्धामें हुआी थी। 'वर्धा-शिक्षण-योजना', 'बुनियादी शिक्षा' या बादमें जिसे 'नअी तालीम' कहा जाने लगा, अुसका जन्म अिस परिषद्में हुआ। 'अुद्योग द्वारा शिक्षा' का गांधीजीका यह मूल विचार अिस परिषद्ने ही पहले पहल अपनाया। देशमें अिसके प्रयोग बादमें हुअे। —सं०]

१

सभापति-पदसे प्रारंभिक विवेचन

[तमाम आमन्त्रित सज्जनोंको धन्यवाद देनेके पश्चात् गांधीजीने जो विवेचन किया अुसका सार]

मैं आप लोगोंके सामने परिषद्के अध्यक्षकी हैसियतसे अुपस्थित होअूं या अेक सदस्यकी हैसियतसे, मैंने तो आप लोगोंको यहां अिसलिअे आनेका कष्ट दिया है कि मैंने जो प्रस्ताव* तैयार किये हैं, अुन पर आपकी — और खास कर जो अिनका विरोध करते हैं अुनकी राय सुनूं और अुनसे सलाह लूं। मैं चाहता हूं कि आप मेरी अिन तजवीजों पर स्वतंत्र रूपसे स्पष्टताके साथ पूरी-पूरी चर्चा करें, क्योंकि मुझे अफसोस है कि मैं अपने कमजोर स्वास्थ्यकी वजहसे पण्डालके बाहर आप सज्जनोंसे नहीं मिल सकता।

* ये प्रस्ताव 'राष्ट्रीय शिक्षाशास्त्रियोंसे' नामक प्रकरणमें दिये गये हैं।

मैंने जो प्रस्ताव् विचारार्थ रखे है, अुनमे प्राथमिक शिक्षा और कॉलेजकी शिक्षा दोनोका ही निर्देश है। पर आप लोग तो अधिकतर प्राथमिक शिक्षांके वारेमे ही अपने विचार जाहिर करे। माध्यमिक शिक्षाको मैंने प्राथमिक शिक्षामे शामिल कर लिया है, क्योकि प्राथमिक कही जानेवाली शिक्षा हमारे गाँवोंके बहुत ही थोडे लोगोको मयस्सर होती है। १९१५ से शुरू किये हुअे अपने कअी दौरोमें मैंने सैंकडो गाँव देखे है। मैं महज गाँवोके ही लडको और लडकियोकी जरूरतोके वारेमें कह रहा हूँ, जिनका कि वहुत वडा भाग विलकुल निरक्षर है। मुझे कॉलेजकी शिक्षाका अनुभव नही है, हालाँकि कॉलेजके हजारो लडकोंके सम्पर्कमें मैं आया हूँ, अुनके साथ दिल खोलकर मैंने बाते की है और खूब पत्र-व्यवहार भी हुआ है। अुनकी आवश्यकताओंको, अुनकी नाकामयावियोको और अुनकी तकलीफोको मैं जानता हूँ। पर अच्छा हो कि आप अपनेको प्राथमिक शिक्षा तक ही महदूद रखें। कारण यह है कि मुख्य प्रश्नके हल होते ही कॉलेजकी शिक्षाका गौण प्रश्न भी हल हो जायगा।

मैंने खूब सोच-समझकर यह राय कायम की है कि प्राथमिक शिक्षाकी यह मौजूदा प्रणाली न केवल धन और समयका अपव्यय करनेवाली है, वल्कि नुकसानदेह भी है। अधिकाश लडके अपने माँ-बापके तथा अपने खानदानी पेशे-धन्धेके कामके नही रहते। वे बुरी-बुरी आदते सीख लेते है, शहरी तौर-तरीकोके रगमें रग जाते है और थोडी-सी अूपरी बातोकी जानकारी ही अुन्हे हासिल होती है, जिसे और चाहे जो नाम दिया जाय, पर शिक्षा तो हरगिज नही कहा जा सकता। अिसका अिलाज मेरे खयालमें यह है कि अुन्हे औद्योगिक या दस्तकारीकी तालीमके जरिये शिक्षा दी जाय। मुझे अिस प्रकारकी शिक्षाका कुछ व्यक्तिगत अनुभव है। मैंने दक्षिण अफ्रीकामें खुद अपने लड़कोको और दूसरे हर जाति और धर्मके बच्चोको टॉल्स्टॉय फार्ममें किसी न किसी दस्तकारी द्वारा अिस प्रकारकी तालीम

दी थीं। जैसे बढ़ओीगिरी या जूते बनानेका काम सिखाया था, जिसे कि मैंने कैलनबैकसे सीखा था, और कैलनबैकने अेक ट्रेपिस्ट मठमें जाकर अिस हुनरकी शिक्षा प्राप्त की थी। मेरे लड़कोंने और अुन सब बच्चोंने, मुझे विश्वास है, कुछ गँवाया नही है। यद्यपि मैं अुन्हे अैसी शिक्षा नही दे सका, जिससे कि खुद मुझे या अुन्हें सन्तोष हुआ हो। क्योंकि समय मेरे पास बहुत कम रहता था और काम अितने अधिक रहते थे कि जिनका कोओी शुमार नहीं।

मैं असल जोर धन्धे या अुद्यम पर नही, बल्कि हाथ-अुद्योग द्वारा शिक्षण पर दे रहा हूँ। साहित्य, अितिहास, भूगोल, गणित, विज्ञान अित्यादि सभी विषयोंकी शिक्षा अुद्योग द्वारा ही दी जानी चाहिये। शायद अिस पर यह आपत्ति अुठायी जाय कि मध्ययुगमें तो अैसी कोओी चीज नही सिखायी जाती थी। मगर पेशे-धन्धेकी तालीम तब अैसी होती थी कि अुससे कोओी शैक्षणिक मतलब नहीं निकलता था। अिस युगमें यह दशा हुओी है कि लोग अुन पेशोंको, जो अुनके घरोंमें होते थे, भूल गये हे, पढ-लिखकर अुन्होंने क्लर्कीका काम हाथमे ले लिया है और अिस तरह वे आज देहातके कामके नहीं रहे हैं। नतीजा अिसका यह हुआ है कि किसी भी औसत दर्जेके गाँवमे हम जायें, तो वहाँ अच्छे, निपुण बढ़ओी या लुहारका मिलना असभव हो गया है। दस्तकारियाँ करीब-करीब अदृश्य हो गयी है और कताओीका अुद्योग, जो अुपेक्षाकी नजरसे देखा जा रहा था, लकाशायर चला गया, जहाँ कि अुसका विकास हुआ। धन्यवाद है अंग्रेजोंकी अनोखी प्रतिभाको कि हुनर-अुद्योगोंको अुन्होने आज अिस हद तक विकसित कर दिया है। पर मैं यह जो कहता हूँ, अुसका मेरे औद्योगीकरण सम्बन्धी विचारोंसे कोओी सम्बन्ध नहीं।

अिलाज अिसका यह है कि हरअेक दस्तकारीकी कला और विज्ञानको व्यावहारिक शिक्षण द्वारा सिखाया जाय और फिर अुस अुद्योग द्वारा शिक्षा दी जाय। अुदाहरणके लिअे, तकली परकी

कताअी-कलाको ही ले लीजिये। अिसके द्वारा कपासकी मुख्तलिफ किस्मोंका और हिन्दुस्तानके विभिन्न प्रान्तोंकी तरह-तरहकी जमीनोंका ज्ञान दिया जा सकता है। वस्त्र-अुद्योग हमारे देशमें किस तरह नष्ट हुआ, अिसका अितिहास हम अपने बच्चोंको बता सकते है। अिसके राजनीतिक कारणोंको बतायेंगे, तो भारतमें अंग्रेजी राज्यका अितिहास भी अुसमें आ जायगा। गणित अित्यादिकी भी शिक्षा अिनके द्वारा अुन्हें दी जा सकती है। मैं अपने छोटे पोते पर अिसका प्रयोग कर रहा हूँ, जो शायद ही यह महसूस करता हो कि अुसे कुछ सिखाया जा रहा है, क्योंकि वह तो हमेशा खेलता-कूदता रहता है, हँसता है और खूब गाता है।

तकलीका अुदाहरण मैंने जो खासकर दिया है, वह अिसलिअे कि अिसके विषयमें आप लोग मुझसे सवाल पूछें, क्योंकि मुझे अिससे बहुत-कुछ काम निकालना है। अिसकी शक्ति और अिसका अद्भुत पराक्रम मैंने देखा है, और अेक कारण यह भी है कि वस्त्र-निर्माणकी दस्तकारी ही अेक अैसी चीज है, जो सब जगह सिखायी जा सकती है। और तकली पर कुछ खर्च भी नहीं होता। जितनी आशा की जाती थी, अुससे कहीं ज्यादा तकलीका मूल्य और महत्त्व साबित हो चुका है। जिस हद तक भी हमने रचनात्मक कार्यक्रम पूरा किया है, अुसीके परिणामस्वरूप सात प्रान्तोंमें ये कांग्रेसी मंत्रि-मंडल बने हैं, और जिस हद तक अिस कार्यक्रम पर अमल होगा, अुसी हद तक अिन मंत्रि-मंडलोंको सफलता मिलेगी।

मैंने सोचा है कि अध्ययन-क्रम सात सालका रखा जाय। जहाँ तक तकलीका सबंध है, अिस मुद्दतमें विद्यार्थी बुनाअी तकके व्यावहारिक ज्ञानमें (जिसमें रंगाअी, डिजाअिनिंग आदि भी शामिल हैं) निपुण हो जायेंगे। हम जितना कपड़ा पैदा कर सकेंगे, अुसके लिअे ग्राहक तो तैयार हैं ही।

मैं शिसके लिये बहुत अुत्सुक हूँ कि विद्यार्थियोंकी दस्तकारीकी चीजोंसे शिक्षकका खर्चा निकल आना चाहिये, क्योंकि मेरा यह विश्वास है कि हमारे देशके करोड़ों बच्चोंको तालीम देनेका दूसरा कोअी रास्ता ही नहीं है। जब तक कि हमें सरकारी खजानेसे आवश्यक पैसा न मिल जाय, जब तक कि वाअिसरॉय फौजी खर्चको कम न कर दें, या अिसी तरहका कोअी कारगर जरिया न निकल आवे, तब तक हम रास्ता देखते हुअे बैठे नहीं रहेंगे। आप लोगोंको याद रखना चाहिये कि अिस प्राथमिक शिक्षामें सफाअी, आरोग्य और आहार-शास्त्रके प्रारंभिक सिद्धान्तोंका समावेश हो जाता है। अपना काम खुद कर लेने तथा घर पर अपने माँ-बापके काममें मदद देने वगैराकी शिक्षा भी अुन्हें मिल जायेगी। वर्तमान पीढ़ीके लड़कोंको न तो सफाअीका ज्ञान है, न वे यह जानते हैं कि आत्म-निर्भरता क्या चीज है; और शारीरिक स्वास्थ्य भी अुनका काफी कमजोर होता है। अिसलिअे अुन्हें मैं लाजिमी तौर पर गाने और बाजेके साथ कवायद वगैराके जरिये शारीरिक व्यायामकी भी तालीम दूंगा।

मुझ पर यह दोषारोपण किया जा रहा है कि मैं साहित्यिक शिक्षाके खिलाफ हूँ। नहीं, यह बात नहीं है। मैं तो केवल वह तरीका बता रहा हूँ, जिस तरीकेसे साहित्यिक शिक्षा देनी चाहिये। और मेरे 'स्वावलम्बन' के पहलू पर भी हमला किया गया है। यह कहा गया है कि प्राथमिक शिक्षा पर जहाँ हमें करोड़ों रुपये खर्च करने चाहियें, वहाँ हम अुलटे बच्चोंका ही शोषण करने जा रहे हैं। साथ ही, यह आशंका भी की जाती है कि अिस तरह बहुतसी शक्ति व्यर्थ चली जायगी। लेकिन अनुभवने अिस भयको गलत साबित कर दिया है और जहाँ तक बच्चे पर बोझ डालने या अुनका शोषण करनेका सवाल है, मैं कहूँगा कि बच्चे पर यह बोझ डालना क्या अुसे सर्वनाशसे बचानेके लिअे ही नहीं है? तकली बच्चोंके खेलनेके लिअे अेक काफी अच्छा खिलौना है। चूँकि यह अेक अुत्पादक खिलौना है, अिसलिअे

यह नहीं कहा जा सकता कि यह खिलौना नहीं है या खिलौनेसे किसी तरह कम है। आज भी बच्चे किसी हद तक अपने मां-बापकी मदद करते ही हैं। हमारे सेगांवके बच्चे खेती-किसानीकी बातें मुझसे कहीं ज्यादा जानते हैं, क्योंकि अुन्हें अपने मां-बापके साथ खेतों पर काम करना पड़ता है। लेकिन जहां बच्चेको अिस बातका प्रोत्साहन दिया जायगा कि वह काते और खेतीके काममें अपने मां-बापकी मदद करे, वहाँ अुसे असा भी महसूस कराया जायगा कि अुसका संबंध सिर्फ अपने मां-बापसे ही नहीं, बल्कि अपने गाँव और देशसे भी है और अुसे अुनकी भी कुछ सेवा करनी ही चाहिये। मैं मंत्रियोंसे कहूँगा कि खैरातमें शिक्षा देकर तो वे बच्चोंको असहाय ही बनायेंगे, लेकिन शिक्षाके लिअे अुनसे मेहनत करा कर वे अुन्हें बहादुर और आत्म-विश्वासी बनायेंगे।

यह पद्धति हिन्दू, मुसलमान, पारसी, अीसाअी सभीके लिअे अेक-सी लागू होगी। मुझसे पूछा गया है कि मैं धार्मिक शिक्षा पर कोअी जोर क्यों नहीं देता? अिसका कारण यह है कि मैं अुन्हें स्वावलम्बनका धर्म ही तो सिखा रहा हूँ, जो कि धर्मका अमली रूप है।

अिस तरह जो विद्यार्थी शिक्षित किये जायें, अुन्हें जरूरत पड़ने पर रोजी देनेके लिअे राज्य बँधा हुआ है। और जहाँ तक अध्यापकोंका प्रश्न है, प्रोफेसर शाहने लाजिमी सेवाका अुपाय सुझाया है। अिटली तथा अन्य देशोंके अुदाहरण देकर अुन्होंने अिसका महत्त्व बताया है। अुनका कहना है कि अगर मुसोलिनी अिटलीके तरुणोंको देशकी सेवाके लिअे प्रोत्साहित कर सकता है, तो हमें हिन्दुस्तानके तरुणोंको प्रोत्साहित क्यों नहीं करना चाहिये? हमारे नौजवानोंको अपना रोजगार शुरू करनेसे पहले अेक या दो सालके लिअे लाजिमी तौर पर अध्यापनका काम करना पड़े, तो अुसे गुलामी क्यों कहा जाय? क्या यह ठीक है? पिछले सत्रह

सालोंमें आजादीके हमारे आन्दोलनने जो सफलता प्राप्त की है, अुसमें नौजवानोंका हिस्सा कोअी कम नहीं है। अिसलिअे मैं अुनसे अपने जीवनका अेक साल राष्ट्र-सेवाके लिअे अर्पण करनेको कह सकता हूँ। अिस मकसदमें कानून बनानेकी भी जरूरत हुअी, तो वह जबरदस्ती नहीं होगी, क्योंकि हमारे प्रतिनिधियोंके बहुमतकी रजामन्दीके बगैर वह कभी मंजूर नहीं हो सकता।

अिसलिअे, मैं आपसे पूछूँगा कि शारीरिक परिश्रम द्वारा दी जानेवाली शिक्षा आपको रुचती है या नहीं? मेरे लिअे तो अिसे स्वावलम्बी बनाना ही अिसकी अुपयुक्त कसौटी होगी। सात सालके अन्तमें बालकोंको अैसा तो हो ही जाना चाहिये कि अपनी शिक्षाका खर्च वे खुद अुठा सकें और परिवारमें अनकमाअू पूत न रहें।

कॉलिजकी शिक्षा ज्यादातर शहरी है। यह तो मैं नहीं कहूँगा कि यह भी प्राथमिक शिक्षाकी तरह बिलकुल असफल रही है, लेकिन अिसका जो परिणाम हमारे सामने है, वह काफी निराशाजनक है। नहीं तो कोअी ग्रेज्युअेट भला बेकार क्यों रहे?

तकलीको मैंने निश्चित अुदाहरणके रूपमें सुझाया है, क्योंकि विनोबाको अिसका सबसे ज्यादा व्यावहारिक अनुभव है और अिस बारेमें कोअी अेतराज अुठाये जायँ, तो अुनका जवाब देनेके लिअे वे यहाँ मौजूद हैं। काकासाहब भी अिस बारेमें कुछ कह सकेंगे, हालांकि अुनका अनुभव व्यावहारिकके बनिस्बत सैद्धान्तिक अधिक है। अुन्होंने जनरल आर्मस्ट्रांगकी लिखी हुअी 'अेज्युकेशन फॉर लाअिफ' (जीवनकी शिक्षा) पुस्तककी तरफ और अुनमें भी खासकर 'हाथकी शिक्षा' वाले अध्याय पर खास तौरसे मेरा ध्यान खींचा है। स्वर्गीय मधुसूदन दास थे तो वकील, लेकिन अुनका यह विश्वास था कि अगर हम अपने हाथ-पैरोंसे काम न लेंगे, तो हमारा दिमाग कुन्द पड जायगा और अगर अुसने काम किया भी, तो वह शैतानका ही घर बनेगा। टॉल्सटॉयने भी हमें अपनी बहुतसी कहानियोंके द्वारा यही बात सिखायी है।

[भाषणके अन्तमें गांधीजीने स्वावलम्बी प्राथमिक शिक्षाकी अपनी योजनाके मूलभूत तत्त्व पर अुपस्थित जनोंका ध्यान आकर्षित करते हुअे कहा]

हमारे यहाँ साम्प्रदायिक झगड़े होते रहते हैं, लेकिन यह कोअी हमारी ही खासियत नहीं है। अिग्लैण्डमें भी अैसी ही लड़ाअियाँ हो चुकी हैं। और आज ब्रिटिश साम्राज्यवाद सारे संसारका शत्रु हो रहा है। अगर हम साम्प्रदायिक और आन्तरराष्ट्रीय संघर्षको बंद करना चाहें, तो हमारे लिअे यह जरूरी है कि जिस शिक्षाका मैंने प्रतिपादन किया है, अुससे अपने बालकोंको शिक्षित करके शुद्ध और दृढ़ आधारके साथ अिसकी शुरुआत करें। अहिंसासे अिस योजनाकी अुत्पत्ति हुअी है। संपूर्ण मद्य-निषेधके राष्ट्रीय निश्चयके सिलसिलेमें मैंने अिसे सुझाया है। लेकिन मैं कहता हूँ कि आमदनीमें कोअी कमी न हो और हमारा खजाना भरा हुआ हो, तो भी अगर हम अपने बालकोंको शहरी न बनाना चाहें, तो यह शिक्षा बड़ी अुपयोगी होगी। हमें तो अुनको अपनी संस्कृति, अपनी सभ्यता और अपने देशकी सच्ची प्रतिभाका प्रतिनिधि बनाना है, और यह अुन्हें स्वावलंबी प्राथमिक शिक्षा देनेसे ही हो सकता है। युरोपका अुदाहरण हमारे लिअे कोअी अुदाहरण नहीं है। क्योंकि वह हिंसामें विश्वास करता है और अिसलिअे अुसकी सब योजनाओं और अुसके कार्यक्रमोंका आधार भी हिंसा पर ही रहता है। रूसने जो सफलता हासिल की है, अुसको मैं कम महत्त्वपूर्ण नहीं समझता। लेकिन अुसका सारा आधार बल और हिंसा पर ही है। अगर हिन्दुस्तानने हिंसाके परित्यागका निश्चय किया है, तो अुसे जिस अनुशासनमें से होकर गुजरना पड़ेगा, अुसका यह शिक्षा-पद्धति अेक खास अंग बन जाती है। हमसे कहा जाता है कि शिक्षा पर अिग्लैण्ड लाखों रुपया खर्च करता है और यही हाल अमेरिकाका भी है, लेकिन हम यह भूल जाते हैं कि यह सब धन शोषणसे ही प्राप्त होता है। अुन्होंने शोषणकी कलाको विज्ञानका

रूप दे दिया है, जिससे अुनके लिअे अपने बालकोंको अैसी महँगी शिक्षा देना सभव हो गया है, जैसी कि वे आज दे रहे है। लेकिन हम तो शोषणकी बात न सोच सकते है और न अैसा करेंगे ही; अिसलिअे हमारे पास शिक्षाकी अिस योजनाके सिवा, जिसका आधार अहिंसा पर है, और कोअी मार्ग ही नही है।

हरिजनसेवक, ३०-१०-'३७

२

[प्रस्ताव पर हुअी चर्चामें कुछ आलोचनाओंका जवाब देते हुअे गाधीजीने कहा]

तकली कोअी अेक ही अुद्योग नही है, पर यह अेक अैसी चीज जरूर है, जो कि सब जगह दाखिल की जा सकती है। यह काम तो मन्त्रियोंके देखनेका है कि किन स्कूलको कौनसा अुद्योग अनुकूल पडेगा। जिनको यन्त्रोंका मोह है, अुन्हें मैं यह चेतावनी दे देना चाहता हूँ कि यन्त्रो पर जोर देनेसे मनुष्योंके यन्त्र बन जानेका पूरा-पूरा खतरा है। जो यन्त्र-युगमें बसना चाहते है, अुनके लिअे तो मेरी योजना व्यर्थ होगी। पर अुनसे मैं यह भी कहूँगा कि गाँवोंके लोगोंको यन्त्रो द्वारा जीवित रखना असंभव है। जिस देशमें ३० करोड जीवित यंत्र पडे हुअे है, वहाँ नये जड यन्त्र लानेकी बात करना निरर्थक है। डॉ० जाकिर हुसैनने कहा है कि आदर्शकी भूमिका चाहे जैसी हो, फिर भी यह योजना शिक्षाकी दृष्टिसे पुख्ता है। अुनका यह कहना ठीक नही। अेक बहन मुझसे मिलने आयी थी। वह कहती थी कि अमेरिकाकी 'प्रॉजेक्ट' पद्धति और मेरी पद्धतिमें बहुत बडा अन्तर है। पर मैं यह नही कहता कि मेरी योजना आपके गले न अुतरे, तब भी आप अुसे स्वीकार कर ही लें। अगर हमारे अपने आदमी न्यायसे काम करें, तो अिन स्कूलोंमें से गुलाम नही, किन्तु पूरे कारीगर निकलेंगे। लडकोंसे चाहे किसी भी किस्मकी मेहनत ली जाय, अुनको

कीमत प्रति घटा दो पैसे जितनी तो होनी ही चाहिये। पर आप लोगोका मेरे प्रति जो आदर-भाव है, जो लिहाज है, अुसके कारण आप कुछ भी स्वीकार न करे। मै मौतके दरवाजे पर बैठा हुआ हूँ। कोअी भी चीज जबरन लोगोसे स्वीकार करानेका मुझे स्वप्नमे भी विचार नही आता। अिस योजनाको तो पूर्ण और पुख्ता विचारके बाद ही स्वीकार करना चाहिये, जिससे कि अिसे कुछ ही समयमें छोड न देना पडे। मै प्रो० शाहकी अिस बातसें सहमत हूँ कि जो राज्य अपने बेकारोके लिअे व्यवस्था नही कर सकता, अुसकी कोअी कीमत नही। पर अुन्हे भीखका टुकडा देना यह कोअी बेकारीका अिलाज नही। मै तो अैसे हरअेक आदमीको काम दूंगा और अुसे पैसे नही दे सकूंगा तो खुराक दूंगा। अीश्वरने हमें खाने-पीने और मौज अुडानेके लिअे नही, बल्कि पसीना बहाकर रोजी कमानेके लिअे बनाया है।

हरिजनसेवक, ६-११-'३७

३

[दूसरे दिन कमेटी जिन निश्चयो पर पहुँची, अुनको परिषद्के सामने रखा गया, अुन पर बहस हुअी, और अन्तको अुन्हे स्वीकार कर लिया गया। कॉन्फरेन्समें जो प्रस्ताव पास हुअे वे यह है]

"१ अिस कॉन्फरेन्सकी रायमें देशके सब बच्चोके लिअे सात बरसकी मुफ्त और लाजिमी तालीमका अिन्तजाम होना चाहिये।

"२ तालीमका जरिया मातृभाषा होनी चाहिये।

"३ यह कॉन्फरेन्स महात्मा गाधीकी अिस तजवीजकी ताअीद करती है कि अिस तमाम मुद्दतमें शिक्षाका मध्यबिन्दु किसी किस्मकी दस्तकारी होना चाहिये, जिससे कुछ मुनाफा हो सके, और बच्चोमें जो कुछ अच्छे गुण पैदा करने है और अुनको जो शिक्षा-दीक्षा देना है, वह जहाँ तक हो सके अिसी केन्द्रीय दस्तकारीसे

सम्बन्ध रखती हो और अिस दस्तकारीका चुनाव बच्चोंकि मामूलका लिहाज रखकर किया जाय।

"४ यह कॉन्फरेन्स आशा करती है कि अिस तरीकेसे धीरे-धीरे अध्यापकोंकी तनख्वाहका खर्च निकल आयेगा।"

अिसके बाद, अुक्त प्रस्तावोंके आधार पर प्राथमिक शिक्षाके अध्ययन-क्रमकी योजना* तैयार करनेके लिअे नीचे लिखे सज्जनोंकी अेक कमेटी बनाअी गयी

डॉ० जाकिर हुसैन (अध्यक्ष)
श्री आर्यनायकम् (संयोजक)
श्री ख्वाजा गुलाम सैयदुद्दीन
श्री विनोबा भावे
श्री काकासाहब कालेलकर
श्री किशोरलाल मशरूवाला
श्री जे० सी० कुमारप्पा
श्री श्रीकृष्णदास जाजू
प्रो० के० टी० शाह
श्रीमती आशादेवी

कमेटी और भी नाम शामिल कर सकती है।

कमेटी बनानेके बाद नीचे लिखा प्रस्ताव पास हुआ.

"जो दरखास्त अिस कॉन्फरेन्सने कबूल की है, अुसके मुताबिक अेक अैसी योजना बनाअी जाय, जिससे कि मन्त्रियोंको दरखास्त पर अमल करनेमें मदद मिले। कमेटी अपनी योजनाको कॉन्फरेन्सके सभापतिके पास अेक महीनेके अन्दर भेज दे।"

हरिजनसेवक, ३०–१०–३७

---

* यह योजना हरिजनसेवकके ता० १८ तथा २५ दिसम्बर, १९३७ के अंकोंमें प्रकट हुअी है।

४

[गांधीजीने अध्यक्ष-पदसे परिषद्की कार्रवाअीको समाप्त करते हुअे कहा]

आप सब लोग जो यहां आये हैं और अिस काममें योग दिया है, अिसके लिअे मैं आपका आभारी हूँ। आप लोगोंसे मैं और भी अधिक सहयोगकी आशा रखूंगा, क्योंकि यह कॉन्फरेन्स तो अभी पहली ही है, और अैसी कअी कॉन्फरेन्सें हमें करनी पड़ेगी। मालवीयजी महाराजने मुझे चेतावनीका तार भेजा है, पर अुन्हें तो मैं तसल्ली दे सकता हूँ कि अिस कॉन्फरेन्समें कोअी अन्तिम फैसला नहीं हुआ है। यह तो शोधकोंकी परिषद् है, और हरअेक व्यक्तिको अपनी तजवीज रखने और आलोचना करनेके लिअे निमन्त्रण दिया गया है। किसी भी चीजको जल्दीमें जबरदस्तीसे करा डालनेका मेरा जरा भी विचार नहीं। राष्ट्रीय शिक्षा और शराबबन्दीकी कल्पनाअें असहयोगके जितनी पुरानी हैं। पर यह चीज अिस रूपमें तो मुझे आज देशकी बदली हुअी परिस्थितियोंमें सूझी है।

हरिजनसेवक, ६–११–'३७

१७

अेक कदम आगे

वर्धामें गत सप्ताहमें हुअी शिक्षा-परिषद्‌के कार्यकी रिपोर्ट दी जा चुकी है (प्रकरण १६ देखिये)। जनता और कांग्रेसी मन्त्रियोंके आगे मेरी योजना पेश करनेके काममें अिस परिषद्‌से अेक नया और अेक महत्त्वपूर्ण प्रकरण प्रारम्भ होता है। अितने सब मंत्री परिषद्‌में अुपस्थित थे, यह अेक शुभ चिन्ह था। परिषद्‌में खासकर जो आपत्तियाँ अुठाअी गअी और जो आलोचनायें हुअी, वे अिस विचार — मेरे पेश किये हुअे संकुचित अर्थमें भी — के विरोधमें थी कि शिक्षाको स्वावलम्बी होना चाहिये। परिषद्‌ने जो प्रस्ताव पास किये हैं, अुनमें बहुत सावधानीसे काम लिया गया है। अिसमें तो कोअी सन्देह नहीं कि परिषद्‌को अेक अज्ञात समुद्रमें नाव खेनी थी। अुसकी नजरके सामने पहलेका अेक भी संपूर्ण अुदाहरण नहीं था। मैंने जो विचार रखा है वह अगर निर्दोष होगा, तो अुस पर अवश्य अमल हो सकेगा। अन्तमें जिनको स्वावलम्बनवाले भाग पर श्रद्धा होगी, अुन्हें अिस विचारके अनुसार पाठशालायें चलाकर अिसकी सचाअीको साबित करके दिखाना है।

माध्यमिक अभ्यासक्रममें से अंग्रेजीको निकालकर बाकीके विषयोंकी पूरी प्राथमिक शिक्षा किसी भी अुद्योग द्वारा देनी चाहिये, अिस प्रश्नके विषयमें तो परिषद्‌में आश्चर्यजनक अेकमत था। लड़कोंके पूर्ण पुरुषत्वका और लडकियोंके पूर्ण स्त्रीत्वका विकास अुद्योग द्वारा करना है — यह तथ्य खुद ही स्कूलोंको कारखाने बन जानेसे बचाता है। क्योंकि लड़कों और लडकियोंको जिस अुद्योगकी शिक्षा मिलेगी,

अुसमें अमुक हद तक निष्णात होनेके अलावा अुन्हें जो अन्य विषय सीखने होंगे, अुनमें भी अुन्हें अुतनी ही योग्यता दिखानी पड़ेगी।

अिस योजना पर व्यावहारिक अमल किस तरह हो सकता है और लड़कों व लड़कियोंको अेकके बाद दूसरे वर्षमें क्या-क्या सीखना होगा, यह तो हम डॉ० जाकिर हुसैन समितिके परिश्रम परसे ही जान सकेंगे।

अेक अेतराज यह अुठाया गया है कि परिषद्में क्या-क्या प्रस्ताव पास करने हैं, यह तो पहलेसे ही निश्चित हो चुका था। अिस अेतराजमें जरा भी तथ्य नहीं है। सारे देशमें से शिक्षा-विशारदोंको चाहे जिस तरह चुनकर बुलाना और अेक अैसी योजना पर, जो अुनके अनुसार निःसन्देह क्रांतिकारी योजना है, अपना मत अेकाअेक प्रदर्शित करनेके लिअे अुनसे कहना वस्तुतः असंभव था। अिसलिअे अैसे ही व्यक्तियोंको निमंत्रण भेजा गया था, जिन्हें कि शिक्षकके रूपमें अुद्योग-शिक्षणका कुछ अनुभव है। राष्ट्रीय शिक्षाका कार्य करनेवाले मेरे साथी अिस नअी कल्पनाको अिस तरह सहानुभूतिपूर्वक ग्रहण कर लेंगे, यह खयाल तो स्वयं मुझे भी नहीं था। यह योजना जब जाकिर हुसैन समिति द्वारा साकार और अधिक पूर्ण रूपमें जनताके आगे आयेगी, तब शिक्षा-शास्त्रियोंके विशाल वर्गको अिस पर विचार करनेके लिअे जरूर निमंत्रण दिया जायगा। जिन शिक्षा-शास्त्रियोंके पास सहायता दे सकनेवाली कुछ सूचनाअें हों, अुनसे मेरी प्रार्थना है कि वे कृपया अुन सूचनाओंको कमेटीके मंत्री श्री आर्यनायकम्‌के पास वर्धाके पतेसे भेज दें।

परिषद्‌में अेक वक्ताने जोर देकर यह कहा था कि छोटे-छोटे बच्चोंको तालीम देनेका काम पुरुषोंकी अपेक्षा स्त्रियां ज्यादा अच्छा कर सकती हैं, और कुमारियोंकी अपेक्षा मातायें और भी अच्छी तरह कर सकती हैं। अेक दूसरी दृष्टिसे भी प्रो० शाहकी लाजिमी सेवाकी

योजनामें आनेकी अनुकूलता अुन्हें अधिक मिलती है। जिन देशभक्त महिलाओंके पास फुरसतका समय हो, अुनके लिअे अेक सबसे बड़े सत्कार्यमें अपनी सेवा अर्पण करनेका यह बड़ा सुन्दर अवसर है, जिसमें सन्देह नहीं। लेकिन वे अगर तैयार हों, तो अुन्हें पूरी प्राथमिक शिक्षा लेनी पड़ेगी। आजीविकाकी तलाशमें लगी हुअी गरजमन्द बहनें अिस कामको अेक धन्धा मानकर अिसमें आनेका विचार करती हों, तो अुससे कोअी मतलब निकलनेका नहीं। वे अगर अिस योजनामें आना चाहती हैं, तो अुन्हें शुद्ध सेवा-भावसे ही अिसमें पड़ना चाहिये और अिसे अपना जीवन-कार्य बना लेना चाहिये। वे यदि स्वार्थ-वृत्तिसे अिसमें पड़ेंगी, तो अिस काममें सफल नहीं हो सकेंगी और अुन्हें अत्यन्त निराश होना पड़ेगा। अगर भारतवर्षकी नस्कारी महिलायें गाँवोंके लोगोंके साथ — और वह भी अुनके बच्चों द्वारा — अैक्य सायें, तो वे भारतवर्षके गाँवोंके जीवनमें अेक शान्त और सुन्दर क्रांति कर सकती हैं। क्या वे अिसके लिअे तत्पर होंगी?

हरिजनसेवक, ६–११–'३७

तीसरा भाग : वर्धा-शिक्षा-योजना

१८

'पश्चिमका अनुकरण नहीं'

[वर्धा-शिक्षा-परिषद् द्वारा पास किये हुअे प्रस्तावों (देखिये प्रकरण १६ में) का अमल सरल बने और आगेके कदम अुठाना सुगम हो, अिस खातिर अेक व्यवस्थित शिक्षा-योजना तैयार करनेके लिअे यानी 'अिन प्रस्तावोंके आधार पर प्रांतोंके मंत्री परिषद्के प्रस्तावोंका अमल कर सकें, अभ्यासक्रमकी अैसी योजना तैयार करनेके लिअे' परिषद्ने अेक कमेटी बनाअी थी। अिस कमेटीने डेढ़-दो महीनेमें अपनी रिपोर्ट प्रकाशित की थी और अुसके थोड़े समय बाद सिफारिशके तौर पर अेक विस्तृत अभ्यासक्रम बनाकर देशके सामने पेश किया था। अिस रिपोर्ट और अभ्यासक्रम दोनोंको मिलाकर 'बुनियादी राष्ट्रीय शिक्षा' का नाम दिया गया था। अुसे पुस्तकके रूपमें छपाया गया था। गांधीजीने अुसकी जो प्रस्तावना लिखी थी, वह नीचे दी गअी है। अिसका शीर्षक गांधीजीने प्रस्तावनाके अन्तमें जो नीचेका वाक्य कहा था, अुस परसे दिया गया है "किसी भी दृष्टिसे अिसे हम पश्चिमका अनुकरण नहीं कह सकते।" अिस वाक्यके सम्बन्धमें यहाँ अितना कह देना जरूरी है कि वर्धा-शिक्षा-परिषद्में अैसी अेक चर्चा चली थी कि क्या गांधीजीका यह विचार नया है? या अिससे मिलते-जुलते विचार पश्चिमके किसी शिक्षा-शास्त्रीने पेश किये हैं? गांधीजीने नीचेकी प्रस्तावनामें अिस प्रश्न सम्बन्धी अपनी कल्पनाके बारेमें कुछ अिशारा किया है, और अपने विचारके खास मुद्दे स्पष्ट कर दिये हैं। —सं०]

मुझसे कहा गया है कि अिस पुस्तककी पहली (अंग्रेजी) अेक हजार प्रतियाँ बिक चुकी हैं। यह हकीकत ही अिस बातको साबित करती है कि डॉ० जाकिर हुसैनकी कमेटीने जिसे "बुनियादी राष्ट्रीय शिक्षा" कहा है, वह हिन्दुस्तानमें और हिन्दुस्तानके बाहर भी काफी दिलचस्पी पैदा कर रही है। लेकिन अिसे "देहाती दस्तकारियों द्वारा दी जानेवाली ग्रामीण राष्ट्रीय शिक्षा" कहना ज्यादा सही होगा, यद्यपि यह नाम अुतना आकर्षक न होगा। 'ग्रामीण' कहनेसे अुच्च कहलानेवाली या अंग्रेजी शिक्षा अुसमें नहीं आती। 'राष्ट्रीय' शब्द आज सत्य और अहिंसाको सूचित करता है। 'देहाती दस्तकारियों द्वारा दी जानेवाली शिक्षा' से मतलब है कि अिस योजनाके बनानेवाले शिक्षकोंसे यह आशा की जाती है कि वे देहाती बच्चोंको अुनके अपने ही गाँवोंमें किसी चुनी हुअी देहाती दस्तकारीके जरिये अैसी शिक्षा देंगे, जिससे अुनकी सभी शक्तियोंका पूर्ण विकास होगा और यह सारी शिक्षा अेक अैसे वातावरणमें दी जायगी, जो अूपरसे लादे गये बन्धनों और बाधाओंसे मुक्त होगा। अिस दृष्टिसे सोचने पर यह योजना देहाती बच्चोंकी शिक्षामें अेक क्रांति ही है। किसी भी दृष्टिसे अिसे हम पश्चिमका अनुकरण नहीं कह सकते। यदि पाठक अिस हकीकतको अपने ध्यानमें रखेंगे, तो वे अिस नअी योजनाको ज्यादा अच्छी तरह समझ सकेंगे। क्योंकि अिसे तैयार करनेमें कुछ अच्छेसे अच्छे शिक्षा-शास्त्रियोंने अपनी पूरी शक्ति लगाअी है।

सेगांव, २८–५–'३८

१६

'दिमाग ठीक है'

[वर्धा-शिक्षा-योजनाके प्रकाशित होनेके बाद अुसके भाष्यके रूपमें आचार्य कृपलानीने अंग्रेजीमें 'दि लेटेस्ट फेड' (ताजा पागलपन) जैसा विनोदपूर्ण किन्तु आकर्षक नाम देकर अेक पुस्तक प्रकाशित की थी। गांधीजीने अुसकी जो प्रस्तावना लिखी है, वह नीचे दी गअी है।
—सं०]

यह पुस्तक मैं शुरूसे अन्त तक देख गया हूँ। अनुभवमें आनेवाली अेक कमी अिससे पूरी होती है। जिसे मेरा 'ताजा पागलपन' कहा गया है—और वह भी शिक्षाके क्षेत्रमें!—अुसके बारेमें जिज्ञासुओंके मनमें जो अनेक शंकायें पैदा होती हैं, अिस पुस्तकमें अुन सबका जवाब देनेका प्रयत्न किया गया है। आचार्य कृपलानीने कअी वर्ष तक शिक्षा-शास्त्रीके रूपमें काम किया है। अुन्होंने अिस पुस्तकमें यह बतानेका प्रयत्न किया है कि अिस 'पागल' का दिमाग बिलकुल ठीक है।

२०

योजनाका हृदय

[डॉ० जॉन डी० वोअर अेक अमेरिकन पादरी हैं और दक्षिण भारतकी अेक शिक्षा-संस्थाके संचालक हैं। अुनकी और गांधीजीकी बातचीतका वर्णन श्री महादेव देसाअीके 'वर्धाकी शिक्षा-योजना' नामक लेखमें यों दिया गया है। —सं०]

डॉ० डी० वोअरने कहा कि यह शिक्षा-योजना तो अुन्हें बहुत ही अच्छी लगी है, क्योंकि अुसकी जड़में अहिंसा है। पर अुन्हें यह देखकर आश्चर्य हुआ कि पाठ्यक्रममें अहिंसाको अितना कम स्थान दिया गया है।

"आपको जिस वजहसे वह अितनी पसन्द आअी, वह बिलकुल ठीक है," गांधीजीने कहा, "किन्तु सारा पाठ्यक्रम अहिंसा पर केन्द्रित नहीं किया जा सकता। यही जानना काफी है कि वह अेक अहिंसक दिमागसे निकली है। पर अुसमें यह नहीं मान लिया गया है कि जो अिसका स्वीकार करेंगे, वे अहिंसाको भी मानेंगे ही। अुदाहरणार्थ समितिके सारे सदस्य अहिंसाको जीवन-सिद्धान्तके रूपमें नहीं मानते। जैसे, अेक निरामिष-भोजी आदमीका अहिंसक होना जरूर नहीं है, वह स्वास्थ्यके कारण भी निरामिष-भोजी हो सकता है, अुसी प्रकार यह जरूरी नहीं कि जो भी कोअी अिस योजनाको पसन्द करे, अुन सबका अहिंसामें विश्वास होना ही चाहिये।"

डॉ० वोअर—"मैं कुछ अैसे शिक्षा-शास्त्रियोंको जानता हूँ, जो अिस योजनाको महज अिसीलिअे स्वीकार नहीं करेंगे कि अुसका आधार अहिंसात्मक जीवन-दर्शन पर है।"

गाधीजी — "मै जानता हूँ। पर यो तो मै भी अैसे कभी नेताओको जानता हूँ, जो खादीको अिसीलिअे ग्रहण नही करते कि अुसका आधार मेरा जीवन-दर्शन है। पर अिसका क्या अिलाज है? अहिंसा तो सचमुच अिस योजनाका हृदय है और यह मै वडी आसानीसे सिद्ध कर सकता हूँ। पर मै जानता हूँ कि यदि मै अैसा करूँ, तो अुसके विषयमे लोगोका अुत्साह बहुत कम हो जायगा। आज तो जो लोग अिस योजनाको पसन्द करते है, वे अिस तथ्यको मानते है कि करोडो लोग जिस देशमें भूखो मर रहे हो, वहाँ किसी दूसरी तरहसे बच्चोको पढा ही नही सकते। और यदि अिस चीजको जारी कर दिया जाय, तो देशमें अपने आप अेक नअी अर्थ-व्यवस्था अुत्पन्न हो जायगी। मेरे लिअे तो अितना ही काफी है। जैसे कि काग्रेसवाले अहिंसाको अपना जीवन-सिद्धान्त माननेके बजाय अुसे स्वाधीनता-प्राप्तिकी नीति भी मान लेते है, तो मै अुतने ही से सतोष मान लेता हूँ। अगर सारा हिन्दुस्तान अुसे अपना ध्येय या जीवनादर्श मान ले, तो हम आज ही यहाँ प्रजासत्तात्मक राज्य कायम कर सकते है।"

डॉ० वीअर — "मै समझ गया। पर अेक बात और है, जो मेरी समझमें नही आ रही है। मै अेक समाजवादी हूँ और अहिंसामें भी मेरा विश्वास है। अेक अहिंसावादीकी हैसियतसे तो आपकी योजना मुझे बहुत पसन्द है। पर जब मै समाजवादीकी दृष्टिसे अुस पर विचार करता हूँ, तो अैसा लगता है कि वह हिन्दुस्तानको ससारसे अलग कर देगी, जब कि हमे तो ससारके साथ घुल-मिल जाना है। और यह बात समाजवाद जितनी अच्छी तरहसे कर सकता है, अुतना और कोअी चीज नही कर सकती।"

"मुझे तो अिसमें कोअी कठिनाअी नही मालूम पडती," गाधीजीने कहा, "क्योकि हम कोअी सारी दुनियासे नाता थोडे ही तोडना चाहते है। हम तो सभी राष्ट्रोके साथ खुला आदान-प्रदान रखेंगे, लेकिन जबरदस्तीसे लादा हुआ आदान-प्रदान तो बन्द करना ही

पड़ेगा। हम यह नहीं चाहते कि कोअी हमारा शोषण करे, न हम खुद ही किसी दूसरे राष्ट्रका शोषण करना चाहते हैं। अिस योजना द्वारा तो हम सब बालकोंको अुत्पादक बनाकर सारे राष्ट्रकी शक्ल बदल देना चाहते हैं, क्योंकि अिससे हमारा सारा सामाजिक ढाँचा ही बदल जायगा। लेकिन अिसका यह मतलब नहीं है कि हम सारी दुनियासे ही नाता तोड़कर सबसे अलग हो जाना चाहते हैं। अैसे राष्ट्र भी होंगे ही, जो कुछ चीजें अपने यहाँ पैदा न कर सकनेके कारण दूसरे राष्ट्रोंके साथ आदान-प्रदान करना चाहेंगे। अिसमें कोअी शक नहीं कि अुन्हें अुन चीजोंके लिअे दूसरे राष्ट्रों पर अवलंबित रहना पड़ेगा। लेकिन जो राष्ट्र अुनकी जरूरतें पूरी करें, अुन्हें अुनका शोषण नहीं करना चाहिये।"

"लेकिन अगर आप अपने जीवनको अिस हद तक सादा बना लेंगे कि दूसरे देशोंकी बनी किसी चीजकी आपको जरूरत ही न हो, तो आप अपनेको अुनसे अलग कर लेंगे, जब कि मैं चाहता हूँ कि आप अमेरिकाके लिअे भी जिम्मेदार हों।"

"अमेरिकाके लिअे जिम्मेदार तो हम अिसी तरह हो सकते हैं कि न तो हम किसीका शोषण करेंगे और न अपना ही शोषण किसीको करने देंगे। क्योंकि जब हम अैसा करेंगे, तो अमेरिका भी हमारा अनुसरण करेगा, और तब हमारे बीच खुले आदान-प्रदानमें कोअी कठिनाअी नहीं होगी।"

"लेकिन आप तो जीवनको सादा बनाकर अुद्योगीकरणको खतम कर देना चाहते हैं।"

"अगर मैं ३ करोड़के बजाय तीस हजार आदमियोंसे काम करा कर अपने देशकी सारी जरूरतें पूरी कर सकूँ, तो मुझे अुसमें कोअी आपत्ति न होगी, बशर्ते कि अुसके कारण ३ करोड़ आदमी बेकार और काहिल न बन जायें। मैं यह जानता हूँ कि समाजवादी लोग

यन्त्रीकरणको अिस हद तक ले जायेंगे कि जिससे रोज अेक-दो घंटेसे ज्यादा काम करनेकी जरूरत न रहे। लेकिन मैं अैसा नहीं चाहता।"

"क्यों? अिससे तो अुन्हें अवकाश मिलेगा।"

"लेकिन अवकाश किस लिअे? क्या हॉकी खेलनेके लिअे?"

"न सिर्फ अिसीलिअे, बल्कि अुत्पादक और अुपयोगी दस्तकारियों आदि जैसे कामोंके लिअे भी।"

"अुत्पादक और अुपयोगी दस्तकारियोंमें लगनेके लिअे तो मैं अुनसे कह ही रहा हूँ। लेकिन यह अुन्हें आठ घंटे रोज अपने हाथसे काम करके करना होगा।"

"तब तो निश्चय ही आप समाजको अैसी स्थिति पर नहीं ले जाना चाहते, जिसमें हरअेकके घरमें रेडियो हो और हरअेकके पास अपनी मोटर गाड़ी रहे। अमेरिकन राष्ट्रपति हूवरने यह तजवीज सोची थी। वह तो चाहते थे कि हरअेक घरमें अेक ही नहीं, दो रेडियो हों और दो-दो मोटर गाड़ियाँ रहें।"

"अगर अितनी अधिक मोटरें हमारे पास हो जायँ, तो फिर पैदल घूमने-फिरनेके लिअे बहुत कम जगह रह जायगी," गांधीजीने कहा।

"मैं आपसे सहमत हूँ। हमारे यहाँ हर साल ही मोटर-दुर्घटनाओंसे लगभग ४० हजार आदमी मरते हैं, और अिससे तिगुनोंके अंग-भंग हो जाते हैं।"

"वह दिन देखनेके लिअे मैं जीवित नहीं रहूँगा, जब हिन्दुस्तानके हरअेक गाँवमें रेडियो पहुँच जायेंगे।"

"पंडित जवाहरलालके ध्यानमें, मालूम होता है, पैदावारकी अिफरातकी बात रहती है।"

"मैं जानता हूँ। पर अिफरातसे क्या आशय है? लाखों टन गेहूँ नष्ट कर देनेकी क्षमता तो नहीं, जैसा कि आप लोग अमेरिकामें करते हैं?"

"वह पूँजीवादका प्रतिशोध है। वे अब गेहूँ नष्ट नहीं करते, बल्कि गेहूँ पैदा न करें अिसलिअे अुन्हें पैसे दिये जा रहे हैं। अब तो लोग वहाँ अेक-दूसरे पर अंडे फेंककर मन-बहलाव करते हैं, क्योंकि अंडोंकी कीमत अब गिर गयी है।"

"यही तो हम नहीं चाहते। अिफरातसे अगर आपका यह मतलब है कि हरअेक आदमीके पास खाने-पीने और पहननेके लिअे पर्याप्त भोजन और वस्त्र हों, अपनी बुद्धिको शिक्षित और सुसंस्कृत बनानेके लिअे काफी साधन हों, तो मुझे संतोष हो जाना चाहिये। पर जितना मैं हजम कर सकता हूँ, अुससे ज्यादा भोजन पेटमें ठूँसना पसन्द नहीं करूँगा, और जितनी चीजोंका मैं अच्छी तरह अुपयोग कर सकूँ, अुनसे ज्यादा चीजें मुझे रखनी ही नहीं चाहिये। पर मैं हिन्दुस्तानमें न गरीबी या मुफलिसी चाहता हूँ, न मुसीबत और न गन्दगी।"

"लेकिन पंडित जवाहरलालने तो अपनी 'आत्मकथा' में यह लिखा है कि आप दरिद्रनारायणकी पूजा करते हैं और दरिद्रताकी खातिर ही आप दरिद्र रहनेकी सराहना करते हैं।"

"मुझे मालूम है," गांधीजीने हँसते हुअे कहा।

हरिजनसेवक, १२-२-'३८

२१

नअी तालीमका [illegible]

१

[नये कायम हुअे हिन्दुस्तानी तालीमी संघकी बैठक मअी १९३८के पहले हफ्तेमें वर्धामें हुअी थी। अुसके सामने गांधीजीने नअी तालीमका रहस्य और अुसका ध्येय समझाते हुअे जो प्रवचन किया था, अुसकी श्री महादेव देसाअी द्वारा दी हुअी रिपोर्टमें से नीचेका हिस्सा लिया गया है। —सं०]

जब अिस नअी शिक्षा योजनाका सवाल अुठाया गया, तब मुझे आत्मविश्वास था, पर अब वह नही रहा। पहले मेरे शब्दोमें काफी शक्ति थी, पर अब मुझे लगता है कि वह शक्ति चली गअी है। अिस अविश्वासके कोअी बाह्य कारण नही, बल्कि आतरिक कारण है। यह बात नही कि मेरी बुद्धि मूर्च्छित हो गअी है। मेरी अवस्थाके अनुसार बुद्धि ठीक ही काम कर रही है। यह भी नही कि अहिंसा परसे मेरी श्रद्धा अुठ गअी है; वह तो बल्कि अब पहलेसे भी ज्वलत हो गअी है। फिर भी अिस क्षण तो मै अपना आत्मविश्वास खो चुका हूँ। अिसलिअे मै आपसे यह नही कहूँगा कि आप बगैर सोचे-समझे मेरी बातोको मान ले। आप तो सिर्फ अुन्ही बातोको स्वीकार करे, जो आपके गले अुतर सके और आपको सन्तोष दिला सके। लेकिन मुझे पूरा भरोसा है कि हम अगर दो स्कूल भी ठीक तरहसे चला सके, तो मै मारे हर्षके नाच अुठूँगा।

[सच्ची पद्धति कौनसी है, यह अुन्होने अपने प्रवचनके शुरूमें अिस तरह समझाया था]

हमें तो अिस अध्यापन-मदिरको अेक अैसा विद्यालय बना देना है, जिसके जरिये हम आजादी हासिल कर सके और अपनी तमाम

झगड़ियोंको, जिनमें कि हमारे कौमी झगडे भी है, हमेशाके लिये मिटा सके। जिनके लिये हमें अपना सारा ध्यान अहिंसा पर केन्द्रित करना होगा। हिटलर और मुसोलिनीके स्कूलोंका मूल अुद्देश्य हिंसा है। पर हमारा अुद्देश्य तो कांग्रेसके अनुसार अहिंसा है। जिससे हमें अपनी तमाम समस्याओंको अहिंसाके जरिये ही हल करना है। अपने गणितको, अपने विज्ञानको, अपने जितिहासको हम केवल अहिंसाकी दृष्टिसे देखेंगे और जिन विषयोंसे सम्बन्धित समस्यायें अहिंसाके ही रंगमें रँगी होंगी। तुर्किस्तानकी सुप्रसिद्ध महिला बेगम हालिदा हानूमने जब जामिया मीलिया जिस्लामियामें अपने भाषण दिये थे, तब मैंने कहा था कि जितिहास अभी तक राजाओंका और अुनके युद्धोंका वर्णन मात्र रहा है, पर भविष्यमें जो जितिहास बनेगा वह मानवताका होगा। वह जितिहास अहिंसाका ही हो सकता है, और है। फिर हमें शहरोंके अुद्योग-धन्धोंको छोड़कर ग्राम-अुद्योगोंकी ओर सारा ध्यान देना होगा। मतलब यह कि अगर हम अपने ७ लाख गाँवोंको जीवित रखना चाहते हैं, तो हमें गाँवोंकी दस्तकारियोंका पुनरुद्धार करना होगा। और आप यकीन रखें कि अगर जिन अुद्योगोंके जरिये हम शिक्षा दे सकें, तो हम अेक क्रांति पैदा कर सकते हैं। हमें अपनी पाठ्यपुस्तकें भी जिसी अुद्देश्यको सामने रखकर तैयार करनी होंगी।

मैं चाहता हूँ कि मैं जो कुछ कहता हूँ, अुस पर आप अच्छी तरह गौर करें और जो बात आपको ठीक न जँचे, अुसे छोड़ दें। मेरी बातें हमारे मुसलमान भाअियोंको ठीक न जँचें, तो वे अुन्हें खुशीसे नामंजूर कर सकते हैं। मैं जो अहिंसा चाहता हूँ, वह सिर्फ अंग्रेजोंके साथके युद्ध तक ही सीमित नहीं है। मैं चाहता हूँ कि वह हमारे तमाम भीतरी सवालों और समस्याओं पर भी लागू हो। सच्ची और सक्रिय अहिंसा तो तभी होगी, जब कि वह हिन्दू और मुसलमानोंकी जीवित अेकताको जन्म दे सकेगी — अैसी अेकता नहीं, जो अपना

आधार किसी आपसी भय पर रखती हो, मसलन्, हिटलर और मुसोलिनीके दरमियान हुअी सन्धि या पैक्ट।

हरिजनसेवक, ७–५–'३८

२

[वर्धासे छपनेवाले हिन्दुस्तानी तालीमी संघके मासिक 'नअी तालीम' को भेजा हुआ गांधीजीका सन्देश। —सं०]

नअी तालीमका नयापन समझना जरूरी है। पुरानी तालीममें जितना अच्छा है, वह नअी तालीममें रहेगा, लेकिन अुसमें नयापन काफी होगा। नअी तालीम अगर सचमुच नअी होगी, तो अुसका नतीजा (परिणाम) यह होना चाहिये कि हमारे अन्दर जो मायूसी (निराशा) है, अुसकी जगह अुम्मीद होगी, कंगालियतकी जगह रोटीका सामान तैयार होगा, बेकारीकी जगह धन्धा होगा, झगड़ोंकी जगह अेका होगा, और हमारे लड़के-लड़कियाँ लिखना-पढ़ना जानेंगे और साथ-साथ हुनर भी जानेंगे, जिसकी मारफत वे अक्षरज्ञान हासिल करेंगे।

अुतमानजअी, १४–१०–'३८
हरिजनसेवक, २८–१–'३९

३

[पूनामें अक्तूबर १९३९ में हुअी बुनियादी तालीम परिषद्[*] को भेजा हुआ सन्देश। —सं०]

मेरी अुम्मीद है कि पूना-परिषद् नअी तालीमके नयेपनको पूरी तरह नजरमें रखकर ही चलेगी। जैसे रसायनी प्रयोगमें हम कम-ज्यादा नहीं कर सकते हैं, अैसे ही अिस प्रयोगमें समझना चाहिये।

---

[*] अिस परिषद्का आवश्यक विस्तृत वर्णन अंग्रेजी तथा हिन्दीमें One Step Forward — 'अेक कदम आगे' नामसे प्रकाशित हुआ

नअी तालीमका नयापन यह है कि कुछ भी तालीम ग्राम-अुद्योगकी मारर्फत दी जाय। मामूली तालीममे ग्राम-अुद्योग बढानेसे काम नहीं होता है।

सेगांव, २८-१०-'३९

४

['प्रश्नोत्तरी' नामक लेखमें 'रचनात्मक कार्य करनेवालोंमे क्या क्या गुण होने चाहिये?' अिस प्रश्नका जवाब देते हुअे नअी तालीमके बारेमे गांधीजीने कहा]

नअी तालीमके बिना हिन्दुस्तानके करोडो बालकोंको शिक्षण देना लगभग असंभव है, यह चीज सर्वसामान्य हो गअी कही जा सकती है। अिसलिअे ग्रामसेवकको अुसका ज्ञान होना ही चाहिये। अुसे नअी तालीमका शिक्षक होना चाहिये। अिस तालीमके पीछे प्रौढ-शिक्षण अपने आप चला आयेगा। जहाँ नअी तालीमने घर कर लिया होगा, वहाँ बच्चे ही माता-पिताके शिक्षक बन जानेवाले हैं। कुछ भी हो, ग्रामसेवकके मनमें प्रौढ-शिक्षण देनेकी लगन होनी चाहिये।

हरिजनसेवक, १७-८-'४०

है। हरअेककी कीमत रु० १-१२-० है। दोनों पुस्तकें तालीमी संघ, वर्धासे मिल सकती है। हरिजनसेवक (१७-८-'४०)में लिखते हुअे गांधीजीने कहा था "जो लोग तालीममें दिलचस्पी रखते हैं, अुन्हें अिसकी अेक प्रति रखनी ही चाहिये। मेरे लिअे तो यह बडी तसल्लीकी बात है कि मेरी यह सबसे आखिरी कोशिश, हालांकि शायद मेरी यह आखिरी कोशिश नहीं होगी, करीब-करीब दुनियाभरको पसन्द आअी है। अेक सालका लेखा देखकर अिस तजरबेकी आअिन्दा तरक्की बडी होनहार मालूम पडती है।" —स०

२२

अेक मंत्रीका स्वप्न

"अगर आप प्रांतीय सरकारों और लोगोंको अिस आशयका संदेश या सूचना दे सकें कि तमाम स्कूलोंमें लड़कों और लड़कियोंके लिअे कताअी और बुनाअी लाजिमी कर देनी चाहिये, तो मेरा विश्वास है कि थोड़े ही समयमें स्कूलोंके बच्चे खुद अपना बनाया हुआ कपड़ा पहनने लग जायेंगे। यह पहला कदम होगा। आपके आदर्शोंके विषयमें मेरी आज भी वैसी ही श्रद्धा है और मैं वह दिन देखनेकी आशा करता हूं, जब हरअेक घर अपनी जरूरतका कपड़ा खुद बना लेगा, और हरअेक गांव भी अपनी ग्राम-अुद्योग तथा शिक्षाकी योजनाओंके अनुसार केवल कपड़ेमें ही नहीं, बल्कि हरअेक जरूरी चीजके सम्बन्धमें स्वावलम्बी बन जायगा। आपकी तरह मैं भी यह मानता हूं कि अिस देशमें सच्चा स्वराज्य तभी स्थापित हो सकता है, जब कि प्रांतीय सरकार अथवा भारत-सरकारका बजट — जिसके पासे मिलानेके लिअे चालाकियां और करामातें करनी पड़ती हैं — ग्रामवासी जनताके बजटसे मेल खा जायेगा।"

अुपर्युक्त पत्र अेक कांग्रेसी मन्त्रीने लिखा है। मेरे पास यदि सर्वस्वाधीन सत्ता हो, तो मैं कम-से-कम प्राअिमरी स्कूलोंमें तो कताअीको अवश्य लाजिमी कर दूं। जिस मन्त्रीने श्रद्धा हो अुसे अैसा करना चाहिये। हमारे स्कूलोंमें कितनी ही बेकार चीजोंको लाजिमी बना दिया जाता है। तब अिस अति अुपयोगी कलाको लाजिमी क्यों न बना दिया जाये? लेकिन लोकतन्त्रमें किसी चीजको, यदि वह विस्तृत रूपमें लोकप्रिय न हो, लाजिमी नहीं बना सकते। अिस तरह लोकतन्त्रमें अनिवार्यता नामकी ही होती है। वह

आलस्यको तो भुडा देती है, पर लोगोंकी अिच्छा पर जोर-जबरदस्ती नही करती। अिस प्रकारकी अनिवार्यता शिक्षणकी अेक क्रिया है। मैं अिससे अेक हल्का रास्ता सुझाता हूँ। सबसे अच्छे कातनेवाले लडके या लडकीको अिनाम दिलाना चाहिये। अिस प्रतिस्पर्धासे सब नही तो अधिकांश अिसमें भाग लेनेके लिअे प्रेरित होंगे। किसी भी योजनामें यदि शिक्षकोंकी खुद श्रद्धा न हो, तो वह सफल होनेकी नही। प्रांतीय सरकारें अगर बुनियादी तालीमको स्वीकार कर ले, तो कताअी आदि शिक्षाक्रमके केवल अंग ही नहीं, बल्कि शिक्षाके वाहन बन जायेंगे। बुनियादी तालीम अगर जड पकड ले, तो हमारी अिस पीडित भूमिमें खादी अवश्य सार्वत्रिक और अपेक्षाकृत सस्ती हो सकती है।

हरिजनसेवक, २१-१०-'३९

२३

तकली बनाम खिलौने

[नीचेका प्रश्नोत्तर डॉ० सुशीला नय्यरके 'सेवाग्राम खादी-यात्रा' नामक लेखसे लिया गया है। वर्धा-पद्धतिमें क्रिया या प्रवृत्ति अुत्पादक होनी चाहिये, खिलौने वगैरा जैसी सिर्फ क्रीडात्मक नही — यह अेक महत्त्वका सिद्धान्त अिन प्रश्नोत्तरमें समाया हुआ है। और वह अिस पद्धतिकी अेक बहुत बडी नवीनता और विशेषता है। — स०]

प्र० — बुनियादी तालीमकी योजनामें तकली जो दाखिल की गअी है, वह आर्थिक अर्थात् स्वाश्रयके हेतुसे या शिक्षाकी दृष्टिसे ही?

अु० — बुनियादी तालीमके कार्यक्रममें रखी हुअी किसी भी चीजके पीछे केवल अेक ही हेतु हो सकता है, और वह है शिक्षाका। बुनियादी तालीमका हेतु हाथकी कारीगरीके वाहन द्वारा बालकोंका शारीरिक, बौद्धिक और नैतिक विकास करनेका है। फिर भी मैं यह मानता हूँ कि यदि कोअी योजना शिक्षाकी दृष्टिसे ठोस हो और

अुसका कुशलतासे अमल हो, तो आर्थिक दृष्टिसे भी वह ठोस साबित होगी। अुदाहरणार्थ हम अपने बालकोंको मिट्टीके खिलौने बनाना सिखायें, जो बादमें तोड़ दिये जायें। अिससे भी अुनकी बुद्धिका विकास तो होगा ही। पर अिस तरह काम करनेमें अेक बहुत बड़े महत्त्वके नैतिक सिद्धान्तकी अवगणना होती है। वह यह कि मनुष्यकी मेहनत और सामग्री कभी भी व्यर्थ नष्ट नहीं होनी चाहिये या अुनका अुपयोग अनुत्पादक तरीकेसे नहीं होना चाहिये। जीवनका हरअेक क्षण अुपयोगी तरीकेसे बिताना चाहिये, अिस सिद्धान्त पर जोर देना ही अुत्तम नागरिक तैयार करनेवाली शिक्षा है; और अैसी बुनियादी तालीम अनायास ही स्वाश्रयी और स्वयपूर्ण बन जाती है।

हरिजनबन्धु, १९–५–'४०

२४

अिसमें अंग्रेजीको स्थान नहीं

['देहातकी बनाम शहरकी' नामक टिप्पणी]

अेक शिक्षाशास्त्री लिखते हैं

"अगर आपने ध्यान न दिया, तो आप यह देखेंगे कि शहरोंमें बुनियादी शिक्षा अेक अैसा रूप धारण कर लेगी, जो देहाती क्षेत्रोंसे भिन्न होगा। मसलन्, अंग्रेजी दाखिल कर दी जायगी, जो मातृभाषाके लिअे अेक घातक बात होगी और लोगोंमें अेक प्रकारकी अूँचाअीकी भावना आने लग जायगी।"

मुझे यह स्वीकार करना ही चाहिये कि मैंने अपनी योजनाकी कल्पना ग्रामवासियोंको सामने रखकर की थी, और जब मैं अुसे आगे बढ़ा रहा था, मैंने जरूर यह कहा था कि शहरोंमें अिस योजनामें कुछ भिन्नताका रखना जरूरी होगा। यह अुल्लेख अुद्योगोंके बारेमें

था कि शिक्षाके माध्यमके रूपमें किस-किसका अुपयोग किया जाय। प्राथमिक शिक्षामें अंग्रेजी स्थान पा सकती है, यह मेरा कभी खयाल नहीं था। जिस योजनाका सबंध अभी केवल प्राथमिक अवस्थासे है। निस्सन्देह, प्राथमिक शिक्षा वगैर अंग्रेजीके मैट्रिक्युलेशनके बराबर कर दी गअी है। बच्चोंके अूपर अंग्रेजी लादनेका अर्थ है अुनके प्राकृतिक विकासको कुंठित कर देना और शायद अुनकी मौलिकताको नष्ट कर डालना। किसी भाषाको सीखनेका अर्थ है, स्मरण-शक्तिको विकसित करनेका बुनियादी शिक्षण। शुरूसे ही अंग्रेजी सिखाना बच्चों पर अनावश्यक बोझ डालना है। मातृभाषाकी कीमत देकर ही वह अुसे सीख सकता है। शहर तथा देहात, दोनों ही जगहोंके बच्चोंके लिअे मैं यह जरूरी मानता हूं कि अुनके विकासकी बुनियाद मातृभाषाकी मजबूत चट्टान पर रखी जाय। यह बात अभागे हिन्दुस्तानमें ही देखनेमें आती है कि अैसी स्पष्ट वस्तुको भी सिद्ध करना पड़ता है।

सेगांव, २–९–'३९

हरिजनसेवक, ९–९–'३९

२५
कुछ आपत्तियाँ

अेक मुसलमान सज्जन लिखते हैं

"अिधर चार महीनेसे अुर्दू अखबारोंमें वर्धा-स्कीमके मुतल्लिक मुख्तलिफ रायें निकल रही हैं। आम तौरसे अैसा मालूम होता है कि रिपोर्टको किन्हींने न तो ध्यानसे पढ़ा है, और न बुनियादी तालीमके विषयमें विचार ही किया है। अेतराज अिन बातों पर अुठाये गये हैं

(क) धार्मिक शिक्षाका बिल्कुल खयाल नहीं रखा गया है,

(ख) लड़कों और लड़कियोंको अेक साथ तालीम दी जायगी, और

(ग) सब धर्म-मजहबोंके लिअे समान आदरका भाव हृदयंगम कराया जायगा।

ये अेतराज अुर्दू अखबारोंमें भी प्रकाशित किये गये हैं।"

सहशिक्षाके बारेमें यह बात है कि जाकिर हुसैन कमेटीने अिसे लाजिमी नहीं बनाया है। जहाँ लडकियोंके लिअे अलग स्कूलकी माँग आयेगी, वहाँ राज्य यह अिंतजाम कर देगा। सहशिक्षाका प्रश्न छोड दिया गया है। समयके अनुसार वह अपना हल खुद निकाल लेगा। जहाँ तक मुझे पता है कमेटीके सब सदस्य अेकमतके नहीं थे। व्यक्तिगत रूपसे मेरा विचार यह है कि सहशिक्षाके विरोधमें जितने जोरदार कारण दिये जाते हैं, अुतने ही जोरदार अुसके पक्षमें भी दिये जा सकते हैं। और जहाँ कहीं यह प्रयोग किया जायगा, अुसका मैं विरोध नहीं करूँगा।

सब धर्मोंके लिअे समान आदरभाव सिखानेकी आवश्यकताके सबबमें जाती तौर पर मैं बहुत दृढ़ विचार रखता हूँ। जब तक हम अुस भाग्यशाली स्थिति तक नहीं पहुँच जाते, तब तक तमाम विभिन्न सम्प्रदायोंके बीच सच्ची अेकताका दृश्य मुझे नजर नहीं आता। अगर विभिन्न धर्मोंके बच्चोंको अिस प्रकारकी शिक्षा दी गअी कि अुनका धर्म दूसरे हरअेक धर्मसे बडा है और केवल वही सच्चा धर्म है, तो मेरा खयाल है कि अुनकी पारस्परिक मित्रताकी भावना बढनेमें यह चीज घातक होगी। अगर संकुचित भावना राष्ट्रमें फैल गअी, तो अिसका लाजिमी नतीजा यह होगा कि हरअेक फिरकेके लिअे अलग-अलग स्कूल होने चाहिये, जिनमें हरअेकको अेक दूसरेको हेच समझनेकी आजादी हो, या फिर धर्मका नाम लेना बिलकुल निषिद्ध ठहरा दिया जाय। अिस तरहकी नीतिका परिणाम अितना भयानक होगा कि जिसकी कल्पना भी नहीं की जा सकती। नीति या सदाचारके मूलभूत सिद्धान्तोंकी, जो सब धर्मोंमें समान हैं, शिक्षा बच्चोंको जरूर देनी चाहिये, और जहाँ तक वर्धा-स्कीमके अनुसार चलनेवाले स्कूलोंका सबब है, अिस प्रकारकी शिक्षाको पर्याप्त धार्मिक शिक्षा समझना चाहिये।

हरिजनसेवक, १६–७–'३८

२६

शिक्षकोंके कुछ प्रश्न

१

[हिन्दुस्तानी तालीमी संघके अध्यापन-मंदिरमें आये हुअे शिक्षकोंकी गांधीजीके साथ जो बातचीत हुआी, अुसकी श्री प्यारेलालजीने 'वर्धा-शिक्षा-योजना' नामक लेखमें जो रिपोर्ट दी थी, वह अिस प्रकार है। —सं०]

वर्धा-योजना और यांत्रिक अुद्योग

वर्धाके अध्यापक-शिक्षण-केन्द्रमें ७५ प्रतिनिधि आये थे। अुन्होंने गांधीजीसे कितने ही प्रश्न किये। पहले प्रश्नसे यह शंका प्रकट होती थी कि वर्धा-स्कीम भविष्यकी कसौटी पर टिक सकेगी या नहीं, या वह महज अेक अस्थायी चीज है? बहुतसे बड़े-बड़े शिक्षाशास्त्रियोंका तो यह मत है कि अेक न अेक दिन व्यापक अुद्योगीकरणके लिअे अिन दस्तकारियोंको स्थान खाली करना ही होगा। अेक अैसा समाज, जिसने कि वर्धा-स्कीमके अनुसार शिक्षा पायी होगी और जो न्याय, सत्य और अहिंसा पर आधार रखता होगा, क्या अुद्योगीकरणके प्रबल प्रवाहमें बच सकेगा?

गांधीजीने जवाब दिया "यह कोअी व्यावहारिक प्रश्न नहीं है। हमारे तात्कालिक कार्यक्रम पर अिसका कोअी असर नहीं पड़ेगा। हमारे सामने प्रश्न यह नहीं है कि अबसे आगे आनेवाले जमानेमें क्या होने जा रहा है, सवाल तो यह है कि हमारे गांवोंमें जो करोड़ों लोग रहते हैं, अुनकी सच्ची आवश्यकता अिस बुनियादी तालीमकी स्कीमसे पूरी हो सकेगी या नहीं? मेरा खयाल यह नहीं है कि हिन्दुस्तानमें अिस हद तक कभी अुद्योगीकरण हो जायगा कि

गाँव रहेंगे ही नहीं। हिन्दुस्तानका अधिकांश भाग तो हमेशा गाँवोंका ही रहेगा।"

कांग्रेस और वर्धा-योजना

"हालमें जो कांग्रेसके अध्यक्षका चुनाव हुआ है, अुसके फल-स्वरूप अगर कांग्रेसकी नीतिमें परिवर्तन हुआ, तो बुनियादी तालीमकी स्कीमका क्या होगा?' यह दूसरा प्रश्न था।

गांधीजीने अिसका जवाब यह दिया - "यह तो बेमौकेका प्रश्न है। कांग्रेस-नीतिमें अगर कोअी हेरफेर हुआ, तो वर्धा-स्कीम पर अुसका कोअी असर नहीं पड़ेगा। अुनका असर अगर पड़ेगा ही, तो अूँची राजनीतिक बातों पर ही पड़ेगा।" अिसके बाद अुन्होंने कहा "आप लोग यहाँ तीन हफ्तेके अभ्यासक्रमका शिक्षण लेनेके लिये आये हैं जिससे कि आप अपने-अपने प्रांतमें जाकर अपने विद्यार्थियोंको वर्धा-योजनाके अनुसार तालीम दे सकें। आपको यह श्रद्धा रखनी चाहिये कि अिस शिक्षा-पद्धतिसे जरूर हमारी आवश्यकताअें पूरी होंगी।

"अुद्योगीकरणकी भारी-भारी योजनायें भले ही पेश की जायें, पर कांग्रेसका आज हमारे सामने जो ध्येय है, वह देशका अुद्योगीकरण नहीं है। बम्बअीमें कांग्रेसने जो प्रस्ताव पास किया था, अुसके अनुसार अुसका ध्येय तो ग्राम-अुद्योगोंका पुनरुद्धार है। मेहनतसे तैयार की हुअी अुद्योगीकरणकी किसी स्कीमके जरिये आप लोक-जाग्रति नहीं कर सकते। कोअी भी स्कीम बनाते समय हमें अपने करोड़ों किसानोंको ध्यानमें रखना होगा। अिन स्कीमोंसे अुनकी आमदनीमें अेक पाअीकी भी वृद्धि होनेकी नहीं, जबकि चरखा-संघ और ग्राम-अुद्योग-संघ अेक सालके ही अरसेमें अुनकी जेबोंमें लाखों रुपये पहुँचा देंगे। कांग्रेस वर्किंग कमेटी या मंत्रि-मंडलोंमें चाहे जो परिवर्तन हों, मुझे तो खानगी तौर पर कांग्रेसकी रचनात्मक प्रवृत्तियोंके लिअे कोअी खतरा मालूम नहीं होता। हालांकि अिन प्रवृत्तियोंकी शुरुआत की तो कांग्रेसने ही थी,

पर अेक लवे अरसेसे वे अपना स्वतत्र अस्तित्व बनाये हुअे है और अपनी अुपयुक्तता अुन्होने पूरी तरह साबित कर दी है। बुनियादी तालीम अिनकी अेक शाखा है। शिक्षा-मत्री भले ही बदल जायँ, पर यह तो रहेगी ही। अिसलिअे जो लोग बुनियादी तालीममे दिलचस्पी रखते है, अुन्हे काग्रेसकी राजनीतिके बारेमे परेशान होनेकी जरूरत नही। शिक्षाकी अिस नअी योजनामें कोअी अपने गुण होंगे, तो वह जीवित रहेगी, न होगे तो आप ही खतम हो जायगी।

"लेकिन अिन प्रश्नोंसे मुझे सतोप नही होगा। अिनका बुनियादी तालीमकी स्कीममे कोअी सीधा सम्बन्ध नही है। ये प्रश्न हमे अुस दिशामें कुछ आगे नही ले जाते। मै चाहता हूँ कि आप मुझे अिस योजनासे सीधा सम्बन्ध रखनेवाले प्रश्न पूछें, जिससे मै अेक निष्णातकी तरह आपको सलाह दे सकूँ।"

केन्द्रवर्ती कल्पना

सभामे जानेसे पहले अेक भाअीने पूछा था

"क्या अिसके पीछे अैसी केन्द्रवर्ती कल्पना है कि जिसका तकलीके साथ सबध न साधा जा सके, अैसी कोअी बात शिक्षक विद्यार्थीसे न कहे?"

अिसका अुत्तर सभामें देते हुअे गाधीजीने कहा

"यह तो मेरी निन्दा है। यह सच है कि सारी शिक्षाका किसी बुनियादी अुद्योगके साथ सम्बन्ध जोडना चाहिये, अैसा मैने कहा है। आप जब किसी अुद्योग द्वारा ७ या १० वर्षके बालकको ज्ञान देते हो, तब शुरुआतमें अिस विषयके साथ जिनका मेल नही बैठाया जा सके, अैसे सब विषय आपको छोड देने चाहिये। रोज-रोज अैसा करनेसे, शुरुआतमें छोड़ी हुअी अैसी बहुतसी वस्तुओका अनुसधान अुद्योगके साथ जोडनेके रास्ते आप ढूंढ निकालेगे। अिस

तरह आप शुरूमें काम लेंगे, तो अपनी खुदकी और विद्यार्थियोंकी शक्ति बचा सकेंगे। आज तो हमारे पास आधार लेने लायक कोओी पुस्तकें नहीं हैं न हमें रास्ता दिखानेवाले पहलेके दृष्टांत ही मौजूद हैं। अिसलिअे हमें धीरे-धीरे चलना है। मुख्य बात यह है कि शिक्षकको अपने मनकी ताजगी बनाये रखना चाहिये। जिसका अुद्योगके साथ मेल न बैठाया जा सके, अैसा कोओी विषय आने पर आप निराश न हों, खीज न अुठें, बल्कि अुसे छोड़ दें और जिनका मेल बैठा सके अुन्हें आगे चलायें। संभव है कि कोओी दूसरा शिक्षक नहीं रास्ता ढूंढ निकाले और अुस विषयका अुद्योगके साथ कैसे मेल बैठ सकता है, यह बता सके। और जब आप बहुतोंके अनुभवका संग्रह करेंगे तो बादमें आपको रास्ता बतानेवाली पुस्तकें भी मिल जायेंगी, जिससे आपके पीछे आनेवालोंका काम अधिक सरल बन जायेगा।

"आप पूछेंगे कि जिन विषयोंका मेल न बैठाया जा सके, अुनको टालनेकी क्रिया कितने समय तक की जावे? तो मैं कहूंगा कि जिंदगीभर। आखिरमें आप देखेंगे कि बहुतसी चीजें जो आप पहले शिक्षाक्रममें से छोड़ चुके थे, अुनका आपने अुसमें समावेश कर लिया है। जितनी चीजोंका समावेश करने लायक था, अुन सबका समावेश हो चुका है और आपने आखिर तक जिनको निकम्मी समझकर छोड़ दिया था, वे बहुत निर्जीव और छोड़ने लायक ही हैं। यह मेरा जीवनका अनुभव है। मैंने यदि बहुतसी चीजें छोड़ न दी होतीं, तो मैं जो बहुतसी चीजें कर सका हूं वह नहीं कर सका होता।

"हमारी शिक्षामें जड़मूलसे परिवर्तन होना ही चाहिये। दिमागको हाथ द्वारा शिक्षा मिलनी चाहिये। मैं कवि होता तो हाथकी पांच अुंगलियोंमें रही हुओी अद्भुत शक्तिके बारेमें कविता लिख सकता। दिमाग ही सब कुछ है और हाथ-पैर कुछ नहीं अैसा आप क्यों मानते हैं? जो अपने हाथको शिक्षा नहीं देते, जो शिक्षाकी सामान्य 'प्रणाली या रूढ़ि में से होकर निकलते हैं,

अुनका जीवन 'संगीतशून्य' रह जाता है। अुनकी सारी शक्तियोंका विकास नही होता। केवल पुस्तकीय ज्ञानमें बालकको अितना रस नही आता कि अुसका सारा ध्यान अुसीमें लगा रहे। दिमाग खाली शब्दोंसे थक जाता है और बच्चेका मन दूसरी जगह भटकने लगता है। हाथ न करनेके काम करते हैं, आँखें न देखनेकी चीजें देखती हैं, कान न सुननेकी बाते सुनते हैं और अुनको क्रमश जो कुछ करना, देखना और सुनना चाहिये, अुसे वे करते, देखते और सुनते नही हैं। अुन्हे सही चुनाव करना नही सिखाया जाता। और अिससे अुनकी शिक्षा कअी बार अुनका विनाश करनेवाली सिद्ध होती है। जो शिक्षा हमें अच्छे-बुरेका भेद करना और अच्छेको ग्रहण करना तथा बुरेको त्यागना नही सिखाती, वह शिक्षा सच्ची शिक्षा ही नही है।"

हाथ द्वारा मनकी शिक्षा

श्रीमती आशादेवीने पूछा "हाथ द्वारा मनको किस प्रकार शिक्षा दी जा सकती है, यह आप समझायेंगे?"

गाधीजी "स्कूलमे चलनेवाले सामान्य पाठ्यक्रममें अेकाध अुद्योग जोड देना, यह पुरानी कल्पना थी। अर्थात् अुसमें हस्त-अुद्योगको शिक्षासे बिलकुल अलग रखकर सिखलानेकी बात थी। मुझे यह अेक गभीर भूल लगती है। शिक्षकको अुद्योग सीख लेना चाहिये और अपने ज्ञानका अनुसधान अुस अुद्योगके साथ करना चाहिये, जिससे वह अपने पसन्द किये हुअे अुद्योग द्वारा यह सारा ज्ञान विद्यार्थियोको दे सके।

"कताअीका अुदाहरण लीजिये। जब तक मुझे गणित नही आयेगा, तब तक मैंने तकली पर कितने गज सूत काता या अुसके कितने तार हुअे या मेरे काते हुअे सूतका अक कितना है, यह मैं नही कह सकूँगा। अिसे करनेके लिअे मुझे आँकडे सीखने चाहिये और जोड, बाकी, गुणा व भाग भी सीखने चाहियें। अटपटे हिसाब गिननेमे मुझे

अक्षरोंका अिस्तेमाल करना पड़ेगा। अतः अिसमें से मैं अक्षर-गणित सीखूंगा। अिसमें भी मैं रोमन अक्षरोंके बजाय हिन्दुस्तानी अक्षरोंके अुपयोगका आग्रह रखूंगा।

"फिर ज्यामिति लीजिये। तकलीकी चकतीसे अधिक अच्छा गोलाओीका प्रदर्शन और क्या हो सकता है? अिस प्रकार मैं युक्लिडका नाम लिये बिना ही विद्यार्थीको वर्तुल या गोलाओीके बारेमें सब कुछ सिखा सकता हूं।

"फिर आप शायद पूछेंगे कि कताओी द्वारा बालकको अितिहास-भूगोल किस तरह सिखाये जा सकते हैं? थोड़े समय पहले 'कपास—मनुष्यका अितिहास' (Cotton—The Story of Mankind) नामक पुस्तक मेरे देखनेमें आयी थी। अुसे पढ़नेमें मुझे बहुत ही आनन्द आया। वह अेक अुपन्यास जैसी लगी। अुसके शुरूमें प्राचीन कालका अितिहास दिया गया था। फिर कपास पहले-पहल किस प्रकार और कब बोयी गयी, अुसका विकास किस तरह हुआ, अलग-अलग देशोंके बीच रूओीका व्यापार कैसा चलता है, आदि वस्तुओंका वर्णन था। अलग-अलग देशोंके नाम मैं बालकको सुनाअूंगा, साथ ही स्वाभाविक रीतिसे अुन देशोंके अितिहास-भूगोलके बारेमें भी कुछ कहता जाअूंगा। अलग-अलग समयमें अलग-अलग व्यापारिक सन्धियां किस-किसके राज्यकालमें हुओीं? कुछ देशोंमें बाहरसे रूओी मंगानी पड़ती है और कुछमें कपड़ा बाहरसे मंगाना पड़ता है, अुसका क्या कारण है? हरअेक देश अपनी-अपनी जरूरतके मुताबिक रूओी क्यों नहीं अुगा सकता? यह चर्चा मुझे अर्थशास्त्र और कृषिशास्त्रके मूलतत्वों पर ले जायगी। कपासकी अलग-अलग जातियां कौनसी हैं, वे किस तरहकी जमीनमें अुगती हैं, अुन्हें कैसे अुगाया जाय, वे कहांसे प्राप्त की जा सकती हैं, वगैरा जानकारी मैं विद्यार्थीको दूंगा। अिस तरह तकलीकी बात करते मैं ओीस्ट अिंडिया कंपनीके सारे अितिहास पर आअूंगा। वह कंपनी यहां कैसे आयी, अुसने हमारे रचनात्मक-

अुद्योगको किस तरह नष्ट किया, अंग्रेज आर्थिक अुद्देश्यसे हमारे यहाँ आये और अुसमें से राजनैतिक सत्ता जमानेकी आकांक्षा वे क्यों रखने लगे,' यह वस्तु मुगल और मराठोंके पतनका, अंग्रेजी राज्यकी स्थापनाका और फिर वापस हमारे जमानेमें जनसमूहके अुत्थानका कारण कैसे हुअी, यह सब भी मुझे वर्णन करके बताना पड़ेगा। अिस तरह अिस नअी योजनामें शिक्षा देनेकी अपार गुंजाअिश है। और बालक यह सब अुसके दिमाग और स्मरण-शक्ति पर अनावश्यक बोझ पड़े बिना ही कितना अधिक जल्दी सीखेगा।

"अिस कल्पनाको अधिक विस्तारसे समझा दूं। जैसे किसी प्राणीशास्त्रीको अच्छा प्राणीशास्त्री बननेके लिअे प्राणीशास्त्रके अलावा दूसरे बहुतसे शास्त्र सीखने चाहियें, अुसी प्रकार बुनियादी तालीमको यदि अेक शास्त्र माना जाय, तो वह हमें ज्ञानकी अनन्त शाखाओंमें ले जाता है। तकलीका ही विस्तृत अुदाहरण लिया जाय, तो जो शिक्षक-विद्यार्थी केवल कातनेकी यान्त्रिक क्रिया पर ही अपना लक्ष्य अेकाग्र नहीं करेगा (अिस क्रियामें तो बेशक वह निष्णात होगा ही), बल्कि अिस वस्तुका तत्त्व ग्रहण करनेकी कोशिश करेगा, वह तकली और अुसके अंग-अुपांगका अभ्यास करेगा। तकलीकी चकत्ती पीतलकी और सीख (डंडा) लोहेकी क्यों होती है, यह प्रश्न वह अपने मनको पूछेगा। जो असली तकली थी, अुसकी चकत्ती चाहे जैसी बनाअी जाती थी। अिससे भी पहलेकी प्राचीन तकलीमें बाँसकी सलाअीकी सीख और स्लेट या मिट्टीकी चकत्ती अुपयोगमें ली जाती थी। अब तकलीका शास्त्रीय ढंगसे विकास हुआ है और जो चकत्ती पीतलकी और सीख लोहेकी बनाअी जाती है, वह सकारण है। यह कारण विद्यार्थीको ढूंढ निकालना चाहिये। अुसके बाद विद्यार्थीको यह भी जाँचना चाहिये कि अिस चकत्तीका व्यास अितना ही क्यों रखा जाता है, कम-ज्यादा क्यों नहीं रखा जाता? अिन प्रश्नोंका संतोषजनक हल ढूंढनेके बाद अिस वस्तुका गणित जान लिया कि आपका

विद्यार्थी अच्छा अिंजीनियर बन जाता है। तकली अुसकी कामधेनु बनती है। अिसके द्वारा अपार ज्ञान दिया जा सकता है। आप जितनी शक्ति और श्रद्धासे काम करेंगे, अुतना ज्ञान अिसके द्वारा दे सकेंगे। आप यहाँ तीन सप्ताह रहे हैं। अितने समयमें अिस योजनाके पीछे मर मिटने तकको तैयार होनेकी श्रद्धा आप लोगोंमें आ गअी हो, तो आपका यहाँ रहना सफल गिना जायगा।

"मैंने कताअीका अुदाहरण विस्तारसे बतलाया है, अिसका कारण यह है कि मुझे अुसका ज्ञान है। मैं बढ़अी होता, तो मेरे बालकको ये सब बातें बढ़अीगिरीके मारफत सिखाता। अथवा कार्डबोर्डका काम करनेवाला होता, तो अुन कामके मारफत सिखाता।

"हमें सच्ची जरूरत तो अैसे शिक्षकोंकी है, जिनमें नया-नया सर्जन करनेकी और विचार करनेकी शक्ति हो, सच्चा अुत्साह और जोश हो और रोज-रोज विद्यार्थीको क्या सिखायेंगे, यह सोचनेकी शक्ति हो। शिक्षकको यह ज्ञान पुराने पोथोंमें से नहीं मिलेगा। अुसे अपनी निरीक्षण और विचार करनेकी शक्तिका अुपयोग करना है और हस्त-अुद्योगकी मददसे जबान द्वारा बालकको ज्ञान देना है। अिसका अर्थ यह है कि शिक्षा-पद्धतिमें क्रांति होनी चाहिये। शिक्षककी दृष्टिमें क्रांति होनी चाहिये। आज तक आप निरीक्षकों (अिन्स्पेक्टरों)की रिपोर्टोंसे मार्गदर्शन पाते रहे हैं। आपने निरीक्षकको पसन्द आये वैसा करनेकी अिच्छा रखी है, ताकि आपकी संस्थाके लिअे अधिक पैसे मिलें अथवा आपकी अपनी तनख्वाहमें बढ़ती हो। पर नया शिक्षक अिन सबकी परवाह नहीं करेगा। वह तो कहेगा, 'मैं यदि मेरे विद्यार्थीको अधिक अच्छा मनुष्य बनाअूं और वैसा करनेमें मेरी सब शक्ति लगा दूं, तो कहा जायगा कि मैंने अपना कर्तव्य पूरा किया। मेरे लिअे अितना ही काफी है।'"

२६-२-'३९

२

प्र० — अिस अध्यापन-मन्दिरमें आनेवाले शिक्षक-विद्यार्थियोंको पहले कोअी अुद्योग सिखाया जाय और फिर अुस अुद्योग द्वारा शिक्षा किस तरह दी जाय, अिसका ठोस और स्पष्ट विवेचन अुनके सामने किया जाय तो क्या ठीक न होगा? अभी तो अुन्हें यह कहा जाता है कि आप खुद सात वरसके लड़के हैं, अैसी कल्पना करें और हरअेक विषय अुद्योग द्वारा फिरसे सीखें। अिस तरह नअी पद्धतिमें कुशल बनकर शिक्षक बननेमें तो अुन्हें कअी वर्ष लग जायेंगे।

अु० — नहीं, बरसों नहीं लगेंगे। हम कल्पना करें कि शिक्षक जब मेरे पास आता है, तब अुसको गणित, अितिहास और दूसरे विषयोंका कामचलाअू ज्ञान होता है। मैं अुसको कार्डबोर्डकी पेटी बनाना या कातना सिखाता हूँ। यह अुद्योग वह सीखता है, अुस समय अिस अुद्योग द्वारा वह गणित, अितिहास और भूगोलका ज्ञान किस प्रकार पा सका होता, यह मैं अुसको बताता हूँ। अिस तरह वह यह सीखता है कि अपने ज्ञानका अुद्योगके साथ कैसे मेल बैठाया जाय। अैसा करनेमें अुसे अधिक समय नहीं लगना चाहिये। दूसरा अुदाहरण लीजिये। मान लीजिये कि मैं सात वर्षके अेक लड़केके साथ बुनियादी तालीमके स्कूलमें जाता हूँ। हम दोनों कातना सीखते हैं और मैं अपने सारे पूर्वज्ञानका कताअीके साथ मेल बैठा लेता हूँ। अुस लड़केके लिअे यह सब नया-नया है। ७० वर्षके पिताके लिअे यह सब पुनरुक्ति है, पर वह अपना पुराना ज्ञान नये ढंगसे जमा लेगा। अिस क्रियाके लिअे अुसे थोड़े सप्ताहसे अधिक समय नहीं लगना चाहिये। अिस तरह यदि शिक्षक ७ वर्षके बालक जितनी ग्रहणशक्ति और अुत्कंठा नहीं बतायेगा, तो वह अन्तमें केवल यान्त्रिक कतवैया ही बन जायेगा और अिससे अुसमें नअी पद्धतिका शिक्षक बननेकी योग्यता नहीं आयेगी।

प्र० — मेट्रिक पास लड़केको आज कॉलेजमें जानेकी, अिच्छा हो, तो वह जा सकता है। जो बालक बुनियादी तालीमके पाठ्यक्रमको पढ़कर निकलेगा, वह भी क्या अिस प्रकार कर सकेगा?

अु० — मेट्रिक पास होनेवाला लड़का और बुनियादी तालीम पाया हुआ लड़का — अिन दोमें से दूसरा अधिक अच्छा काम करके बता सकेगा, क्योंकि अुसकी शक्तियोंका विकास हो चुका होगा। कॉलेजमें जाते वक्त मेट्रिक पासको जैसी लाचारी मालूम होती है, वैसी अुसे नहीं होगी।

प्र० — बुनियादी तालीमकी योजनामें दाखिल होनेके लिअे बालककी अुम्र कमसे कम सात वर्षकी होनी चाहिये, यह कहा गया है। यह अुम्र काल-मर्यादासे नापी जाय या मानसिक विकाससे?

अु० — कमसे कम औसत अुम्र सात वर्षकी होनी चाहिये। पर कुछ बालक अिससे अधिक अुम्रके और कुछ कम अुम्रके भी होंगे। अिसमें शारीरिक और मानसिक दोनों प्रकारकी अुम्रका विचार करना पड़ता है। अेक बालकका ७ वर्षकी अुम्रमें अितना शारीरिक विकास हो जाता है कि वह हस्त-अुद्योग चला सकता है। दूसरा बालक शायद ७ वर्षकी अुम्रमें अुतना न कर सके। अतः अिस बारेमें कोअी निश्चित नियम नहीं बनाया जा सकता। सब बातोंका विचार करके निर्णय करना पड़ेगा। आपके पूछे हुअे बहुतसे प्रश्नों परसे मालूम होता है कि आपमें से बहुतोंके मनमें शंका भरी हुअी है। यह काम करनेका गलत रास्ता है। आपके मनमें दृढ़ श्रद्धा होनी चाहिये। हमारे करोड़ों बालकोंको जीवनकी शिक्षा देनेके लिअे वर्धा-योजनाकी शिक्षा ही सच्ची आवश्यक वस्तु है, अैसी जो प्रतीति मेरे मनमें है, वह आपके मनमें हो, तो आपका काम चमक अुठेगा। अैसी श्रद्धा आपमें न हो, तो आपके अध्यापकोंमें कुछ कमी होनी चाहिये। वे आपको दूसरा कुछ दे सकें या न दे सकें, तब भी अितनी श्रद्धा आपके मनमें पैदा करनेकी शक्ति तो अुनमें होनी ही चाहिये।

शिक्षाकी पहेलियां

प्र० — बुनियादी तालीमकी योजना गाँवोंके लिअे है, अैसा माना जाता है। तो क्या शहरवालोंके लिअे कोअी रास्ता नहीं है? अुन्हें पुरानी पद्धतिसे ही चलना पड़ेगा?

अु० — यह सवाल प्रस्तुत है और अच्छा है। पर मैं अुसका जवाब 'हरिजन' में दे चुका हूँ। जितना काम हाथमें लिया है, अुतना पूरा कर दें तो बहुत है। हमने जो काम अुठाया है, वही काफी बड़ा है। ७ लाख गाँवोंकी शिक्षाका प्रश्न हल कर सकें, तो अभी तुरन्तके लिअे अितना काफी है। बेशक, शिक्षा-शास्त्री शहरोंके लिअे भी विचार करते हैं। पर हम गाँवोंके साथ-साथ शहरोंका प्रश्न भी अुठायेंगे, तो हमारी शक्ति व्यर्थ नष्ट हो जायगी।

प्र० — मान लीजिये कि किसी गाँवमें तीन स्कूल हैं और हरअेकमें अलग-अलग अुद्योग सिखाया जाता है। अब यदि अेक स्कूलमें दूसरेकी अपेक्षा शिक्षाकी अधिक गुंजाअिश हो, तो बालकको अुनमें से किस स्कूलमें जाना चाहिये?

अु० — अेक गाँवमें अनेक अुद्योग नहीं सिखाये जाने चाहिये, क्योंकि हमारे ज्यादातर गाँव अितने छोटे हैं कि अुनमें अेकसे अधिक स्कूल रखना पुसायेगा नहीं। बड़े गाँवमें अेकसे अधिक स्कूल हो सकते हैं। पर वहाँ दोनोंमें अेक ही अुद्योग सिखाया जाना चाहिये। फिर भी अिसके बारेमें मैं कोअी अटल नियम नहीं बनाना चाहता। अैसी बातोंमें जैसा अनुभव मिले, अुसके अनुसार चलना ही अच्छेसे अच्छा तरीका है। अलग-अलग अुद्योग विद्यार्थियोंको कितने पसन्द आते हैं और विद्यार्थियोंकी शक्तिका कितना विकास कर सकते हैं, अुसका निरीक्षण करना चाहिये। कल्पना यह है कि आप जो भी अुद्योग पसन्द करें, अुसमें से बालककी शक्तियोंका पूर्ण और अेक-सा विकास होना चाहिये। यह अुद्योग देहाती और अुपयोगी होना चाहिये।

प्र० — बड़ा होने पर यदि बालकका व्यवसाय दूसरा ही होनेवाला हो, तो वह सात वर्ष किसी हस्त-अुद्योगको सीखनेमें क्यों बिगाड़े? अुदाहरणके लिअे, शराफका लड़का, जो बड़ा होने पर शराफ होनेवाला है, सात बरस तक कताअी करना क्यों सीखे?

अु० — यह प्रश्न नअी शिक्षा-योजनाके बारेमें घोर अज्ञान प्रदर्शित करता है। बुनियादी तालीममें लड़का केवल अुद्योग सीखनेके लिअे स्कूल नहीं जाता। वह स्कूलमें अुद्योगके मारफत प्राथमिक शिक्षा प्राप्ति करनेके लिअे, अपने मनका विकास करनेके लिअे जाता है। मेरा यह दावा है कि जिस बालकने ७ वर्षका प्राथमिक शिक्षाका नया पाठ्यक्रम पूरा किया होगा, वह किसी सामान्य स्कूलमें ७ वर्ष पढ़े हुअे बालककी अपेक्षा अधिक अच्छा शराफ बन सकेगा। सामान्य स्कूलमें जानेवाला बालक शराफीकी स्कूलमें जायगा, तो वहाँ अुसे अच्छा नहीं लगेगा, क्योंकि अुसकी सब शक्तियोंका विकास नहीं हुआ होगा। पुराने वहम, जो जड़ जमाकर बैठे होते हैं, निकलने मुश्किल हैं। अिस नअी शिक्षा-योजनाका अर्थ अक्षरज्ञान और थोड़ा अुद्योग — अिन दोका मिश्रण नहीं है, यह मुख्य बात मैं आप लोगोंके मनमें बिठा सका होअूँ, तो मेरा आजका काम सफल हुआ गिना जायगा। अुद्योग द्वारा पूरी प्राथमिक शिक्षा देना ही अिस नअी योजनाका ध्येय है।

प्र० — हरअेक स्कूलमें अेकसे अधिक अुद्योग सिखाना क्या ठीक नहीं है? सम्भव है वर्ष भर अेक ही अुद्योग सीखनेमें बालक अुकता जायँ।

अु० — कोअी शिक्षक अैसा मिले कि जिसके विद्यार्थियोंकी अेक महीना कातनेके बाद कताअीमें दिलचस्पी न रहे, तो मैं अुस शिक्षकको हटा दूँगा। जैसे अेक ही वाद्य पर संगीतके नये-नये स्वर निकल सकते हैं, वैसे ही शिक्षकके हरअेक पाठमें नवीनता भरी हुअी होनी चाहिये। अेक अुद्योगसे दूसरे अुद्योग पर — अिस तरह परिवर्तन करते रहनेसे बालककी स्थिति अेक शाखासे दूसरी शाखा पर

कूदनेवाले और कहीं भी स्थिर न बैठनेवाले बन्दर जैसी हो सकती है। पर मैंने अपनी चर्चामें बताया है कि शास्त्रीय तरीकेसे कताअी सिखानेसे कताअीके अलावा दूसरे अनेक विषय सिखाने पड़ते हैं। शुरुआत करनेके बाद थोड़े समयमें बालकको अपनी तकली और अटेरन बना लेना सिखाया जायगा। अर्थात् शुरूमें कही हुअी बात मैं फिर कहता हूँ कि शिक्षक अुद्योग सिखानेका काम शास्त्रीय वृत्तिसे करेगा, तो वह अपने विद्यार्थियोंको अनेक और विविध चीजें सिखायेगा। और ये सब विद्यार्थियोंकी सभी शक्तियोंके विकासमें मदद करेंगी।

हरिजनबन्धु, ५–३–'३९

२७

वर्धा-पद्धतिके शिक्षकोंसे

[२१ अप्रैल, १९३८ को वर्धामें विद्या-मंदिर ट्रेनिंग स्कूलका अुद्घाटन करते हुअे गांधीजीने हिन्दीमें नीचे लिखा भाषण दिया था।

—सं०]

आज विद्या-मंदिरके छात्रोंने पवित्र व्रत लिया है। यह व्रत बहुत कठिन है। अिसका पूरा होना बड़ा दुश्वार है। १५ रु० माहवार लेकर २५ वर्ष तक लगातार सेवा करनेका यह व्रत है। पाँच हजारसे अधिक अर्जियोंका आना यह जाहिर करता है कि हमारे देशमें बेकारी हद दर्जे तक पहुँच गअी है। कुछ लोग अुच्च अुद्देश्यसे काम करते हुअे दाल-भात तक प्राप्त नहीं कर सकते। बहुतसे अपना पेट पालनेके लिअे कोअी काम तक नहीं पा रहे हैं। आपका यह व्रत आत्म-त्यागका व्रत है। अगर आप अपनी प्रतिज्ञामें धनी साबित हुअे, तो आप दुनियाके सामने अेक नया आदर्श अुपस्थित करेंगे। असफल हुअे तो

जगतमें मेरी और श्री रविशंकर शुक्लकी निन्दा की जायगी। अिसलिअे यह अच्छा होगा कि ढीले-ढाले लोग अभीसे अलग हो जायँ।

यह योजना पूरी तरहसे भारतीय योजना है। अिसके आदर्शका जन्म सेगाँवमें हुआ है। असली हिन्दुस्तान तो सात लाख गाँवोंमें बसता है, जो सेगाँवसे भी बहुत हीन दशामें है। मैं चाहता हूँ कि आप लोग अिन गाँवोंसे निरक्षरताको दूर भगा दें, ग्राम-निवासियोंके लिअे अन्न और वस्त्रके साधन जुटावें, और सत्य तथा अहिंसा द्वारा स्वराज्य प्राप्त करनेका सन्देश गाँवोंमे पहुँचावें। यह जिम्मेवारी आपके अूपर है। आपका यह धर्म है कि आप अिस भावनाको लेकर काम करें। मैंने तो काफी मननके बाद अपनी यह योजना पेश की है। यदि यह योजना असफल हुअी, तो अिसके लिअे अध्यापक दोषी ठहराये जायँगे। दस्तकारीके जरिये भूमिति, अितिहास, भूगोल और गणितकी शिक्षा दी जायगी और छात्रोंके शरीर-श्रमसे स्कूलका खर्च निकालनेका प्रयत्न किया जायगा।

हर हिटलर तलवारके बल पर अपना अुद्देश्य पूरा कर रहा है, मैं आत्माके द्वारा पूरा करना चाहता हूँ। विदेशी विचारों और आदर्शोंका आवरण निकाल फेंकिये, अपने आपको ग्रामवासियोंके साथ समरस बना दीजिये। पाश्चात्य जगत विनाशक शिक्षा दे रहा है, हमें अहिंसाके जरिये रचनात्मक शिक्षा देनी है। मंगलमय भगवान् आपको शक्ति दे, जिससे आप वांछित अुद्देश्यको सफल बना सकें और आज जो व्रत लिया है, अुसे पूरा कर सकें।

हरिजनसेवक, ३०-४-'३८

२८

योग्य शिक्षकोंकी कठिनाअी

[अेक चीनी अध्यापक श्री ताओके साथ गांधीजीकी जो बातचीत हुअी, अुसकी रिपोर्ट श्री महादेव देसाअीने 'चीनमें वर्धा-शिक्षण-योजना' नामक लेखमें दी थी। नीचेका हिस्सा अुन्हींमें से लिया गया है।

—सं०]

श्री ताओकी वर्धा-शिक्षण-योजनामें बडी दिलचस्पी थी। अुन्होंने पूछा "अिस योजनाका असली मुद्दा क्या है?"

"असली मुद्दा कोअी न कोअी ग्रामोद्योग है, जिसके द्वारा बच्चेका पूरा-पूरा विकास किया जा सकता है।"

लेकिन प्रो० ताओने कहा कि अिसमें अध्यापकोंकी कठिनाअी सामने आयेगी। गांधीजी अिस पर हँस पडे, क्योंकि हमारे सामने भी तो यही कठिनाअी है। "आप ट्रेन्ड अध्यापकोंको दस्तकारी सिखायेंगे या कारीगरोंको अध्ययन-कलाकी शिक्षा देंगे?" प्रो० ताओने पूछा।

"औसतन हरअेक शिक्षित आदमीसे यह आशा की जा सकती है," गांधीजीने लिखकर जवाब दिया, "कि वह आसानीसे कोअी धन्धा सीख लेगा। क्योंकि आप जैसे किसी शिक्षित पुरुषको बढअी-गिरी जैसा कोअी धन्धा सीखनेमें जितना समय लगेगा, हमारे कारीगरोंको आवश्यक सामान्य शिक्षा ग्रहण करनेमें अुससे कहीं ज्यादा वक्त लगेगा।"

"लेकिन", प्रो० ताओने कहा, "हमारे शिक्षित व्यक्ति तो बडे-बडे ओहदों और रुपयोंके पीछे पडे हुअे हैं। अुन्हें अिसका रस कैसे लगाया जा सकेगा?"

"अगर यह योजना ठीक है और शिक्षितोंके दिमागको पसन्द आयेगी, तो वह खुद ही अुनके लिअे आकर्षक बन जायगी और अिस प्रकार शिक्षित युवकोंको स्वर्ण-प्रलोभनसे मुक्त कर देगी। हाँ, अगर शिक्षित युवकोंके पर्याप्त देशाभिमानको अिसने जाग्रत न किया तो यह जरूर असफल रहेगी। लेकिन हमारे लिअे अेक सुविधा है। वह यह कि जिन्हें भारतीय भाषाओंमें शिक्षा मिली है, वे कॉलिजोंमें दाखिल नहीं हो सकते। यह बहुत मुमकिन है कि अुन्हें यह योजना आकर्षक प्रतीत होगी।"

हरिजनसेवक, २७-८-'३८

२९

श्रद्धा चाहिये

[मध्यप्रान्त और बरारकी म्युनिसिपैलिटियों और जिला लोकल बोर्डोंके प्रतिनिधियोंकी अेक परिषद्में भाषण देनेके लिअे गांधीजीसे विनती की गयी थी। परिषद्के अेक सदस्यने गांधीजीसे यह प्रश्न पूछा था कि "देशकी आर्थिक और राजनैतिक प्रगतिमें बुनियादी तालीमकी योजनासे क्या लाभ होगा?" गांधीजीने अपने भाषणको अिसी प्रश्न तक सीमित रखा। श्री महादेव देसाअी द्वारा की हुअी भाषणकी रिपोर्ट नीचे दी जाती है। —सं०]

आपने मुझसे यह सवाल पूछा, जिसकी मुझे खुशी है। असके जवाबमें मेरा यह कहना ज्यादा अच्छा होगा कि प्राथमिक शिक्षाकी तालीम [illegible] देहाती और [illegible] जरूरियात का कोअी ख्याल किये बगैर शुरू की गयी है। प्राथमिक शिक्षा पर जो रकम खर्च की जाती है असके बदलेमें [illegible] कुछ नहीं मिलता। [illegible] कुछ अिने-गिने [illegible] अिस [illegible] शिक्षाके [illegible]

मिल जाते है। अिससे प्राथमिक शिक्षा पर होनेवाली बरबादीका औचित्य सिद्ध नही होता। अिससे तो अिस दयनीय मिथ्या धारणाका ही दुःखद दर्शन होता है कि हिन्दुस्तानका कारोबार हम अंग्रेजी डिग्रीधारी या अंग्रेजीका ज्ञान रखनेवाले आदमियोंके बगैर चला ही नही सकते। शिक्षा-विभागके डाअिरेक्टरोंने यह स्वीकार किया है कि प्राथमिक शिक्षाकी पद्धति अेक भारी बरबादी है। विद्यार्थियोंका बहुत थोडा प्रतिशत ही अूंची कक्षाओं तक पहुँचता है। जो शिक्षा दी जाती है, अुसमे स्थायित्व जैसा कुछ नही है और विस्तृत ग्रामीण अिलाकोंके अेक छोटेसे हिस्से तक ही अुसकी पहुँच है। अुदाहरणके लिअे, मध्यप्रान्तके कितने गाँवोमे ये प्राथमिक शालाअें है? और गाँवोमें जो प्राथमिक शालाअें है, वे गाँवोको किसी भी प्रकारका बदला नही देती है।

अिसलिअे आपने मुझसे जो सवाल पूछा, दरअसल वह अुठता ही नही है। लेकिन नअी योजनाके लिअे यह दावा किया जाता है कि वह आर्थिक दृष्टिसे मजबूत पाये पर खडी है, क्योकि जो भी शिक्षा दी जायगी, वह दस्तकारियो द्वारा ही दी जायगी। यह शिक्षाके साथ किसी दस्तकारीको सिखलाना नही, बल्कि किसी दस्तकारीके द्वारा ही सारी शिक्षा देना है। अिसलिअे मान लीजिये कि जो लडका बुनाअी द्वारा शिक्षा पाता है, वह निश्चय ही अुस बुनकरके बनिस्बत अच्छा होगा, जो खाली कारीगर होता है, और यह कोअी नही कह सकता कि बुनकर आर्थिक दृष्टिसे अुपयोगी नही होता। यह बुनकर बुनाअीके विविध औजारोका और बुनाअीकी सभी कलाओका जानकार होगा और पेशेवर बुनकरसे माल भी अच्छा पैदा करेगा। पिछले कुछ महीनोमें अिस पद्धतिके जो आर्थिक परिणाम आये है, अुनका श्रीमती आशादेवी द्वारा संग्रहीत तथ्यो और आंकडोंमे अध्ययन करना बेहतर होगा। ये परिणाम हमारी आशाओंसे अधिक है। स्वावलम्बी शिक्षासे मेरा मतलब यही है। जब मैने 'स्वावलंबी'

शब्दका प्रयोग किया, तो मेरी मंशा यह नहीं थी कि अुस पर लगाअी जानेवाली सब रकम अुनीसे निकल आयेगी, बल्कि मेरा अभिप्राय तो सिर्फ यह था कि विद्यार्थी जो चीजें तैयार करेंगे, अुनसे कमसे कम अध्यापकको तनख्वाह तो निकल ही आयेगी। बुनियादी शिक्षा-योजनाका आर्थिक रूप अिस तरह अपने आप सिद्ध हो जाता है।

अिसके बाद अिसका दूसरा पहलू भी है, और वह है राष्ट्रीय जाग्रतिका। मैं नहीं कह सकता कि ग्रामोद्योगो संबंधी कुमारप्पा-कमेटीकी रिपोर्ट आपने पढ़ी है या नहीं। प्रति व्यक्तिकी औसत आमदनीका परम्परागत अंक ७० रु० है, लेकिन अुन्होंने सिद्ध किया है कि मध्य-प्रान्तके गाँवोंमें प्रति व्यक्तिकी औसत आमदनी ज्यादासे ज्यादा १२ से लेकर १४ रु० साल तक ही है। बुनियादी तालीमके लिअे कताअी तथा अन्य ग्रामोद्योगोंका अिस प्रकार चुनाव किया गया है कि वे ग्रामवालोंकी जरूरतें पूरी कर सकें। अिसलिअे जो लड़के ग्रामोद्योगों द्वारा शिक्षा पायें, अुन्हें चाहिये कि अपनी शिक्षाका वे अपने घरोंमें जरूर विस्तार करें। अब आप देखेंगे कि देहातवालोंकी औसत आमदनी ग्रामोद्योगोंका पुनरुद्धार करके आसानीसे दूनी की जा सकती है। अगर आप जनताके सेवक बन जायें और नअी पद्धतिमें असली तौरसे दिलचस्पी लेने लगें, तो जिला-बोर्डोंमें होनेवाले अनेक झगड़े-टंटे भी खतम हो जायेंगे। जब मैं अिस सभामें आ रहा था, तो मुझे अेक अैसी शालाका पत्र मिला, जिसमें बच्चोंने तीस दिन तक चार घण्टे रोज कताअी करके मोटे तौर पर ७५ रुपये कमाये। अगर तीस बच्चोंने अेक महीनेमें ७५ रु० कमाये, तो हिन्दुस्तानके प्राअिमरी स्कूलोंके करोड़ों बच्चे कितना कमायेंगे, अिसका हिसाब आप आसानीसे लगा सकते हैं।

और यह भी खयाल कीजिये कि अिन बच्चोंमें जो आत्मविश्वास और सूझ पैदा होगी तथा साथ ही अुन्हें अिस बातका जो भान होगा कि वे देशकी आयमें वृद्धि करके असमान वितरणकी समस्याको

हल कर रहे हैं, अुसका क्या नतीजा होगा। अिससे अपने आप राजनैतिक जाग्रति होगी। अिन बच्चोसे मैं आशा करूँगा कि अिन्हे स्थानिक मामलोमें सब बातोकी जानकारी होगी। रिश्वतखोरी, गन्दगी वगैराकी बात भी मालूम हो जायेगी और अुसे कैसे दूर किया जाय, यह वे जान जायँगे। मैं चाहूँगा कि अिस तरहकी राजनैतिक शिक्षा हमारे हरअेक बच्चेको मिले। अिससे अुनके अूँचे अुठनेमें निस्सन्देह खूब मदद मिलेगी।

मैं समझता हूँ कि मैंने अिस बातको अच्छी तरह सिद्ध कर दिया है कि तालीमकी अिस प्रकारकी पद्धतिसे देशकी आर्थिक और राजनैतिक अुन्नति जरूर होगी।

अितना कहनेके बाद मैं आपसे अेक प्रार्थना करूँगा। जब आप यहाँ आये हैं, तो मैं आपसे कहूँगा कि आप अिस शिक्षा-पद्धतिका अध्ययन करें और शुक्लजी तथा आर्यनायकम्‌जीको बतलायें कि आप अिसमें विश्वास लेकर जा रहे हैं या नहीं। मुझे तो निश्चय है कि अगर आप अिसकी अच्छी तरह आजमाअिश करेंगे, तो तीन महीनेके अन्दर ही आप यह कह सकेंगे कि आपने स्कूलोमें नवजीवन पैदा करके बच्चोमें नया अुत्साह और नया जीवन भर दिया है। बीजको बढ़कर वृक्ष बननेमें वर्षों लग सकते हैं, लेकिन अिस शिक्षाके जिस बीजको आप बोयेंगे, अुसके सीमित परिणाम कुछ महीनोमें ही आप देख लेंगे। भारतीय जनताके सामने मैंने सबसे सादी चीजें रखी हैं — अैसी जो क्रांतिकारी परिवर्तन पैदा करेंगी — जैसे खादी, मद्य-निषेध, गृह-अुद्योगोका पुनर्जीवन और दस्तकारियो द्वारा शिक्षा। लेकिन जब तक आप मौजूदा स्थितिके नशेसे मुक्त न हो जायँ, तब तक सादी बातें भी आप नहीं समझ सकेंगे।

आप कुछ भी करें, पर अपने आपको और हमें धोखा न दें। अिसलिअे अगर अिस पद्धतिमें आपको अुत्साह न लगता हो, तो मेहरबानी करके अैसा साफ कह दीजिये।

अेक शब्द मकान व सामान वगैराके खर्चके बारेमें भी। जो अेकमुश्त खर्च आप करेंगे, वह अुस तरह बट्टे खाते नही जायगा, जैसे अिमारतो पर किया गया खर्च जाता है। आपको औजारो और स्टॉकके अूपर जो खर्च करना पडेगा, वह बरसो तक अुत्पादनके लिअे अुपयोगी होगा। जिन चरखो, करघो और धुनकियो पर आप रुपया लगायेंगे, वे विद्यार्थियोंके अनेक समूहोंके लिअे अुपयोगी होगे। यांत्रिक अुद्योगोमें अेकमुश्त तथा टूट-फूट और घिसाओका खर्च बहुत भारी होता है। लेकिन मौजूदा योजनामें अैसा कुछ नही है, क्योकि सुनियोजित ग्रामीण अर्थशास्त्रमें निस्सन्देह अैसे किसी खर्चकी जरूरत भी नही है।

अन्तमें अेक बात और। मैं चाहता हूँ कि हमारी राजनैतिक पद्धतिमें जिस रद्दोबदलकी संभावना है, अुससे आप विचलित न हो। मंत्रि-मंडल जैसे अस्तित्वमें आये थे, वैसे ही जा भी सकते हैं। यह ध्यान रखिये कि मंत्रीपद यही समझकर स्वीकार किये गये थे कि यथासंभव कमसे कम समयकी सूचना पर अुन्हें छोड दिया जायगा। मंत्री लोग यह जानते है कि अवसर आने पर अुन्हें सेक्रेटेरियेटसे जेलकी ओर कूच करना पडेगा, और यह तय है कि अैसा वे बिना किसी पसोपेशके हँसते हुअे ही करेंगे। लेकिन मंत्रि-मंडलोंके अूपर आपके काम और कार्यक्रमका दारोमदार रहनेकी कोअी जरूरत नहीं है। आपका आयोजित काम अगर ठोस बुनियाद पर आधारित है, तो चाहे जितने मंत्रि-मंडल आयें-जायें, वह तो कायम ही रहेगा। लेकिन यह अपने काममें आपके विश्वास पर निर्भर है। कांग्रेस जब तक अपने सत्य और अहिंसाके ध्येयके प्रति सच्ची रहेगी, तब तक अुसका काम कायम रहेगा। मैंने कांग्रेसकी कडी आलोचना की है और निर्दयताके साथ अुसकी कमियो पर प्रकाश डाला है, लेकिन मैं यह भी मानता हूँ कि अितने पर भी अुसका रोकड़-पोता काफी अच्छा है।

अिस सबके अलावा, मुझे आपको यह भी कह देना चाहिये कि हरअेक बातका दारोमदार आपके विश्वास और दृढ़ निश्चय पर है।

अगर आपमें अिच्छा हो, तो अुसके लिअे रास्ता निकलना निश्चित है। अगर आप यह निश्चय कर ले कि अिस योजना पर अमल करना ही है, तो फिर हरअेक कठिनाअी दूर हो जायगी। जरूरत सिर्फ अिस बातकी है कि अुसमें आपका जीवित विश्वास हो। हजारो आदमी अिस बातका ढोंग करते है कि अीश्वरमें अुनका विश्वास है, लेकिन अगर वे जरासे अन्देशे पर भयभीत होकर भागे, तो अुनका विश्वास जीवित विश्वास नही, बल्कि निर्जीव विश्वास है। जीवित विश्वास होने पर आदमी अपनी योजनाको पार लगानेके लिअे आवश्यक ज्ञान और साधन जुटा लेता है। मुझे अिस बातकी खुशी है कि आपमें से हरअेक अैसे विश्वासका दावा करता है। अगर सचमुच अैसी ही बात है, तो आपका प्रान्त अन्य प्रान्तोंके सम्मुख अेक सुन्दर अुदाहरण पेश करेगा।

हरिजनसेवक, ११-११-'३९

३०

'बौद्धिक विषय' बनाम अुद्योग

श्री नरहरि परीख लिखते है :

"खादी और नयी तालीमके विद्यालयोंमें 'बौद्धिक विषय' शब्दका प्रयोग बहुत ही गलत तरीकेसे किया जाता है। अक्षर-ज्ञान अथवा पुस्तकका अध्ययन बौद्धिक विषय कहा जाता है। अमुक समय अुद्योगके लिअे है और अमुक समय बौद्धिक विषयके लिअे —अैसा भी कहा जाता है। कुछ विद्यालयोंमें तो यह भी कहते है कि अुन्हे दो घटे अुद्योगमें लगाने होते है और तीन पढनेमें। किताबोंके शुरू होनेसे ही यह माना जाता है कि पढाअी आरम्भ हुअी। अिस विषय पर आप लिख तो चुके है, लेकिन और भी लिखनेकी जरूरत है। अुद्योगमें बुद्धिका

विकास तो होता ही है। अिसलिअे यह नहीं कहा जा सकता कि अुद्योग बुद्धिका विषय नहीं है। यह आवश्यक है कि आप अिसके सम्बन्धमें भी स्पष्ट रूपसे लिखें।"

लेखककी शिकायत बिलकुल सच है। अक्षर-ज्ञान बुद्धिका विषय नहीं, वह तो स्मरण-शक्तिका विषय है। जिस तरह किसी पदार्थका चित्र देखकर अुसे पहचानना सीखना बुद्धिका विषय नहीं, अुसी तरह अक्षरके चित्रके बारेमें है। लेकिन अक्षर-ज्ञानमें अुसके अर्थका भी समावेश तो है ही। अनेक विषयोंकी किताबें पढ़ना और समझना भी अक्षर-ज्ञानमें शामिल है। यही बात अुद्योगको लागू होती है। औद्योगिक ज्ञानका मतलब केवल कोअी धन्धा सीखना ही नहीं, बल्कि अुससे सम्बन्धित शास्त्रको भी जानना है। अिस तरहके औद्योगिक ज्ञानसे बुद्धिका सिर्फ विकास ही नहीं होता, बल्कि अक्षर-ज्ञानके मुकाबले बहुत अधिक विकास होता है। अक्षर-ज्ञानमें तो बुद्धिके विकासके बदले स्मरण-शक्तिका ही विकास होता है। यह बात हम हाअीस्कूल और कॉलेजोंसे निकले हुअे सैकड़ों विद्यार्थियोंके बारेमें कह सकते हैं। अुद्योगके शास्त्र-ज्ञानके विषयमें अैसा दुष्परिणाम होनेकी संभावना नहीं दीखती। अैसी सूरतमें अमुक समय अक्षर-ज्ञानके लिअे और अमुक समय अुद्योगके लिअे, यह भेद — अुद्योगके दर्जेको कम करनेकी यह प्रथा — दूर हो जाना चाहिये। क्योंकि यह भेद निकम्मा है और प्रायः अिससे नुकसान भी होता है। विद्यार्थियोंके मनमें यह भेद जमा जाता है और अिससे अुनमें अुद्योगके प्रति अुदासीनता तथा पढ़नेके लिअे मोह पैदा होता है। अिस तरह दोनों चीजें बिगड़ जाती हैं। किताबका कीड़ा बननेसे ही कहीं बुद्धिका विकास नहीं होता — अुससे तो आँखें और विचार-शक्ति दोनों ही खराब होती हैं। अुद्योगके प्रति अुदासीनता होनेसे अुसका ज्ञान अूपरी ही रहता है। प्रत्येक वस्तु अपने स्थान पर ही शोभा देती है। अुद्योगके पूर्ण ज्ञानके लिअे पुस्तकोंके अध्ययनकी आवश्यकता रहती ही है और अुसके सिलसिलेमें जो कुछ पढ़ना पड़ता है, सो तो

समझकर ही पढ़ा जा सकता है। अिस तरह अुसमें हानिके लिअे अवकाश ही नहीं रहता। जिनको मैं समझा सकूँगा, अुनका पूर्ण विकास तो अुद्योग द्वारा ही करूँगा। अिसीका नाम नअी तालीम या सच्ची तालीम है। यह अपने समयानुसार तो आवेगी ही। फिर भी अुस समय तक अुद्योग और अक्षर-ज्ञानका भेद मिट ही जाना चाहिये। जिस तरह गणित, साहित्य अित्यादिका वर्ग होता है, अुसी तरह अुद्योगका भी होना चाहिये। सबको शिक्षाका अंग ही समझना चाहिये। यह भ्रम तो निकल ही जाना चाहिये कि अुद्योग शिक्षा-क्षेत्रके बाहरका विषय है। जब तक यह भ्रम न मिटेगा, विद्यार्थियोंके विकासमें रुकावट होती रहेगी।

हरिजनसेवक, १२-४-'४२

३१

शरीर-श्रम और बुद्धिका विकास

[वर्धामें तालीम लेने आये हुअे कुछ शिक्षकोंके साथ गांधीजीकी जो बातचीत हुअी, अुसका वर्णन देनेवाले श्री प्यारेलालके 'साप्ताहिक पत्र' में से यह हिस्सा लिया गया है। —सं०]

आपमें से अेक भाअीने मुझे अेक खत लिखा था। अुसमें यह शिकायत की गअी थी कि यहाँ हाथ-पैरकी मेहनत पर बहुत ही जोर दिया जाता है। मैं मानता हूँ कि अैसी मेहनत बुद्धिके विकासका अच्छे-से-अच्छा जरिया है। हमारे मौजूदा स्कूल और कॉलेज ब्रिटिश सल्तनतकी ताकतको मजबूत बनानेके लिअे हैं। आपमें से जिन्होंने अुनमें शिक्षा पाअी है, अुन्हें वे जरूर अच्छे लगेंगे। अुनमें पढ़नेवाले विद्यार्थियोंको कोअी यह थोड़े ही पूछना है कि वे रास्तों और पाखानोंकी

सफाओ करना जानते हैं या नहीं? लेकिन यहाँ तो सफाओ और स्वच्छता आपको अेक बुनियादी चीजकी तरह सिखाओ जाती है। भंगीके काममें भी कला तो है ही। 'तद् विद्धि प्रणिपातेन परिप्रश्नेन सेवया' यानी बार-बार पूछकर और विनयके साथ आपको यह कला सीख लेनी चाहिये। बार-बार पूछनेमें अुद्धतता भी हो सकती है। अिसीलिअे ज्ञान प्राप्त करनेकी चाहके साथ नम्रताकी भी जरूरत रहती है। तभी बुद्धिके दरवाजे खुलते हैं।

अुपयोगी शरीर-श्रमके जरिये हमारी बुद्धिका विकास होता है। बुद्धि तो अिसके बिना भी बढ़ सकती है, लेकिन वह बुद्धिका विकास नहीं, बिगाड़ होगा। अुनसे हम गुण्डे भी बन सकते हैं। बुद्धिके साथ-साथ आत्मा और शरीरका भी विकास होना चाहिये। अिसीलिअे यहाँकी तालीममें हाथ-पैरकी मेहनतको खास जगह दी गअी है। बुद्धिके साथ आत्माका विकास होने पर ही बुद्धिका सदुपयोग होता है। वरना बुद्धि हमको बुरे रास्ते ले जाती है और अीश्वरी देनके बदले शाप बन जाती है। अगर आप अिस चीजको समझ लेंगे तो आपको भेजनेवाली संस्थाअें आप पर जो खर्च कर रही हैं, वह बेकार न जायगा और आप अपने कामकी शान बढ़ा सकेंगे।

हरिजनसेवक, २२-९-'४६

३२

नअी तालीममें डॉक्टरीकी जगह

श्रीमती आशादेवी अपने कामोंमें लगी रहती हैं और मेरा वक्त बचा लेना चाहती हैं। फिर भी अेक रोज अुन्होंने मुझसे पाँच मिनट माँगे। अुनका कहना था कि नअी तालीमवालोंको थोड़ा डॉक्टरी ज्ञान देना चाहिये। अिसलिअे क्या वे खुद चार-पाँच साल डॉक्टरी सीखनेमें दें?

मैं समझ गया कि बहुत कोशिश करने पर भी पुरानी तालीमका असर अभी तक जड़से गया नहीं है। आखिर अुन्होंने अेम० अे० की डिग्री अंग्रेजोंकी बनाअी हुअी युनिवर्सिटीसे ली है न? मेरे पास तो कोअी डिग्री नहीं है। जो थोड़ा ज्ञान हाअीस्कूलमें पाया था, मेरी नजरमें अुनकी कोअी कीमत न थी। किसी जमानेमें कुछ थी भी, लेकिन वह बरसों पहले खतम हो गअी। और कुदरती अिलाजका रस तो मैंने काफी पिया है। मैंने अुनसे कहा "आप कहती हैं, हमारे बच्चोंकी पहली तालीम अपनी तन्दुरुस्ती कायम रखना और सब किस्मकी सफाअीकी तालीम पाना है। मैं कहता हूँ, अिसीमें हमारी सब डॉक्टरी आ जाती है। हमारी तालीम करोड़ों देहातियोंके लिअे है, अुनके खातिर है। वे कुदरतके नजदीक रहते हैं, फिर भी कुदरती जीवनके कानून नहीं जानते। जो जानते हैं, वे अुनका पालन नहीं करते। अुनका अैसा जीवन देखकर ही हमने नअी तालीम चलाअी है। अुसका ज्ञान हमको किताबोंसे कम ही मिलता है। जो मिलता है सो तो कुदरतकी किताबसे ही मिलता है। ठीक अिसी तरह हमें कुदरतसे डॉक्टरी भी सीखनी है। अिसका निष्कर्ष यह निकला कि अगर हम सफाअीके नियम जानें, अुनका पालन करें और सही खुराक लें, तो

हम खुद अपने डॉक्टर बन जायें। जो आदमी जीनेके लिअे खाता है, जो पाँच • महाभूतोंका यानी मिट्टी, पानी, आकाश, सूरज और हवाका मित्र बनकर रहता है, जो अुनको बनानेवाले अीश्वरका दास बनकर जीता है, वह कभी बीमार न पड़ेगा। पड़ा भी तो अीश्वरके भरोसे रहता हुआ शान्तिसे मर जायगा। वह अपने गाँवके मैदानों या खेतोंमें मिलनेवाली जड़ी-बूटी या औषधि लेकर ही संतोष मानेगा। करोड़ों लोग अिसी तरह जीते और मरते हैं। अुन्होंने डॉक्टरका नाम तक नहीं सुना तो अुसका मुंह कहांसे देखें? हम भी ठीक अैसे ही बन जायें, और हमारे पास जो देहाती लड़के और अुनके बड़े-बूढ़े आते हैं, अुनको भी अिसी तरह रहना सिखा दें। डॉक्टर लोग कहते हैं कि १०० में से ९९ रोग गन्दगीसे, न खानेका खानेसे और खाने लायक चीजोंके न मिलने और न खानेसे होते हैं। अगर हम अिन ९९ लोगोंको जीनेकी कला सिखा दें, तो बाकी अेकको हम भूल सकते हैं। अुसके लिअे डॉ० सुशीला नय्यर जैसा कोअी डॉक्टर मिल जायगा। हम अुसकी फिकर न करें। आज हमें न तो अच्छा पानी मिलता है, न अच्छी मिट्टी और न साफ हवा ही मिलती है। हम सूरजसे छिप-छिपकर रहते हैं। अगर हम अिन सब बातोंको सोचें और सही खुराक सही तरीकेसे लें, तो समझिये कि हमने जमानोंका काम कर लिया। अिनका ज्ञान पानेके लिअे न तो हमें कोअी डिग्री चाहिये और न करोड़ों रुपये। जरूरत सिर्फ अिस बातकी है कि हमें अीश्वर पर श्रद्धा हो, सेवाकी लगन हो, पाँच महाभूतोंका कुछ परिचय हो, और हो सही भोजनका ज्ञान। अितना तो हम स्कूल और कॉलेजकी शिक्षाके बनिस्बत खुद ही थोड़ी मेहनतसे और थोड़े समयमें हासिल कर सकते हैं।"

हरिजनसेवक, १-९-'४६

३३

दस्तकारी द्वारा शिक्षा

श्रीमती आशादेवीने नीचे लिखे दिलचस्प आंकड़े भेजे हैं

"बिहारके चम्पारन जिलेके बेतिया थानेमें बुनियादी तालीमकी जो २७ पाठशालायें चल रही हैं, अुन्होंने अप्रैल, १९४२ में अपने तीन साल पूरे किये हैं। अिन पाठशालाओंके दर्जे अेक, दो और तीनका सन् १९४१-४२ के सालका जो सालाना आर्थिक लेखा तैयार हुआ है, वह बुनियादी तालीमके सभी कार्यकर्ताओंके लिअे बहुत ही अुत्साहप्रद है। यह लेखा बुनियादी तालीमके मासिक मुखपत्र 'नअी तालीम' में ब्यौरे-वार प्रकाशित किया जायगा। यहाँ तो हम अुसकी मुख्य-मुख्य बातोंका संक्षिप्त सार ही बुनियादी तालीमकी प्रगतिमें रस लेनेवालोंकी जानकारीके लिअे दे रहे हैं।

अिन २७ पाठशालाओंकी औसत हाजिरी पहले दर्जेमें ७०, दूसरे दर्जेमें ७६ और तीसरे दर्जेमें ७९ फी सदी रही थी। और हरअेक छात्रकी औसत कमाअी दर्जा अेकमें रु० ०-११-०, दर्जा दोमें रु० २-४-२ और दर्जा तीनमें रु० ६-१-१ रही। सभी पाठशालाओंके कुल ३९० बालकोंने (औसत हाजिरीके अनुसार) दर्जा अेकमें १०,२६४ घंटे काम करके रु० २६७-८-६, ३५६ बालकोंने (औसत हाजिरीके अनुसार) दर्जा दोमें कुल १४,०८२ घंटे काम करके

रु० ८०४-१३-८ और ३१९ बालकोंने (औसत हाजिरीके अनुसार) दर्जा तीनमें १४,३६२ घण्टे काम करके रु० १९३५-१४-११ कमाये; यानी कुल १०६५ बालकोंने सारे सालमें रु० ३००८-५-१ कमाये। अिन पाठशालाओंमें विद्यार्थियोंकी अधिकसे अधिक औसत व्यक्तिगत कमाअी दर्जा तीनमें रु० १५-१२-०, दर्जा दोमें रु० ६-२-० और दर्जा अेकमें रु० २-१०-१ रही। चरखे पर अधिकसे अधिक औसत गति दर्जा तीनमें फी घंटा ८८० तार और तकली पर फी घंटा २८१ तार रही। दर्जा दोमें चरखे पर फी घंटा ३५० तार और तकली पर फी घंटा २४२ तार रही; दर्जा अेकमें तकली पर फी घंटा १६४ तार रही।"

यहाँ ये आँकड़े आमदनी और अुत्पत्तिका खयाल करानेके लिअे नहीं दिये गये, यद्यपि अपने स्थान पर अिनका भी महत्त्व है। शिक्षा-संबंधी लेखमें अुत्पत्ति और आमदनीका स्थान गौण ही होता है। यहाँ तो वे यह दिखानेके लिअे दिये गये हैं कि नवयुवकोंकी शिक्षाके माध्यमके रूपमें दस्तकारीका शैक्षणिक मूल्य कितना अूँचा है। स्पष्ट है कि अुद्योग, सावधानी और तफ्सीलकी बातों पर ध्यान दिये बिना अितना काम कभी न हो सकता था।

हरिजनसेवक, २१-९-'४२

३४

कताओी और चारित्र्य

अखिल भारत चरखा-संघके कर्नाटक शाखाके मंत्रीने मुझे जरायम पेशा मानी जानेवाली जातियोंकी बस्तियोंके स्कूलोंके कताओी-कामकी नीचे लिखी रिपोर्ट भेजी है

"जब हुबलीकी बस्तीके संचालक रेवरेंड आर० अेन० अुशर विल्सनने और बस्तीकी प्रमाणित शालाकी मुख्य अध्यापिका मिस अी० डब्ल्यू० ब्रिस्कोने अखबारोंमें देखा कि अखिल भारत चरखा-संघकी कर्नाटक शाखाने बीजापुर और गदगकी बस्तियोंमें बेकारोंको कातना-पीजना सिखानेके लिअे शिक्षक भेजे हैं, तब अुन्हें लगा कि हुबलीकी बस्तीमें भी यह प्रयोग करके देखना चाहिये। रेवरेंड विल्सन और मिस ब्रिस्कोके अुत्साह और अुत्सुकताके कारण शाखाने हुबली बस्तीका काम भी अुठा लिया।

"अुन लड़कोंमें, जिनको कच्ची कैदकी सजा दी जाती है, हमने काम शुरू किया। अिस कच्ची कैदमें आठ और सोलह सालके बीचकी अुम्रके कुल ३३ लड़के हैं। लड़कोंको कच्ची कैदमें अुनके संरक्षक या पुलिस रख जाते हैं, ताकि अुनकी देखरेख रखी जाय। लड़कोंको वहाँ रखनेका कारण आम तौर पर अुनका विचित्र बर्ताव या छोटी-मोटी चोरियाँ करनेकी आदत होती है। व्यवस्थापकोंको अिन लड़कोंको सीधा रखनेका काम कठिन लगता था। अुनमें से कओी लड़के तो भाग जाते थे और अुनका पीछा करना पड़ता था और ढूँढ-ढूँढकर वापस कच्ची कैदमें रखना पड़ता था। अिन लड़कोंको शहरमें प्राथमिक

या दूसरे स्कूलोंमें नहीं भेजा जा सकता था, क्योंकि हमेशा यह डर रहता था कि वे भाग जायेंगे। बस्तीके संचालक कोअी अैसा काम नहीं ढूंढ सके थे, जो अिन लड़कोंके शरीर और मनको काममें लगाये रखे।

"अखिल भारत चरखा-संघने अिन लड़कोंको अुद्योग सिखानेके लिअे अेक शिक्षक नियुक्त किया। अुसने साढे तीन महीने तक लड़कोंको सिखाया। रुअी साफ करना, पीजना, कातना सब आंध्र-पद्धतिसे होता है। यह काम सिखानेके लिअे बड़े लड़के — १४ से १६ सालकी अुम्रके — चुने गये थे। हरअेक लड़का २५ से ३० अंकका सूत १२०० गजसे लेकर १५०० गज तक रोज कातता है। कच्ची कैदके व्यवस्थापकने मुझे बताया है कि जबसे ये लड़के कुछ मेहनताना लेकर नियमित रीतिसे काम करने लगे हैं, अुनके बर्ताव और ढंगमें काफी सुधार हुआ है। मिस ब्रिस्कोका पत्र खुद सब कुछ वर्णन करता है। अुसमें कुछ और जोड़नेकी मैं आवश्यकता नहीं समझता। वह पत्र अिसके साथ है।"

मुख्य अध्यापिका मिस ब्रिस्कोका मुझे लिखा हुआ पत्र नीचे दिया जाता है

"अखिल भारत चरखा-संघकी ओरसे मुझे कहा गया है कि हमारे प्रमाणित स्कूलमें जो कताअीका काम होता है, अुसके बारेमें मैं आपको बताअूं।

१ हमने कताअीका क्लास १५ जनवरी, १९४० को शुरू किया था।

२ लड़कोंकी अुम्र १४ से १६ साल तककी है। अुन्हें कातनेमें जितना आनन्द आता है, यह देखकर हमें बहुत आश्चर्य हुआ।

३ अिससे पहले वे लोग यों ही बिना किसी खास कामके बैठे रहते थे, क्योंकि हम लोग महँगे अुद्योग शुरू नहीं कर सकते थे। अब वे लोग प्रसन्न हैं। खूब काममें लगे रहते हैं। भागनेका अब अुनका जी नहीं करता। ४–५ घण्टे काम करके वे लोग रोज दो आने, सवा दो आने कमा लेते हैं। कताअीका काम शुरू करनेके लिअे निजी जेबसे जो पैसा दिया गया था, वह पैसा ये लोग वापस दे रहे हैं। थोडा-सा पैसा अुनके हाथमें दिया जाता है, बाकी अुनके नाम जमा कर दिया जाता है, ताकि जब वे लोग यहाँसे जायें तो अुनकी जेबमें कुछ पैसे हों। यह काम लडकोंमें चूँकि अितना सफल हुआ है, अिसलिअे, हमने लडकियोंकी प्रमाणित शालामें भी अिस हफ्तेसे अिसे शुरू कर दिया है। हमें लगा कि आपको अिस खबरसे खुशी होगी, अिसलिअे मैं यह पत्र लिख रही हूँ और अिसके साथ कताअी करनेवाले लडकोंका फोटो भी भेज रही हूँ। वे लोग कितने प्रसन्न हैं, यह देखकर आपको खुशी होगी।"

कताअीमें मनको स्थिर करनेका जो गुण है, अुसके अूपर लिखे वर्णनका समर्थन करनेवाले काफी प्रमाण मौजूद हैं। आशा है मिस ब्रिस्को समय-समय पर मुझे अपने कामकी रिपोर्ट भेजती रहेगी।

हरिजनसेवक, २४–८–'४०

३५

बिहार प्रान्तकी शालायें

['रेगिस्तानमें मीठे पानीका सोता' नामक टिप्पणी]

बुनियादी तालीमके बारेमें सरकारी अधिकारियोंकी विरोधी किन्तु पूर्ण विचारके बिना की हुआी टीकाओंके रेगिस्तानमें बिहारके गवर्नरके सलाहकार मि० सी० आर० जे० आर० कजिन्सने हिन्दुस्तानी तालीमी संघके मन्त्री श्री आर्यनायकम्‌के नाम भेजे अपने पत्रमें बिहारके बुनियादी तालीमके स्कूलोंकी जो नीचे लिखी कदर की है, वह सचमुच प्रसन्न करनेवाली है :

"मूसलाधार वर्षाके कारण बुनियादी तालीमके स्कूलोंका निरीक्षण करनेके मेरे कार्यक्रममें विक्षेप पड़ा, जिससे मुझे अफसोस हुआ। परन्तु मैंने २७ में से १८ स्कूलोंके शिक्षक और विद्यार्थियोंसे मैं मिल सका — ६ स्कूलोंके शिक्षकों और विद्यार्थियोंको वृन्दावन-रामपुरवामें और १२ स्कूलोंके शिक्षकों और विद्यार्थियोंको चोबेटोला-परकियामें। वहाँ मैंने जो कुछ देखा अुसमें मुझे खूब दिलचस्पी पैदा हुआी। अलबत्ता, अिनके सातों वर्षोंका अभ्यास पूरा हुअे बिना अिस प्रयोगकी सच्ची कीमत हम नहीं आँक सकते। परन्तु विद्यार्थियोंकी स्वच्छता, बुद्धिमत्ता तथा अपने काममें अुन्हें आनेवाला स्पष्ट आनन्द देखकर मुझ पर गहरा असर हुआ। मुझे विश्वास है कि हम सही दिशामें आगे बढ़ रहे हैं। और बुनियादी तालीमका संपूर्ण पाठ्यक्रम पूरा करनेवाले १४ वर्षके बालक अन्य सामान्य स्कूलोंके पाठ्यक्रमके अनुसार अभ्यास करनेवाले अुतनी ही अुम्रके बालकोंके मुकाबले कमजोर नहीं निकलेंगे।

"जिस पर मैं सबसे अधिक जोर देता हूँ, अैसा अेक खास आशास्पद लक्षण यह है कि वे स्कूल ग्रामवासियोंकी शुभेच्छा और दिलचस्पी पानेमें सफल हुअे हैं, असमें कोअी शक नहीं। और जहाँ तक ये कायम रखे जा सकेंगे, वहाँ तक प्रयोग सफल हुअे विना रह ही नहीं सकता। चोवेटोला-परकियामें जमीन-मालिकों तथा ग्रामवासियोंने स्कूलके लिअे सुन्दर क्रीडागण बनानेमें, रास्ते तैयार करनेमें और बालसेना — जो मेरी देखी हुअी बालसेनाओंमें सबसे बडी थी — के लिअे आवश्यक सामग्री जुटानेमें, और खासकर गाँवके बालक नियमित रूपसे स्कूलमें जायें, अैसा आग्रह रखनेमें जो प्रजाहितकी भावना बतलाअी है, वह अतिशय प्रशसनीय है। और मुझे यह आश्वासन दिया गया है कि जिनकी मैं मुलाकात नहीं कर सका, अुन दूसरे स्कूलोंमें भी अिसी प्रकारकी प्रजाहितकी भावना दिखलाअी जाती है। मुझे विश्वास है कि ग्रामवासियोंके प्रयत्नोंका योग्य फल मिलेगा और गाँवोंके भावी बालक अिन स्कूलोंमें आजके सामान्य शिक्षणके अलावा अैसे मानसिक चपलता और शारीरिक निपुणताके गुण तथा स्वास्थ्य और स्वच्छता प्राप्त करेंगे, जिनके कारण भूतकालकी अपेक्षा भविष्यके गाँव ज्यादा तन्दुरुस्त, ज्यादा आकर्षक और ज्यादा सस्कारी बनेंगे।"

हरिजनबन्धु, १–३–'४२

३६

मेरी अपेक्षा

['अेक हलका प्रसंग' नामक टिप्पणीमें से]

श्री आर्यनायकम् सेवाग्राम स्कूलकी सातवी कक्षाके विद्यार्थियोंको गांधीजीके सामने लाये। अिन सब लड़कोंने सेवाग्रामकी बुनियादी शालाका पाठ्यक्रम लगभग पूरा किया है। ये सब सेवाग्राम तथा आसपासके गांवोंके हैं। अिनमें से अेक लड़केने तो गांधीजीसे यह पूछनेकी हिम्मत भी की कि सात वर्ष बुनियादी तालीमकी स्कूलमें पढनेके बाद अुसमें से १४ वर्षकी अुम्रके किस प्रकारके लडके निकलनेकी आप अपेक्षा रखते हैं?

अुसके जवाबमें गांधीजीने कहा :

स्कूलने यदि विद्यार्थियोंके प्रति अपना पूरा फर्ज अदा किया होगा, तो १४ वर्षकी अुम्रके लडके सच्चे, निर्मल और तन्दुरुस्त होने चाहिये। वे ग्रामवृत्तिके होने चाहियें। अुनके दिमाग तथा हाथ अेकसे विकसित होने चाहियें। अुनमें छलकपट नहीं होगा। अुनकी बुद्धि तीक्ष्ण होगी, पर वे पैसे कमानेकी चिन्तामें नहीं पड़ेंगे। जो कुछ प्रामाणिक काम अुन्हें मिल जाय, अुसे वे कर सकेंगे। वे शहरमें जाना नहीं चाहेंगे। वे स्कूलमें सहयोग व सेवाके पाठ सीखे होंगे। वैसी ही भावना वे अपने आसपासके लोगोंमें प्रकट करेंगे। वे भिखारी या परोपजीवी कभी नहीं बनेंगे।

हरिजनबन्धु, १५-९-'४६

३७
म्युनिसिपैलिटियाँ और प्राथमिक शिक्षा

['म्युनिसिपल समस्याओं' नामक लेखमें से]

[२८ जनवरी, १९३९ को गुजरातकी म्युनिसिपैलिटियो और लोकल बोर्डके लगभग दोसौ कांग्रेसी प्रतिनिधियोंने गांधीजीसे बारडोलीमें मिलकर दोनो संस्थाओकी शिक्षण-प्रवृत्तिके बारेमें कुछ प्रश्न किये थे। प्रश्नोत्तरोकी श्री प्यारेलाल द्वारा ली हुअी रिपोर्टमें से नीचेका भाग दिया गया है — सं०]

खेडा जिलेके अेक प्रतिनिधिने शिकायत करते हुअे कहा "लोकल बोर्डोकी ओरसे चलनेवाली प्राथमिक शालाओमे वर्धा-योजना दाखिल करना हमें तो बहुत पसन्द होगा। लोकल बोर्ड अिसके लिअे तैयार हैं। लेकिन अिन्स्पेक्टर और शिक्षा-विभागके बडे अधिकारी अभी तक पुरानी लकीर पर ही चलना चाहते हैं। अुनमे वर्धा-शिक्षा-योजनाके सिद्धान्तोके प्रति श्रद्धा नही पैदा हुअी है। अिस कठिनाअीको हम कैसे दूर करें?"

गांधीजी "अिससे मुझे कोअी आश्चर्य नही होता। अिसके विपरीत, यदि शिक्षा-विभागके बडे अधिकारियोकी श्रद्धा वर्धा-योजनामे अेकदम बैठ जाय तो मुझे जरूर आश्चर्य होगा। यह श्रद्धा तो अनुभवसे ही पैदा होगी। अिस बीच मे अितना ही कह सकता हूँ कि जहां अिच्छा हो वहाँ रास्ता मिल ही जाता है। शिक्षा-मंत्री यदि शिक्षा-विभागके डायरेक्टरको यह आदेश दें कि वर्धा-योजनाका अमल करनेवाली शिक्षा-संस्थाओको जितनी हो सके मदद करे, तो

मैं नही मानता कि अिसमें कोअी वैधानिक कठिनाअी रास्तेमें आयेगी। मध्यप्रान्तके मंत्रि-मंडलको शिक्षा-विभाग द्वारा अपनी अिच्छा पूरी करानेमें कोअी कठिनाअी नही हुअी। लेकिन यदि कोअी वैधानिक कठिनाअी मालूम हो, तो अुसका कानूनी अिलाज किया जा सकता है।"

प्रश्न "हमारी प्रौढ-शिक्षाकी योजनामें ध्येय अक्षरज्ञानके प्रचारका होना चाहिये या 'अुपयोगी ज्ञान' देनेका? स्त्रियोंकी शिक्षाका ध्येय क्या हो?"

गांधीजी — "जो अधेड अुमरके हो गये है और कोअी धंधा करते हैं, अुन्हें पढना-लिखना सीखनेकी खास जरूरत है। आम जनताकी निरक्षरता हिन्दुस्तानका पाप है, शर्म है; अुसे दूर करना ही चाहिये। बेशक, अक्षरज्ञानके प्रचारकी प्रवृत्ति मूलाक्षरके ज्ञानसे शुरू होकर वही रुक न जानी चाहिये। परन्तु म्युनिसिपैलिटियोंको अेक साथ दो घोडों पर सवार होनेका लोभ नहीं करना चाहिये। वर्ना अुन्हें पछताना पडेगा। पुरुषोंकी तरह स्त्रियोंकी निरक्षरताका कारण केवल आलस्य और जडता नही है। अिससे ज्यादा बडा कारण तो अनादि कालसे स्त्रियोंको नीची माननेवाली सामाजिक रूढि है। पुरुषने स्त्रीको अपनी सहायक और सहधर्मिणी बनानेके बदले अुसे घरका काम करनेवाली दासी और भोग-विलासका साधन बना रखा है। अिसके फलस्वरूप हमारे समाजका आधा अंग बेकार हो गया है। स्त्रीको प्रजाकी माता कहा गया है यह बिलकुल सही है। पर हमने अुनके साथ यह जो महा अन्याय किया है अुसे दूर करना हमारा कर्तव्य है।"

रपटदजके अेक प्रतिनिधिने पूछा "आपने अमुक विषयों पर अलग-अलग मौकों पर अलग-अलग मत प्रकट किये हैं। अुसका दुरुपयोग करके हमारे विरोधी हमारी आलोचना किया करते हैं। अैसी स्थितिमें हमें क्या करना चाहिये?'

गाधीजीने कहा — "मेरे अलग-अलग मतोमे परस्पर जो विरोध दीखता है, वह आभासमात्र है, और अुनके बीच आसानीसे मेल वैठाया जा सकता है। सुरक्षित नियम तो यह है कि मेरा जो वचन कालक्रमसे आखिरी हो, अुसे पहलेके सब वचनोसे ज्यादा प्रामाणिक माना जाय और अुसका अनुसरण किया जाय। लेकिन मेरे किसी भी वचनको, यदि वह आपके दिल और दिमागको अपील न करता हो, आप माननेके लिअे बँधे हुअे नही है — भले वह आजका हो या पहलेका। अिसका अर्थ यह नही कि मेरा दृष्टिकोण गलत था। लेकिन जिस दृष्टिकोणको आप समझ या ग्रहण न कर सकें, अुसे स्वीकार करना ठीक नही है।"

हरिजनबधु, २६-२-'३९

३८

कांग्रेसी मंत्रि-मंडल और नअी तालीम

[शिक्षा-विभागके मन्त्रियोकी कॉन्फरेन्सके साथ गाधीजीकी जो बातचीत हुअी, अुसकी श्री प्यारेलाल द्वारा दी गअी रिपोर्ट अिस तरह है —सं०]

सन् १९३९ में जब सात सूबोके काग्रेसी मन्त्रि-मडलोने अिस्तीफा दिया, तो वहाँ १९३५ के विधानकी ९३ वी धाराका गवर्नरी राज कायम हुआ। अुस राजमें काग्रेसी मन्त्रि-मडलो द्वारा शुरू की गअी नअी तालीमकी स्कीमो और शराब-बन्दी, ग्राम-सुधार और देहातकी बुनियादी दस्तकारियोको फिरसे जिलानेके प्रोग्रामको सबसे बडा धक्का पहुँचा। काग्रेसी मन्त्रि-मण्डलोने जब फिरसे हुकूमतकी बागडोर अपने हाथमें ली, तो कुदरती तौर पर सबसे पहले अुन्होने अपने प्रयोगोकी

बची-खुची निशानियोंको बरबादीसे बचाने और १९३९ के छोड़े हुअे कामोंको फिरसे हाथमें लेनेकी तरफ ध्यान दिया।

श्री बालासाहब खेरका न्योता पाकर कांग्रेसी सूबोंसे आये हुअे शिक्षा-विभागके मन्त्रियोंकी अेक कॉन्फरेन्स श्री खेरकी अध्यक्षतामें पूनाके कौंसिल हॉलमें २९ और ३० जुलाओको हुअी। न्योता तो सभी सूबोंके मन्त्रियोंको दिया गया था, लेकिन अुनमें से दोके मन्त्री कॉन्फरेन्समें शरीक न हो सके। २९ जुलाओको तीसरे पहर गांधीजी अेक घंटेसे भी ज्यादा कॉन्फरेन्समें बैठे थे। सरकारी और अुनसे जुड़ी हुअी संस्थाओंमें नअी तालीमके प्रयोगको जरूर धक्का लगा। लेकिन तालीमी संघमें वह अुसी तरह चलता रहा, जो गांधीजीकी दूरन्देशीसे हर मुसीबतका सामना करनेके लिअे पूरी तरह तैयार था। पहले सात साल पूरे हो जानेसे नअी तालीमकी अुमर पुख्ता हो चुकी है। नजरबन्दीसे छूटनेके बाद सन् १९४४ में जब गांधीजी तालीमी संघके मेम्बरोंसे पहले-पहल मिले, तो अुन्होंने समझाया कि अब आपका प्रयोग अैसी हद तक पहुँच गया है, जब कि नअी तालीमका दायरा बढ़ाया जाना चाहिये। अब आपको अपने दायरेमें पोस्ट-बेसिक यानी नअी तालीमके बादकी और प्री-बेसिक यानी नअी तालीमके पहलेकी ट्रेनिंग भी शामिल करनी चाहिये। नअी तालीमको सच्चे मानीमें जिन्दगीकी तालीम बन जाना चाहिये। अिसी दलीलको आगे बढ़ाते हुअे गांधीजीने कॉन्फरेन्सके लोगोंको यह समझाया कि किस लाअिन पर नअी तालीमका दायरा बढ़ाना चाहिये और मन्त्रियोंका अिस बारेमें क्या फर्ज है। गांधीजी डॉ० जाकिर हुसैनके सवालके जवाबमें बोल रहे थे। डॉक्टर साहबको डर था कि जरूरतसे ज्यादा जोशमें आकर कोअी अैसी जिम्मेदारी सिर पर न ले ली जाय, जिसे पूरा न किया जा सके। अैसा जोशभरा प्रोग्राम, जिसे असली रूप देनेके हमारे पास जरिये न हों, हमें गलतीमें फँसानेवाला और खतरनाक साबित होगा।

'अगर मैं मंत्री होता'

गांधीजीने कहा "हमें क्या करना चाहिये, यह तो मैं अच्छी तरह जानता हूँ, लेकिन वह किस तरह किया जाय, यह मैं ठीक-ठीक नही जानता। अभी तक जो रास्ता आपने तय किया है, अुसकी सही जानकारी आपको थी। लेकिन अब आपको अैसे रास्ते पर आगे बढना है, जिस पर कभी कोअी चला नही। मैं आपकी मुश्किलोको खूब समझता हूँ। जो लोग (शिक्षाकी) पुरानी परम्परामें पले है, अुनके लिअे अुसे अेकबारगी ठुकरा देना आसान काम नही है। अगर मैं मत्री होता, तो मैं अिस तरहकी खास हिदायते जारी करता कि आअिन्दासे शिक्षासे सम्बन्ध रखनेवाला सरकारका समूचा काम नअी तालीमकी लाअिन पर चलेगा। कअी सूबोमें बडी अुमरवालोको तालीम देनेका आन्दोलन शुरू किया गया। अगर मेरी चले तो मैं अुसे भी किसी बुनियादी दस्तकारीके जरिये ही चलाअूं। मेरे खयालमें कताअी और अुससे जुडे हुअे काम अिसके लिअे सबसे अच्छी दस्तकारियां है। लेकिन किस जगह कौनसी दस्तकारीके जरिये तालीम दी जाय, यह बात मैं काम करनेवालो पर ही छोड दूंगा। क्योकि मेरा यह पूरा विश्वास है कि जिसके अन्दर जरूरी खूबियां होगी, वही दस्तकारी आखिरमें जिन्दा रहेगी। अिन्स्पेक्टरो और शिक्षा-विभागके दूसरे अफसरोका यह फर्ज है कि वे लोगो और स्कूलोंके शिक्षकोके पास जायें और प्रेमसे दलीले दे-देकर सरकारकी शिक्षा-विभागकी नअी नीतिकी कीमत और अुससे होनेवाले फायदे अुन्हे समझाये। अैसा करनेमें जबरदस्ती कभी न की जाय। अगर अिस नीतिमें अुनकी श्रद्धा नही है, या वे अीमानदारीसे अिस पर अमल करना नही चाहते, तो मैं अुन्हे अिस्तीफा देकर चले जानेकी छूट दूंगा। लेकिन अगर मत्री अपना फर्ज समझ ले और अिस नीतिको अमली शकल देनेकी कोशिश करे, तो यह नौबत ही न आये। सिर्फ हुक्म निकाल देनेसे काम नही चलेगा।

युनिवर्सिटी-शिक्षाकी कायापलट

"प्रौढ शिक्षाके बारेमें मैंने जो कहा, वह युनिवर्सिटी-शिक्षा पर भी अुसी तरह लागू होता है। अुनका हिन्दुस्तानकी जरूरतोंके साथ पूरा-पूरा मेल बैठना चाहिये। अिसलिअे युनिवर्सिटीकी शिक्षा नअी तालीमके सिलसिलेमें जारी रहनेवाला अुनका विस्तृत रूप ही होना चाहिये। यही मेरी बातका असल मुद्दा है। अगर अिस बारेमें आप मुझसे पूरी तरह अेकराय नहीं है, तो मुझे डर है कि मेरी सलाहसे आपको कोअी फायदा नहीं होगा। लेकिन अगर मेरे साथ आप भी अिस बातको मानते हैं कि आजकी युनिवर्सिटी-शिक्षाने हमें आजादीका रास्ता दिखानेके बजाय गुलाम ही बनाया है, तो मेरे जैसे आप भी अुसे पूरी तरह बदल डालने और मुल्ककी जरूरतोंके मुताबिक नअी शकल देनेके लिअे अुतावले हो अुठेंगे।

"आज युनिवर्सिटियोंमें तालीम पाये हुअे हमारे नौजवान या तो सरकारी नौकरियोंके पीछे मारे-मारे फिरते हैं या अुसमें नाकामयाब होकर लोगोंको लूट-पाटके लिअे भड़काकर अपनी कुढन मिटाते हैं। लोगोंसे भीख माँगने या अुनके टुकडोंके मुहताज बननेमें भी वे शरम महसूस नहीं करते। अुनकी दुर्दशाकी भी कोअी हद है! आज युनिवर्सिटियोंको चाहिये कि वे मुल्ककी आजादीके लिअे जीने और मरनेवाले जनताके सेवक तैयार करें। अिसलिअे मेरी राय है कि तालीमी संघके शिक्षकोंकी मददसे युनिवर्सिटी-शिक्षाको नअी तालीमके साथ जोड़कर अुनकी लाअिनमें ले आना चाहिये।

"आपने लोगोंके नुमाअिन्दोंके नाते हुकूमतकी बागडोर सँभाली है। अिसलिअे अगर आप लोगोंको अपने साथ नहीं ले सके, तो आपके हुक्म कौन्सिल हॉलकी चहारदीवारीके आगे नहीं बढ़ पायेंगे। आज बम्बअी और अहमदाबादमें जो कुछ हो रहा है, अुससे अगर यह जाहिर होता है कि लोगों परसे कांग्रेसका काबू अुठ गया है, तो वह बुरा

*

अंकुर ही कहा जायगा। नअी तालीम आज भी अेक कमजोर पौदा ही है, फिर भी वह भविष्यमें बडे भारी पेडकी शकल लेगी। लेकिन अगर जनता अुसे पसन्द न करे, तो मन्त्रियोंके हुक्मोंके सहारे वह पनप नहीं सकती। अिसलिअे अगर आप जनताको अपनी रायकी नहीं बना सकते, तो मैं आपको सलाह दूंगा कि आप अिस्तीफा दे दें। आपको अराजकतासे डरना नहीं चाहिये। आप लोग अपनी बुद्धिके कहे मुताबिक अपना फर्ज अदा करें और बाकी सब भगवान्के भरोसे छोड दें। अुस तजरबेसे भी लोग सच्ची आजादीका सबक सीखेंगे।"

'अिसके बाद गांधीजीने लोगोंसे सवाल पूछनेके लिअे कहा। पहला सवाल था "क्या स्वावलम्बनके सिद्धान्तके बिना भी नअी तालीम दी जा सकती है?"

गांधीजीने जवाब दिया "आप बेशक अिसकी कोशिश कर सकते हैं। लेकिन अगर आप मेरी सलाह पूछेंगे, तो मैं यही कहूंगा कि वैसी हालतमें आपका नअी तालीमको पूरी तरह भूल जाना ही बेहतर होगा। स्वावलम्बन मेरे लिअे नअी तालीमकी पहली शर्त नहीं, बल्कि अुसकी सच्ची कसौटी है। अिसका मतलब यह नहीं कि नअी तालीम शुरूसे ही स्वावलम्बी बन जायगी। नअी तालीमकी स्कीमके मुताबिक सात सालके पूरे अरसेमें आमद और खर्चका हिसाब बराबर बैठना चाहिये। नहीं तो विद्यार्थियोंकी ट्रेनिंग पूरी होनेके बाद यही साबित होगा कि नअी तालीम अुन्हें जिन्दगीकी तालीम नहीं दे सकती। स्वावलम्बनके बिना नअी तालीम वैसी ही मानी जायगी, जैसे बिना प्राणका शरीर।"

अिसके बाद और भी सवाल जवाब हुअे।

स० — हमने बुनियादी दस्तकारीके जरिये शिक्षा देनेके सिद्धान्तको मान लिया है। लेकिन मुसलमान किसी वजहसे चरखेके खिलाफ हैं। जिन जगहोंमें कपास पैदा होती है, वहाँ तो आपका कताअी पर जोर देना ठीक मालूम होता है। लेकिन क्या आप अिस बातको नहीं मानते

कि जहाँ कपास पैदा नहीं होती, वहाँ चरखे और कताअीके लिअे कोअी जगह नहीं है। क्या अैसी जगहोंमें कताअीके बजाय कोअी दूसरी दस्तकारी नहीं ली जा सकती — मसलन्, खेती?

ज० — यह बहुत पुराना सवाल है। कोअी भी बुनियादी दस्तकारी, जिसके जरिये शिक्षा दी जाय, सब जगहके लिअे मौजूँ होनी चाहिये। सन् १९०८ में ही मैं अिस नतीजे पर पहुँच गया था कि हिन्दुस्तानको आजाद करने और अुसे अपने पाँव पर खड़ा होने लायक बनानेके लिअे अुसके हर घरमें चरखा चलना चाहिये। कपासकी अेक फली भी पैदा न करके अगर अिंग्लैण्ड सारी दुनियाको और हिन्दुस्तानको कपड़ा भेज सकता है, तो सिर्फ पड़ोसके सूबे या जिलेसे कपास मँगाकर भी हम अपने घरोंमें कताअी शुरू नहीं कर सकते? सच पूछा जाय तो पुराने जमानेमें हिन्दुस्तानका अेक भी अैसा हिस्सा नहीं था, जहाँ कपास न पैदा की जाती हो। सिर्फ 'कपास पैदा कर सकनेवाली धरती' में ही कपास पैदा की जाय, यह नुकसानदेह चीज तो हाल ही सूती माल तैयार करनेवाले निहित स्वार्थोंने हिन्दुस्तान पर जबरन् लादी है। अैसा करनेमें अुन्होंने गरीब टैक्स देनेवालों और सूत कातनेवालोंके हितकी जरा भी परवाह नहीं की। आज भी पेड़की कपास हिन्दुस्तानमें हर जगह मिलती है। अैसी लचर दलीलें यह साबित करती हैं कि कोअी कठिन काम हाथमें लेनेकी और वक्त आने पर नये-नये जरिये खोज निकालनेकी हममें योग्यता नहीं है। अगर कच्चे मालको अेक जगहसे दूसरी जगह ले जानेके कामको दूर न की जा सकनेवाली अड़चन मान लिया जाय, तो सारे कारखाने बन्द हो जायँ।

अिसके अलावा, किसी आदमीको अुसकी कोशिशोंसे अपना तन ढँकने लायक बना देना — जब कि अैसा न किया जाने पर अुसे नंगा रहना होगा — अपने आपमें अेक तालीम है। और, कताअीसे सबंध रखनेवाले अलग-अलग कामोंकी बुद्धिपूर्वक छानबीन की जाय, तो अुनसे

बड़ी बातें सीखी जा सकती हैं। सच पूछा जाय तो कताओीमें अिन्सानकी सारी तालीम समाओी हुओी है, जो दूसरी किसी दस्तकारीमें नहीं मिलेगी। हो सकता है कि आज हम मुसलमानोंका शक दूर न कर सकें, क्योंकि अुसकी जड़ अुनका भ्रम है। और जब तक अिन्सान पर भ्रमका जादू बना रहता है, तब तक भ्रम ही अुसे सच्चा मालूम होता है। लेकिन अगर हमारी श्रद्धा शुद्ध और दृढ़ है और हम अपनी अिस पद्धतिकी सफलता अुन्हें दिखा सकें, तो मुसलमान खुद होकर हमारे पास आयेंगे और हमारी सफलताका रहस्य हमसे जानना चाहेंगे। अभी तक अुन्होंने यह महसूस नहीं किया है कि मुस्लिम लीग या दूसरी मुस्लिम संस्थाओंके बनिस्बत चरखेने ही गरीबसे गरीब मुसलमानोंकी बेहतर सेवा की है, मुसीबतमें अुन्हें ज्यादासे ज्यादा राहत पहुँचाओ है। बंगालके सबसे ज्यादा कतवैये और कतिनें मुसलमान ही हैं। मुसलमानोंको यह भी नहीं भूलना चाहिये कि ढाकाके शबनमकी [illegible] सारी दुनियामें फैलानेवाले होशियार मुसलमान जुलाहे और [illegible] साथ बारीकसे बारीक सूत कातनेवाली मुसलमान कतिनें [illegible] थीं।

यही बात महाराष्ट्र पर भी लागू होती है। अिस भ्रमका सबसे [illegible] अिलाज यह है कि हम अपना फर्ज अदा करनेका ही खयाल [illegible]। [illegible] सच्चाओी ही कायम रहेगी, बाकी सब समयके बहावमें [illegible]। सारी दुनिया मुझे छोड़ दे, फिर भी मुझे अकेले ही [illegible] सच्चाओी पर डटे रहना चाहिये। हो सकता है कि आज [illegible] कोओी न सुने, लेकिन अगर वह सच्ची है, तो दूसरी [illegible] तालीम [illegible] लोग अुसे जरूर सुनेंगे।

[illegible]

[illegible] पूछा : "नयी तालीमके लिये [illegible] पसन्द [illegible]। अिस दस्तकारी [illegible]

शिक्षामें प्रगति करनेके लिये क्या किया जाना चाहिये?" गांधीजीने अुन्हें अंग्रेजीमें सवाल करनेके लिये चिढ़ाते हुये हँसीके फव्वारोंके बीच सुझाया "अगर आप हिन्दुस्तानीमें नहीं बोल सकते थे, तो आपको अपने पडोसीके कानमें धीरेसे यह बात कह देनी थी और वे मुझे अुसे हिन्दुस्तानीमें कह सुनाते।"

गांधीजीने आगे चलकर कहा· "अगर आप यह महसूस करते हैं कि आजकी शिक्षा हिन्दुस्तानको आजाद बनानेके बजाय अुसकी गुलामीको और ज्यादा बढ़ाती है, तो आप अुसे बढ़ावा देनेसे अिनकार कर दें, भले ही अुसकी जगह कोअी दूसरी शिक्षा ले या न ले। आप नअी तालीमकी चहारदीवारीके भीतर जितना कर सकें, करें और अुससे सन्तोष मानें। अगर लोग अिस शर्त पर मंत्रियोंको अुनकी जगह रखना नहीं चाहते, तो वे अिस्तीफा दे दें। वे लोगोंको जिन्दगी देनेवाला खाना नहीं दे सकते या लोग अैसा खाना पसन्द नहीं करते, अिसलिये लोगोंको जहर खिलानेमें तो वे हरगिज हिस्सा न लेंगे।"

स०—आप कहते हैं कि नअी तालीमके लिये हमें पैसेकी नहीं, बल्कि आदमियोंकी जरूरत है। लेकिन लोगोंको सिखानेके लिये हमें संस्थाओंकी जरूरत होगी और संस्थाओंके लिये पैसेकी भी। हम बुराअियोंके अिस घेरेसे कैसे बाहर निकलें?

ज०—अिसका अिलाज आपके ही हाथोंमें है। अपने-आपसे यह काम शुरू कीजिये। अंग्रेजीकी अेक बड़ी अच्छी कहावत है दान घरसे शुरू होता है। लेकिन आप खुद साहब बनकर आराम-कुर्सी पर बैठें और दूसरे 'कम योग्यतावालों' से आशा करें कि वे अिस कामके लिये तैयार हों, तो आपको सफलता नहीं मिल सकती। काम करनेका मेरा ढंग अिससे जुदा है। बचपनसे मेरी यह आदत रही है कि मैंने अपने-आपसे और आसपासके लोगोंसे ही किसी कामकी शुरुआत की है—फिर वह कितनी ही छोटी शकलमें क्यों न हो। अिस बारेमें

हम ब्रिटिश लोगोंसे सबक लें। पहले पहल सिर्फ मुट्ठीभर अंग्रेज हिन्दुस्तानमें आकर बसे और धीरे-धीरे अुन्होंने अपना अेक साम्राज्य खड़ा कर लिया। यह साम्राज्य राजनैतिक दृष्टिसे अुतना ठगवना नहीं है, जितना कि सांस्कृतिक दृष्टिसे। अुसने हम पर अैसा जादू डाला है कि हम अपनी मातृभाषाको भी भूल गये और अंग्रेजीके वसमें होकर अुससे वैसे ही चिपटे रहते हैं, जैसे अेक गुलाम अपनी बेड़ियोंसे। लेकिन अिस साम्राज्य-निर्माणके पीछे कितनी श्रद्धा, कितनी भक्ति, कितनी कुरबानी और कितनी मेहनत छिपी हुअी है! यह अिस बातका सबूत है कि अिच्छा होने पर रास्ता भी निकल आता है। अिसलिअे हम अुठें और पक्के अिरादेसे अपने काममें लग जायें। यदि रास्तेमें आनेवाले बड़े-से-बड़े खतरोंकी भी हम परवाह न करें, तो हमारी सारी मुश्किलें बरफकी तरह गल जायेंगी।

अंग्रेजीकी जगह

स० — अिस कार्यक्रममें अंग्रेजीकी क्या जगह रहेगी? अुसे अनिवार्य बनाया जाना चाहिये या दूसरी भाषाकी तरह पढ़ाया जाना चाहिये?

ज० — मेरी मातृभाषामें कितनी ही खामियाँ क्यों न हों, मैं अुससे अुसी तरह चिपटा रहूँगा, जैसे अपनी माँकी छातीसे। वही मुझे जिन्दगी देनेवाला दूध दे सकती है। मैं अंग्रेजीको अुसकी जगह प्यार करता हूँ। लेकिन अगर वह अुस जगहको हड़पना चाहती है, जिसकी वह हकदार नहीं है, तो मैं अुससे सख्त नफरत करूँगा। यह बात मानी हुअी है कि अंग्रेजी आज सारी दुनियाकी भाषा बन गअी है। अिसलिअे मैं अुसे दूसरी भाषाके तौर पर जगह दूँगा — लेकिन युनिवर्सिटीके कोर्समें, स्कूलोंमें नहीं। वह कुछ लोगोंके सीखनेकी चीज हो सकती है, लाखों-करोड़ोंकी नहीं। आज जब हमारे पास प्राथमिक शिक्षाको भी देशमें अनिवार्य बनानेके साधन नहीं हैं, तो हम अंग्रेजी

सिखानेके जरिये कहाँसे जुटा सकते हैं? रूसने बिना अंग्रेजीके ही विज्ञानमें अितनी तरक्की की है। आज अपनी मानसिक गुलामीकी वजहसे ही हम यह मानने लगे हैं कि अंग्रेजीके बिना हमारा काम चल ही नहीं सकता। मैं अिस चीजको नहीं मानता।

हरिजनसेवक, २५-८-'४६

३९

ग्राम-विद्यापीठ

डॉक्टर किनी मैसूरमें शिक्षा-विभागके मंत्री थे। अुन्होंने 'हरिजन' के लिअे अेक लम्बा लेख लिखा है। अुनका मतलब यह है कि हिन्दुस्तान अिसलिअे गरीब रहा है कि राजसत्ताने गरीब देहातको सच्ची शिक्षासे दूर रखा है। वे मानते हैं कि हमारे शहरोंमें जो विद्यापीठ या युनिवर्सिटियाँ हैं, अुनमें देहातकी सेवा नहीं हो सकेगी। क्योंकि अिन विद्यापीठोंमें अंग्रेज सरकारने पढाअीका जो अिन्तजाम किया है, वह सब पश्चिमकी बातोंको बढानेके लिअे है, और अिन विद्यापीठोंमें देहातके लायक शिक्षा चालू करना मुश्किल है।

डॉ० किनी कहते हैं कि देहातके लिअे देहाती विद्यापीठ होने चाहिये, जिनमें बडी अुमरके लोग भी पढ सकें।

किनी महाशय लिखते हैं कि ग्रामीण विद्यापीठोंमें खेतीविद्या, फलविद्या, रेशमविद्या, गोविद्या, मुर्गीविद्या, मधुविद्या, मछलीविद्या, सहकारविद्या, ग्रामीण स्वच्छता, ग्रामीण विद्युत्विद्या, ग्रामीण रास्ते, ग्रामीण गृहविद्या, ग्रामीण कुम्हारविद्या, ग्रामीण अर्थशास्त्र, ग्रामीण समाजशास्त्र, ग्राम-रचना, ग्रामीण व्यापार, और ग्रामीण सराफा व साहूकारी-विद्या वगैरा सिखानेका अिन्तजाम होना चाहिये। अगर हिन्दुस्तानके देहातमें ये सब चीजें आरम्भके रूपमें सिखाअी जायें, तो लेखक कहते हैं कि

देहातकी शकल ही बदल जायगी, अुन्हें शहरोकी ओर नही देखना पडेगा, बल्कि अुलटे शहरोको देहातकी ओर देखना पडेगा।

डॉ० किनीके लेखका मैंने सार ही दिया है। अगर केन्द्रीय सरकार और प्रान्तीय सरकारें अिसे अपना लें, तो बडा काम हो सकता है। अुसको योग्य रूप देनेके लिअे किनी महोदयको डॉ० जाकिर हुसैन और आर्यनायकम् दम्पतीसे सलाह-मशविरा करना चाहिये। मैं तो मानता हूँ कि शहरके विद्यापीठ भी देहाती विद्यापीठमें बदल सकते हैं।

हरिजनसेवक, १३-१०-'४६

४०

नये विश्व-विद्यालय

आजकल देशमें नये विश्व-विद्यालय कायम करनेकी आँधी-सी अुठ खडी हुअी है। गुजरातको गुजराती भाषाके लिअे, महाराष्ट्रको मराठीके लिअे, कर्नाटकको कन्नडके लिअे, अुडीसाको अुडियाके लिअे और आसामको आसामी भाषाके लिअे विश्व-विद्यालय चाहिये। मुझे लगता है कि अगर प्रान्तोकी अिन सम्पन्न भाषाओं और अुन्हें बोलनेवाले लोगोको पूरी-पूरी अुन्नति करनी हो, तो अैसे विश्व-विद्यालय होने ही चाहिये।

लेकिन अैसा मालूम होता है कि अिन विचारो पर अमल करनेमें जरूरतसे ज्यादा अुतावलापन दिखाया जा रहा है। अिसके लिअे सबसे पहले भाषावार प्रान्तोकी रचना की जानी चाहिये। अुनका राज-तन्त्र अलग होना चाहिये। बम्बअी प्रान्तमें गुजराती, मराठी और कन्नड तीन भाषाअें बोली जाती हैं। मद्रास प्रान्तमें तामिल, तेलुगू, मलयालम और कन्नड चार भाषाअें बोली जाती हैं। आन्ध्र देशका अपना अलग

विश्व-विद्यालय है। अुसे कायम हुअे थोड़ा समय हो गया। लेकिन अुसने काफी अुन्नति की है, अैसा नहीं कहा जा सकता। अनामलै विश्व-विद्यालय तामिल भाषाके लिअे माना जा सकता है। लेकिन मैं नहीं समझता कि अुससे तामिल भाषाका पोषण होता है या अुसका गौरव बढ़ा है।

नये विश्व-विद्यालयके लिअे ठीक-ठीक वातावरण होना चाहिये। अुसे जमानेके लिअे अैसे स्कूल और कॉलेज होने चाहियें, जो अपने-अपने प्रान्तकी भाषाओंके जरिये तालीम दें। तभी विश्व-विद्यालयका पूरा वातावरण खड़ा हुआ माना जा सकता है। विश्व-विद्यालय चोटीकी शिक्षण-संस्था है। लेकिन अगर नींव मजबूत न हो, तो अुस पर अिमारतकी मजबूत चोटी खड़ी करनेकी आशा नहीं रखी जा सकती।

हालांकि हम राजनैतिक दृष्टिसे आजाद हैं, फिर भी पश्चिमके प्रभावसे अभी आजाद नहीं हुअे हैं। जो यह मानते हैं कि पश्चिममें ही सब कुछ है और हर तरहका ज्ञान वहींसे मिल सकता है, अुनसे मुझे कुछ नहीं कहना है। न मेरा यही विश्वास है कि पश्चिमसे हमें कोअी अच्छी चीज मिल ही नहीं सकती। वहां क्या अच्छा है और क्या बुरा है, यह समझने लायक प्रगति अभी हमने नहीं की है। अभी यह नहीं कहा जा सकता कि परदेशी हुकूमतसे आजाद हो गये हैं, अिसलिअे हम परदेशी भाषा या परदेशी विचारोंके असरसे भी आजाद हो गये हैं। क्या यह समझदारीकी बात नहीं होगी, क्या देशके प्रति रहनेवाले हमारे फर्जका यह तकाजा नहीं है कि नये विश्व-विद्यालय कायम करनेके पहले हम थोड़ी देर ठहरें और अपनी नअी मिली हुअी आजादीके जीवन देनेवाले वातावरणमें कुछ सोचें? विश्व-विद्यालय सिर्फ पैसोंसे या बड़ी-बड़ी अिमारतोंसे नहीं बनते। विश्व-विद्यालयोंके पीछे जनताकी जाग्रत रायका होना सबसे जरूरी है। अुनके लिअे पढ़ानेवाले योग्य शिक्षकोंकी जरूरत है। अुन्हें कायम करनेवाले लोगोंमें काफी दूरंदेशी होनी चाहिये।

मेरे विचारसे विश्व-विद्यालय कायम करनेके लिअे पैसेका प्रबंध करनेका काम लोकशाही हुकूमतका नहीं है। अगर लोग अुन्हें कायम करना चाहेंगे, तो वे अुनके लिअे पैसे भी देंगे। लोगोंके पैसेसे कायम किये जानेवाले विश्व-विद्यालय देशकी शोभा बढायेंगे। जिस देशका राजकाज विदेशियोंके हाथमें होता है, वहाँ सब कुछ अूपरसे टपकता है, और अिसलिअे लोग दिनोदिन पराधीन या गुलाम बनते जाते हैं। जहाँ जनताकी हुकूमत होती है, वहाँ हर चीज नीचेसे अूपर अुठती है, और अिसलिअे वह टिकती है, शोभा पाती है और लोगोंकी शक्ति बढाती है। जिस तरह अच्छी जमीनमें बोया हुआ बीज दस गुनी अुपज देता है, अुसी तरह विद्याकी अुन्नतिके लिअे खर्च किया हुआ पैसा कअी गुना लाभ पहुँचाता है। विदेशी हुकूमतके मातहत कायम किये गये विश्व-विद्यालयोंने अिससे अुलटा काम किया है। अुनका दूसरा कोअी नतीजा हो भी नहीं सकता था। अिसलिअे हिन्दुस्तान जब तक नअी मिली हुअी आजादीको अच्छी तरह पचा नहीं लेता, तब तक नये विश्व-विद्यालय कायम करनेमें मुझे बड़ा डर मालूम होता है।

अिसके अलावा, हिन्दू-मुसलमानोंके झगडेने अैसा भयकर रूप ले लिया है कि आज पहलेसे यह कहना मुश्किल हो गया है कि हम कहाँ जाकर रुकेंगे। मान लीजिये कि अनहोनी बात हो जाय और हिन्दुस्तानमें सिर्फ हिन्दू और सिक्ख ही रहें और पाकिस्तानमें सिर्फ मुसलमान, तो हमारी शिक्षा जहरीला रूप ले लेगी। अगर हिन्दू-मुसलमान और दूसरे धर्मके लोग हिन्दुस्तानमें भाअी-भाअी बनकर रहेंगे, तो स्वभावत हमारी शिक्षा सौम्य और सुन्दर रूप लेगी। या तो हमारे देशमें अलग-अलग धर्मोंके लोगोंके मित्रता और भाअीचारेसे रहते आनेके कारण जो मिलीजुली सुन्दर सभ्यता पैदा हुअी है, अुसे हम मजबूत बनायेंगे और ज्यादा अच्छा रूप देंगे, या फिर हम अैसे समयकी खोज करेंगे जब हिन्दुस्तानमें सिर्फ हिन्दू धर्मके लोग ही रहते थे। अितिहासमें

अैसा कोअी समय शायद न मिल सके। लेकिन अैसा कोअी समय मिला और हम अुसके पीछे चले, तो हम कअी सदी पीछे हट जायेंगे और दुनिया हमसे नफरत करेगी और हमें कोसेगी। अुदाहरणके लिअे, अगर हम अितिहासके मुगलकालको भूलनेकी बेकार कोशिश करेंगे, तो हमें दुनियामें सबसे अच्छी दिल्लीकी जामा मसजिदको भूल जाना होगा, या अलीगढकी मुस्लिम युनिवर्सिटीको भूलना होगा, या दुनियाके सात आश्चर्योंमें से अेक आगराके ताजको, या मुगलकालमें बने हुअे दिल्ली और आगराके बडे बडे किलोंको भूलना पडेगा। तब हमें अुसी दृष्टिसे अपना अितिहास फिरसे लिखना होगा। आजका वातावरण सचमुच अैसा नहीं है, जिसमें हम अिस बारेमें किसी सही नतीजे पर पहुँच सकें। अपनी दो महीनेकी आजादीको अभी हम गढनेमें लगे हैं। हम नहीं जानते कि आखिरमें वह क्या रूप लेगी। जब तक हम ठीक-ठीक यह नहीं जान लेते, तब तक अगर हम मौजूदा विश्व-विद्यालयोंमें ही भरसक फेरफार करें और आजकी शिक्षण-संस्थाओंमें आजादीके प्राण फूंकें, तो अितना काफी होगा। अिस तरह हमें जो अनुभव होगा, वह नये विश्व-विद्यालय कायम करनेमें हमारी मदद करेगा।

अब रही बात बुनियादी तालीमकी। अिस तालीमको शुरू हुअे अभी आठ बरस हुअे हैं। अिसलिअे अुसके अमलमें जो अनुभव हुआ है, वह हमें मैट्रिकके दरजेसे आगे नहीं ले जाता। फिर भी, जो लोग अिसके प्रयोगमें लगे हैं, अुनके मनमें बुनियादी तालीमका विकास होता ही रहता है। जिस संस्थाके पीछे आठ सालका ठोस अनुभव है, अुसकी सिफारिशोंको कोअी भी शिक्षाशास्त्री ठुकरा नहीं सकता। हमें यह ध्यान रखना चाहिये कि यह बुनियादी तालीम देशके वातावरणमें से पैदा हुअी है और देशकी जरूरतोंको पूरा कर सकती है। यह वातावरण हिन्दुस्तानके सात लाख गाँवोंमें और अुनमें रहनेवाले करोड़ों लोगोंमें छाया हुआ है। अुनको भुलाकर आप हिन्दुस्तानको भी भूल जायेंगे। सच्चा हिन्दुस्तान शहरोंमें नहीं, बल्कि अिन सात

ग्राम गांवोमें बसा है। शहर विदेशी हुकूमतकी जरूरतें पूरी करनेके लिअे खडे हुअे थे। आज भी वे पहलेकी तरह निभ रहे है। क्योंकि विदेशी हुकूमत हिन्दुस्तानसे चली गअी, लेकिन अुसका असर अभी बना हुआ है — अितनी जल्दी वह जा भी नहीं सकता।

यह लेख मैं नअी दिल्लीमें लिख रहा हूं। यहां बैठे-बैठे मैं गांवोंका क्या खयाल कर सकता हूं? जो बात मुझ पर लागू होती है, वही हमारे मन्त्रि-मण्डल पर भी लागू होती है। फर्क यही है कि अुन पर यह विशेष रूपसे लागू होती है।

यहां हम बुनियादी तालीमके खास-खास सिद्धान्तों पर विचार करें:

१ पूरी शिक्षा स्वावलम्बी होनी चाहिये। यानी, आखिरमें पूंजीको छोडकर अपना सारा खर्च अुसे खुद निकालना चाहिये।

२. अिसमें आखिरी दरजे तक हाथका पूरा-पूरा अुपयोग किया जाय। यानी, विद्यार्थी अपने हाथोंसे कोअी न कोअी अुद्योग-धंधा आखिरी दरजे तक करें।

३ सारी तालीम विद्यार्थियोंकी प्रान्तीय भाषा द्वारा दी जानी चाहिये।

४ अिसमें साम्प्रदायिक धार्मिक शिक्षाके लिअे कोअी जगह नहीं होगी। लेकिन बुनियादी नैतिक तालीमके लिअे काफी गुंजाअिश होगी।

५ यह तालीम, फिर अुसे बच्चे लें या बडे, औरत ले या मर्द, विद्यार्थियोंके घरोंमें पहुंचेगी।

६ चूंकि अिस तालीमको पानेवाले लाखों-करोडों विद्यार्थी अपने आपको सारे हिन्दुस्तानके नागरिक समझेंगे, अिसलिअे अुन्हें अेक आन्तरप्रान्तीय भाषा सीखनी होगी। सारे देशकी यह अेक भाषा नागरी या अुर्दूमें लिखी जानेवाली हिन्दुस्तानी ही हो सकती है। अिसलिअे विद्यार्थियोंको दोनों लिपियां अच्छी तरह सीखनी होंगी।

अिस बुनियादी विचारके बिना या अिसको ठुकराकर जो नये विश्व-विद्यालय कायम किये जायेंगे, वे मेरे विचारसे देशको कोअी फायदा नही पहुँचायेंगे, अुलटे नुकसान ही करेंगे। अिसलिअे सब शिक्षाशास्त्री अिस नतीजे पर पहुँचेंगे कि नये विश्व-विद्यालय खोलनेमें पहले थोडी देर ठहरना और सोच-विचार करना जरूरी है।

हरिजनसेवक, २-११-'४७

४१

तालीमी संघके सदस्योंसे बातचीत

[गांधीजीका कार्यक्रम निश्चित न होनेकी वजहसे तालीमी संघकी बैठक बुलानेमें काफी परेशानी हुअी। आखिर किस्मतसे गांधीजी वक्त पर दिल्लीसे वापस लौट आये और पटनामें बैठक हो सकी। अिस अरसेमें गांधीजीने दो दिन (२२ और २३ अप्रैल, १९४७) तक रोज दो घंटेका समय दिया। बैठकमें अुठाये गये सवाल और गांधीजी द्वारा दिये गये अुनके जवाबोंकी श्री देवप्रकाश नय्यर द्वारा ली गअी रिपोर्ट नीचे दी जाती है. —स०]

बजट

जाकिर साहब — सुबहकी मीटिंगमें प्रान्तोंका हाल सुनाया गया। बजट पास हुआ और अिस बातकी चर्चा हुअी कि सरकारसे कितनी रकम लें?

गांधीजी — हम जितनी चाहें, सरकार दे देगी। लेकिन अगर हमने सरकारके सहारे खडे होनेकी कोशिश की, तो हमारा काम मिट जायगा।

जाकिर साहब — नहीं, वह तो सिर्फ तालिब-अिल्मोंकी फीसके बारेमें बात थी। कितने विद्यार्थी लें, यह मसला था। ज्यादा लेनेमें खर्च तो निकल आयगा, पर बहुत ज्यादा लेनेसे काम बिगडेगा।

गाधीजी — यह तो साफ बात है। जितने विद्यार्थी लेना चाहे, अुतने ही लें। ज्यादा न ले। बजटके बारेमें मुझे काफी कहना है। अिसके लिअे तो आशादेवी और आर्यनायकम् मेरे साथ बैठें और जो तब्दीली कर सकते हैं, करें। तीन बरसके बाद न मुझसे, न किसी औरसे कुछ लेना है। लेकिन अैसा नही कर सकेंगे, तो नअी तालीम चलनेवाली नही। अगर आप चाहते हैं कि वह स्वावलम्बी बने, तो अुसी तरहसे बजट बनाकर चलिये। अगर तीन सालके बाद अैसा न हो, तो देशके सामने हमें कहना होगा कि हम हार गये। अिस डरसे हम चुप न रहें कि हमारी बनी हुअी प्रतिष्ठाको धक्का पहुँचेगा। सच्ची प्रतिष्ठा तो कामयाबी है।

चादर देखकर पाँव फैलाअिये

जाकिर साहब — मद्रास प्रान्तकी तरफसे माँग आअी है कि वहाँ तालीमी सघकी तरफसे अेक स्कूल चलाया जाय। खर्च सरकार देनेको तैयार है। अुन्होंने रामचन्द्रम्को भी अिसके लिअे माँगा और कहा है कि वे शिक्षा-विभागके मत्रीके मातहत रहकर नअी तालीमको चलानेकी जिम्मेदारी लें।

गाधीजी — रामचन्द्रम् आये तो नही न? मुझे अुनसे अिस बारेमें बात करनी होगी। जहाँ तक स्कूलकी बातका सबध है, हममें ताकत हो तो अुसे हाथमें लें, नही तो हम अुन्हें (सरकारको) भी फँसायेंगे। आज हमारे पास सत्ता आ गअी है। करोडो रुपये हाथमें आ गये हैं। अुनको जिस तरहसे चाहे, हम खर्च कर सकते हैं। अगर दिल नही पूछेगा, तो शायद कोअी भी पूछनेवाला नही होगा। अेक-दो साल अैसा चलेगा। फिर अगर ठोस काम नही होगा, तो वह ज्यादा देर नही चल सकेगा। अिसलिअे मेरी सलाह है कि अगर शक्ति हो, तो अिस कामको हाथमें लें। अगर हमारी यह तैयारी नही है, तो कहना होगा कि हम केन्द्रमें ही सिखा सकते हैं; प्रान्तो तक नही पहुँच सकते। सेवाग्राममें हमारा जो काम चलता है, अुसे मद्रासके शिक्षक आकर देख लें।

तीन तरहकी तालीम

हमारी तालीम तीन तरहकी है। जिससे बुद्धि, शरीर और आत्मा तीनों बढते हैं। दूसरे ढगकी तालीमसे सिर्फ बुद्धि बढती है। जिसमें भी मेरा दावा है कि नअी तालीममें बुद्धि शुद्ध होती है और अुनकी प्रगति सन्तुलित होती है। आत्माको भी खुराक मिलती है। मजहबी तालीम नही होगी तो क्या ? कोअी जरूरी नही कि आत्माको मजहबी तालीम — वह भी किताबसे दी हुअी — के साथ जोडा जाय। हम सब धर्मोंके अच्छे-अच्छे सिद्धान्त जीवनके मारफत लडकोको सिखायेंगे।

कातना और झाडू देना सिखानेसे ही नअी तालीमका मकसद पूरा नही हो जाता। वह तो करना ही है, पर वही काफी नही है। झाडू देनेमें अगर आत्मा नही बढती, तो अुसे छोडना होगा। मैं यहाँ दूसरे कामोमें पड़ा हूं, पर नअी तालीमको कभी भूलता नही हूं।

नअी तालीममें खादीका स्थान

नअी तालीमकी बातसे पहले चरखेकी बात थी। जब १९०८ में मैंने दक्षिण अफ्रीकामें अिसकी बात छेडी, तब अुसके बारेमें मैं कुछ भी नही जानता था। अुसकी जानकारी पीछे आअी। बादमें आया सविनय कानून-भग और अली भाअियोका जमाना। अिसमें भी चरखेका बडा स्थान था। ग्ल आयंनामें मैंने बताया था कि मेरे सामने खादीकी क्या तसवीर है। खादी वह है जो मिलके सारे कपडोकी जगह ले सके। मैंने यह नही कहा कि नअी तालीममें खादीको ही रखना है। पर आप मुझे बताअिये कि वह कौनसी चीज है, जो गरीबीको मिटा सकती है ? तब मैं अपनी गलती समझ लूंगा। मैंने विनोबा, कृष्णदास और नारणदाससे पूछा था। पर मेरे सामने तो अेक सादा हिसाब है। सब हिन्दुस्तानी अगर अेक घटा कातें, तो सबको जरूरी कपडा मिल सकता है। हरअेकको अगर ८ घण्टे अिनमें देने पडें, तो

खादीको मरना है। क्योंकि लोगोंको दूसरे काम भी तो रहते हैं। अनाज पैदा करना है, दिमागी काम करना है। और नअी तालीममें अगर कभी भी बैल जैसा काम करना पड़े, तो वह निकम्मी बन जायगी। कातनेमें अेक घण्टा भी जाय, तो अुससे आत्मा बढ़ती ही है।

अुत्तर-बुनियादी तालीम

सैयदेन साहबने जब कहा कि अुत्तर-बुनियादी तालीममें तो मिल-मशीनरीका काम सिखाना ही होगा, तो मैं अुसे मान न सका। मेरी निगाहमें तो अगर बुनियादी तालीमकी नींव खादी पर ठीक हो, तो अुत्तर-बुनियादी तालीममें अुसे ही बढ़ाना होगा। कल देवप्रकाशने मुझे झाड़ू और तकली पर अेक लेख लिखकर बताया। अुन्होंने तो नअी तालीमका कुछ काम कर लिया है। अगर अुस लेखमें जो बताया गया है, वह सब सही हो तो अुसमें काफी चीजें आ जाती हैं। अुसमें आला दरजेकी अिंजीनियरिंग भी आ जाती है। लेकिन हम वह सब तभी सिखा सकते हैं, जब हमने सब हजम कर लिया हो। हमने अिन चीजोंके शास्त्र नहीं बनाये। अंग्रेजोंकी मिलकी बुनियाद हमारी तकली और करघे पर है। अुन्होंने मिल बनाअी, क्योंकि अुन्हें हमें चूसना था। लेकिन हम अैसा नहीं करना चाहते। हमें मिलोंकी जरूरत नहीं। हमें तकली और करघेका ही शास्त्र बनाना चाहिये। युरोपने जैसा किया, अगर हिन्दुस्तान भी वैसा ही करे, तो हिन्दुस्तानका नाश होनेवाला है, दुनियाका नाश होनेवाला है। हाँ, अगर आपका खयाल अैसा बन गया है, तो मिलोंकी ही बात कीजिये।

जाकिर साहब — हमारे स्कूलोंसे लड़के निकलते हैं तो वे मिलोंमें नौकरी ढूँढते हैं।

गांधीजी — मेरे स्कूलसे जो लड़के निकलेंगे, वे मिलकी तरफ नहीं देखेंगे। मिलोंका कपड़ा खादीके साथ-साथ नहीं बिकना चाहिये। मिलें हिन्दुस्तानसे बाहर कपड़ा भेज सकती हैं। लंकाशायरका कपड़ा आपको लंकाशायरमें नहीं मिलता। सब बाहर चला जाता है। पर

हमारी मिलोंका कपड़ा बाहरके बाजारमें भी शायद ज्यादा देर तक न बिक सके।

यह बात आप ठीक कहते हैं कि जब चारों तरफ मिल ही मिलका वातावरण है, जब हमारे अपने मंत्री भी मिलें ही खोलना चाहते हैं, तब हम क्या करें? हम करते-करते मरेंगे। अगर हमें खादीमें सच्चा विश्वास है, तो हमें अुसे चलाना और मंत्रियोंको बताना है कि हम ठीक कर रहे हैं, और करते जायेंगे। हम हारनेवाले नहीं। तालीमी संघको कांग्रेसने बनाया, पर अुसने अुसमें दिलचस्पी नहीं ली। चरखा-संघको भी कांग्रेसने बनाया था, लेकिन अपनाया नहीं। आज अुन संस्थाओंको कोअी पूछता है? कांग्रेसवालोंके पास जब थोड़ा समय था, कुछ तजरबा था, अुन्होंने रचनात्मक कामकी तरफ कुछ ध्यान दिया। कुछ काम भी किया। अब हाथमें हुकूमत आयी है। अुसे हमने हजम नहीं किया। लेकिन आहिस्ता-आहिस्ता हजम होगी।

राज्य और तालीमी संघका संबंध

जाकिर साहब — बड़ी मुश्किलका सामना है। नअी तालीमका मदरसा चलाना अेक नये निजामको फैलाना है। और सारा अख्तियार मंत्रियोंके हाथमें है जो हमारे साथ पूरे-पूरे अेकराय नहीं हैं।

गांधीजी — अिसमें कोअी शक नहीं। शहरी (नागरिक) कोअी हवामें थोड़े ही बननेवाले हैं!

जाकिर साहब — या तो आप सरकारके साथ तालीमी संघका साथ छुड़वा दीजिये या फिर हमें अपना अकेला रास्ता खोजना होगा।

गांधीजी — मैं कबूल करता हूँ कि पहले मेरी जो ताकत थी, वह आज नहीं है। अिसमें सरकारोंका दोष नहीं। अुनके पास सरकारका ढांचा बना बनाया आ गया है। अुन्हें अुसे चलाना है। मैं भी मंत्री होता, तो शायद अैसा ही करता। जवाहरलालजी वगैराकी मैं बात कर रहा हूँ। तालीमका काम ही समझाना है न? आज यह मेरी प्रार्थना

है कि या तो भगवान मुझे अुठा लें या मैं जो कहता हूँ, अुसमें अितनी ताकत दे कि लोगों और अुनके प्रतिनिधियोंको समझा सकूँ।

नअी तालीममें सब शक्ति भरी है। अगर आप अैसा नहीं मानते तो अुसे फेंक दें। कुछ लोग मुझसे कहते हैं कि अब तुम्हारा काम खतम हो गया। आज तक अहिंसासे काम हुआ, अब तुम्हें भागना है। हम तुम्हारी सुननेवाले नहीं।

जाकिर साहब — लेकिन बापूजी, कांग्रेसको सरकारोंसे कहना तो चाहिये। कांग्रेसने अपने मंत्रियोंसे कहा ही नहीं कि तालीमके बारेमें अुसकी नीति क्या है। मौलाना साहबसे मैं यहाँ आनेसे पहले मिला था। अुन्होंने कहा कि संघ अुनके साथ बातचीत करे। अुन्होंने हमदर्दी दिखाअी। अभी तालीमी संघने तय किया है कि अुनसे मिला जाय।

गांधीजी — अुन्हें पहले ही आप लोगोंको बुलाना चाहिये था। सार्जेन्ट साहब भले काम करें, लेकिन अुन्हें आप लोगोंकी सलाहके नीचे काम करना है। मैं तो कह आया हूँ कि जाकिर हुसैन साहबको बुलाअिये। यह सब समझकर ही काम कीजिये।

जाकिर साहब — हम तो समझते हैं कि थोडी कोशिशसे काम हो सकता है। पर हमने कोशिश ही नहीं की।

गांधीजी — आज कांग्रेसका तंत्र टूट रहा है। सब यह महसूस नहीं करते, पर मैं तो करता हूँ।

मजहबी तालीम

जाकिर साहब — मेरे खयालमें मजहबी तालीमके लिये स्कूलमें आसानी पैदा कर दी जानी चाहिये और वक्त दिया जाना चाहिये। अगर अैसी हालतमें मजहबी तालीम दी जायगी, तो वे लोग सिखा सकेंगे जो अिसे जानते और समझते हैं। लेकिन अिससे ज्यादा जिम्मेदारी अगर सरकार हाथमें लेगी, तो और भी ज्यादा गलतफहमी और झगडा बढनेवाला है। मान लीजिये कि मौलाना साहब पाठ्यक्रम बनायें। लेकिन सब लोग अुसे मानेंगे कब?

गांधीजी — मौलाना साहबसे बात कीजिये। मैं नहीं मानता कि सरकार मजहबी तालीम दे। माना कि कुछ मुसलमान अैसे हैं जो गलत तरीकेसे मजहबी तालीम देना चाहते हैं। लेकिन आप अुन्हें कैसे रोकेंगे? अैसी कोशिश करेंगे, तो बुरा नतीजा निकलनेवाला है। मजहबी तालीम जो अपनी तरफसे मुफ्त देना चाहें दें। नैतिक तालीम, जो सब धर्मोंके मोटे-मोटे सिद्धान्तों पर आधार रखती हो, हम दें।

प्रमाण-पत्र

आर्यनायकम् — अेक और सवाल है। सात सालका कोर्स अभी खतम हुआ है। अुन लडकोंको प्रमाण-पत्र देना है। वह किस दृष्टिसे दिया जाय? और अुनका क्या नाम रखा जाय?

गांधीजी — अेक खास मसविदा हिन्दुस्तानीमें दोनों लिपियोंमें बना दीजिये, जिसे सब समझ सकें। अुसमें यह बताअिये कि यहाँ तक लड़का चला गया है। अगर हम कहें कि हमारा लड़का मैट्रिकसे ज्यादा जानता है, तो हमें बताना चाहिये कि वह कितना ज्यादा जानता है। नाम और काम साथ-साथ जाने चाहिये। नाम बड़ा दे दें और काम अुतना न हो, तो अच्छा नहीं लगेगा।

जाकिर साहब — अगर यह कह दें कि लडकेने पूरी बुनियादी तालीम ली है तो?

गांधीजी — अिसके लिअे अेक शब्द होना चाहिये। जैसे हिन्दी सम्मेलनवालोंने अपनी परीक्षाओंके नाम रखे हैं।

सहशिक्षा

अविनाशिलिंगम् — तालीमी संघकी यह नीति है कि लडके और लड़कियोंकी साथ-साथ पढाअी हो। हम दक्षिणमें दोनोंको साथ-साथ पढानेका रिवाज नहीं डालना चाहते।

गांधीजी — तब आप अैसा भी कह सकते हैं कि आप नअी तालीमका कुछ हिस्सा ही लेंगे। अुसे पूरे रूपमें लेना मद्रासके लिअे कठिन होगा। अगर आप स्कूलोंमें अिकट्ठी तालीम दें और

ट्रेनिंग स्कूलोंमें न दें, तो बच्चे समझेंगे कि कुछ न कुछ दालमें काला है।

अविनाशलिंगम् — अेक अुम्र पर पहुँचनेके बाद, जब लोग अपना मन जान सकते हैं, लडके और लड़कियोंके अिकट्ठे पढनेसे कोअी नुकसान नहीं होता। १५–१६ बरसकी लडकियाँ जिस वक्त हमारे शिक्षण-शिविरोंमें आती हैं, तब अुन्हें अलग ही सिखाना अच्छा है।

जाकिर साहब — हमारी तरफसे ट्रेनिंग स्कूलोंमें अिकट्ठा पढाना कोअी जरूरी नहीं।

गांधीजी — आप (अविनाशलिंगम्) की दलीलका असर मेरे विचारों पर नहीं पडता। मेरे बच्चे अगर बुरे भी हैं, तो भी मैं अुन्हें खतरेमें पडने दूँगा। अेक दिन हमें काम-वृत्तिको छोडना होगा। हमें हिन्दुस्तानके लिअे पश्चिमकी मिसालें नहीं ढूँढनी चाहिये। ट्रेनिंग स्कूलोंमें अगर सिखानेवाले लायक और पवित्र हों, नअी तालीमकी आत्मासे भरे हों, तो कोअी खतरा नहीं। दुर्भाग्यसे कुछ घटनाअें अैसी हो भी जायें, तो कोअी परवाह नहीं। वे तो हर जगह होंगी।

जाकिर साहब — हमें मद्रासका तजरबा नहीं। अगर मद्रासमें हवा ठीक नहीं है, तो अुसके बननेका अिन्तजार कीजिये। तब तक आप अपनी लडकियोंको सेवाग्राम भेज सकते हैं।

बुनियादी तालीमका साहित्य

अविनाशलिंगम् — अेक और दिक्कत है। बुनियादी तालीमका साहित्य नहीं है। अगर अेक जगह भी वह बन जाय, तो अुसे हम अपने प्रान्तकी जरूरतोंके मुताबिक ढाल सकते हैं। तालीमी संघको यह काम करना चाहिये। सस्ते ब्लॉक बनवाये जा सकते हैं। सब तसवीरें तैयार करवाअी जा सकती हैं। वगैरा।

आर्यनायकम् — हमारे पिछले शिक्षण-शिविरोंमें १० आदमी अैसे थे, जो साहित्य तैयार कर सकते हैं। अुनमें से दो मद्रासमें हैं। अुन्हें हम दे दें।

अविनाशलिंगम् — अगर मैं सुझाव दे सकूं, तो कहूंगा कि ये किताबें सुन्दर ढंगसे छपवाओी जानी चाहिये।

गांधीजी — बुनियादी तालीमका मतलब घटिया दरजेका काम नहीं है।

अविनाशलिंगम् — किताबोंकी शकल-सूरत अैसी होनी चाहिये कि बच्चे अुनकी तरफ अपने आप खिंच जायें।

लोकल बोर्डके स्कूल

जाकिर साहब — यू० पी० की रिपोर्ट पढ़ी गअी। सबने अैसा महसूस किया कि बुनियादी स्कूल सरकारी लोकल बोर्डोंके हाथसे लेकर हम खुद चलायें। अेक तरहसे तो यह अच्छा है कि अैसे काम कमेटियां ही करें। पर आप तो जानते हैं कि वहां किस तरह काम चलता है। अभी भी प्रोग्राम तो सरकार ही बनाती है। लेकिन अुसे अमलमें लानेवाले लोकल बोर्ड होते हैं। वे पैसे खा जाते हैं। अुस्तादोंको तनखाहें नहीं मिलती हैं। अिसलिअे स्कूल सरकार ही चलाये तो अच्छा।

गांधीजी — मुझे आज कुछ पता नहीं। अगर देख सकूं कि लोकल बोर्डोंमें कैसे काम चलता है, तो कुछ कह सकूं। अभी नहीं कहूंगा। अितना कह सकता हूं कि अगर सरकार समझती है कि वह अिन कामको कर सकती है और बोर्ड अुसे अपने स्कूल मरजीसे दे देते हैं, तो वह ले ले।

जाकिर साहब — फिर अुत्तर-बुनियादी तालीमकी रिपोर्ट पढ़ी गअी। अेक महीनेके बाद ५ घंटे काम करके विद्यार्थी ८ आने रोज कमा सकते हैं। और फिर अभी तो काम शुरू ही हुआ है। अिसका ठीक अन्दाजा तो कुछ देरके बाद ही लगाया जा सकता है। तीसरी बात स्वावलम्बनकी हुअी। वह आशाजी सुनायेंगी।

स्वावलम्बन

गांधीजी — आठ बरस बुनियादी तालीमको हो गये। आज भी [illegible] कि अुसमें से निकले हुअे लड़के अपने पांव पर खड़े हो सकेंगे

या नहीं। कमाअी अलग-अलग दस्तकारियोंमें अलग-अलग होती है। बढअीगिरीमें विद्यार्थी दो-तीन रुपये रोज कमा सकता है। कताअीके धंधेमें बहुत कम मिलता है। आजके जमानेमें मिलवाला काम हाथसे करनेमें आमदनी मिलके मुकाबले बहुत थोडी होती है। चरखा-संघके नियमसे तो अुन्हें ६ आने या ८ आने रोज मिल जायेंगे। लेकिन अगर प्रान्त भरमें बुनियादी शालायें चलें, तो चरखा-संघ सारा सूत नहीं खरीद सकेगा। आज भी बहुतसा सूत अैसा है, जो चरखा-संघ नहीं खरीद सकता। और बाजार भावसे बेचने पर तो बहुत कम दाम मिलेंगे। चाहिये तो यह कि स्कूलोंका सारा सूत सरकार खरीद ले। अिस हालतमें कौनसा अुद्योग अपनाया जाय?

गांधीजी — आज हम पैसेका हिसाब करते हैं। वह हमें भूल जाना चाहिये। खादी हमारा मध्य-बिन्दु है, क्योंकि हम सबको कपडेकी जरूरत पडती है और मेरे सामने तो हिन्दुस्तानके ७ लाख गांवोंका प्रश्न है। आज हमें बुनकरोंको लालच देकर, ज्यादा पैसा देकर सूत बुनवाना पडता है। यह मेरी भूल थी कि जितना जोर मैंने अिस बात पर दिया कि हरअेक आदमी कातना सीखे, अुतना अिस बात पर नहीं दिया कि हरअेक बुनना भी सीखे। लेकिन हां, अिसमें वक्त सिर्फ बचतके मुताबिक ही खर्च होना चाहिये। अगर अिसमें सारा समय चला जाय, तो फिर मुझे सोचना होगा। नअी तालीमका शिक्षक भी कारीगर होगा, सिर्फ तनख्वाह लेनेवाला नहीं। अुसकी बीवी और बच्चोंको भी अुसमें जाना होगा। तब सच्चा सहयोग पैदा होगा। अगर हिन्दुस्तानके गांव-गांवमें नअी तालीम चल सके तो बडा काम हो।

नअी तालीममें खेतीका स्थान

कुछ लोग पूछते हैं कि क्या खेतीको नअी तालीमका मध्य-बिन्दु बना सकते हैं। खेतीमें हाथकी कला नहीं सीखी जा सकती और नअी तालीम कोअी अेक पेशा सिखानेके लिअे नहीं है। वह हाथको तालीम देकर मनुष्य बनानेवाली है। अुसका मानव विद्यार्थियोंको

जीवनका रस दिलाना है। नअी तालीम अपूर्ण अिन्सानोंको पूर्ण बनाती है।

अिसलिअे मैं खेतीसे शुरू नहीं करता। पर आखिरकी तालीममें खेती आ ही जाती है। अिसके सिवाय काम नहीं चल सकता। फल और तरकारी अुगानेमें तो दिमागको भी काफी तालीम मिलती है। और फिर लडके-लडकियोंके लिअे गेहूँ भी पैदा करना है। अुन्हें दूध देना है। यह काम पुराने ढाँचेमें नहीं हो सकता। नअी तालीमका क्षेत्र बहुत बडा है। अुसे तो सारी जिन्दगीका फैसला करना है। नअी तालीमका शिक्षक आला दरजेका कारीगर होगा। देहातके सब लडके कुदरती तौर पर देहातमें ही रहेंगे और शिक्षकमें मिलकर अपनी जरूरतोंका सब सामान पैदा करेंगे। अिस तरह सबको मुफ्त शिक्षा मिलेगी।

आज हिन्दुस्तानकी हालत अैसी है कि देहातमें जो फल और तरकारियाँ पैदा होती हैं, अुन्हें देहाती नहीं खाते। त्रावणकोरके देहातमें नारियल पैदा होते हैं, पर वहाँके लोग नारियल नहीं खा सकते। अेक जगह पर अिकट्ठा होकर वे शहरोंमें चले जाते हैं। नअी तालीमके मदरसे होंगे, तो पहले वहाँके लोग नारियल खायेंगे। फल पहले देहाती खायेंगे, फिर दूसरे। आज हम अैसी फसलें बोते हैं, जो ज्यादासे ज्यादा पैसे लावें, जैसे, तम्बाकू, कपास और नील वगैरा। नअी तालीमके सीखे हुअे लोग अैसी फसलें पैदा करेंगे, जो जीवनके लिअे जरूरी हों।

कांग्रेसकी रचनात्मक समिति

जाकिर साहब — अखिल भारत कांग्रेसकी तरफसे अेक रचनात्मक कार्य-समिति बनी है, जिसके मेम्बर आर्यनायकम्‌जी, जाजूजी, कुमारप्पा, शंकरराव देव, जुगलकिशोर, निर्मलबाबू, जयरामदास दौलतराम और सुचेता कृपलानी हैं। अिसकी अेक बैठक अलाहाबादमें हुअी। वहाँ यह तय हुआ कि तालीमी संघकी तरफसे हर सूबेके अेक संगठित अिलाकेमें अेक ट्रेनिंग स्कूल और अेक बुनियादी स्कूल चले।

जाजूजी — अेक कार्यक्रम भी बनाया गया, जिसके मुताबिक यह तय हुआ कि प्रान्तीय कांग्रेस कमेटीके मारफत काम हो। चन्दा जमा करके वही पैसा भी दे। अिस तरह देशभरमें अेक लाख वस्त्र-स्वावलम्बी बनानेकी योजना है।

गांधीजी — आज कांग्रेसका तन्त्र बिगड़ रहा है। जहाँ कांग्रेसके हाथमें सत्ता है, वहाँ तो प्रान्तीय कांग्रेस समिति और सरकार अेक होनी चाहिये। वे अेक-दूसरीको शक्ति दें। आज सब अपनी-अपनी चलाते हैं। किसीको अेक-दूसरीकी परवाह नहीं। अुन्हें अेकदिल और अेकजान होना चाहिये।

सम्पूर्णानन्दजी — यह चीज चल नहीं सकती। कांग्रेसी मन्त्रि-मंडल काम करना चाहते हैं। आप अुनसे काम लें, लेकिन कांग्रेस कमेटियोंके मारफत आप यह काम नहीं ले सकेंगे। कांग्रेस कमेटी आज सरकारको हुक्म देना चाहती है। यह नहीं बन सकता।

गांधीजी — अैसा कह सकते हैं कि सरकारको अपनी मर्यादा बनानी चाहिये। आज हम लोगोंसे चन्दा अिकट्ठा नहीं कर सकते। वे कहेंगे कि हमने सरकारको दे दिया। अब आपको क्यों दें? हमें मन्त्रियोंसे कहना चाहिये कि हमें अिस रचनात्मक कामके लिअे अितने पैसेकी जरूरत है। वे न दें तो हम अुनका विरोध करें और लोगोंको सच्ची हालत बता दें। लेकिन जो काम सरकार कर सकती है, अुसके लिअे हम लोगोंसे पैसा नहीं माँग सकते।

अविनाशलिंगम् — हरिजनोंके लिअे तो हम पैसा अिकट्ठा करते हैं।

गांधीजी — वह दूसरी बात है। वह प्रायश्चित्त है।

अविनाशलिंगम् — सरकारके पास अितने पैसे नहीं हैं कि यह सब काम कर सके।

गांधीजी — हाँ, अैसा कोअी काम, जो हुकूमत नहीं कर सकती, माँग करें। अुसके लिअे चन्दा भी माँग सकते हैं।

हरिजनसेवक, ९-११-'४७

सूची